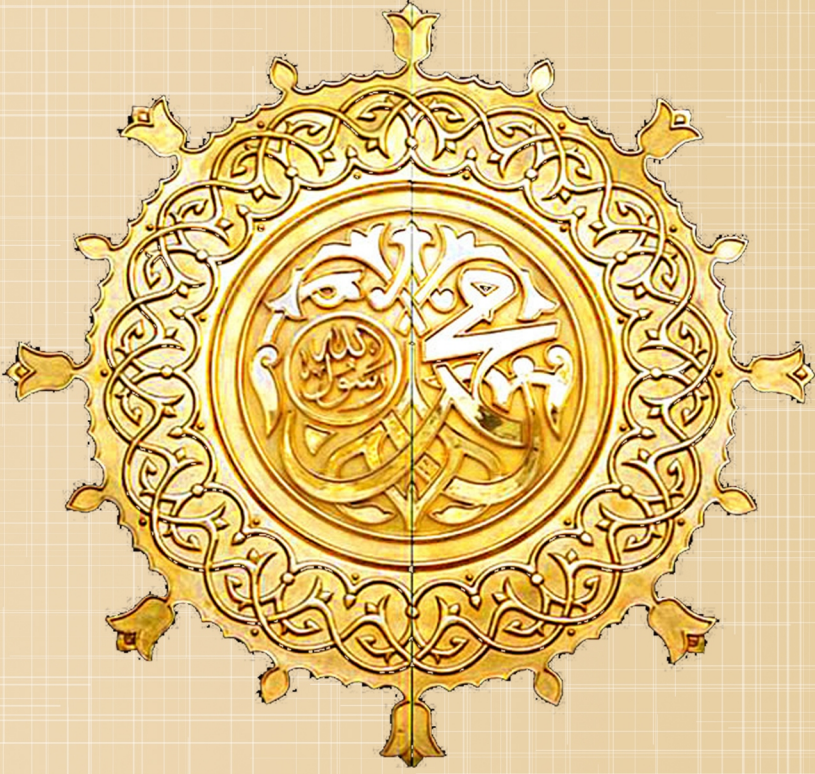


وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ

(सूरह "अल नहल": 44)



हदीस के संदेश

www.najeebqasmi.com

डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी संभली
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi Sambhali

وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ
(سورة النحل 44)

हदीस के सन्देश

डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी संभली
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi Sambhali

www.najeebqasmi.com

© All rights reserved by the author.
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं।

पुस्तक का नाम: हदीस के सन्देश

पुस्तक के लेखक: डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी संभली

पहला हिंदी संस्करण: मार्च २०१८

संख्या: ५०००

Published by:
Discover Publishing Ltd, Dublin, Ireland
ISBN: 9780995788507

Printed at Noman Printing Press, Lucknow, India
First Edition (5000 copies)

एक अहले खैर की मदद से पुस्तक का पहला संस्करण (५००० संख्या) फ्री बाँटने के लिए प्रकाशित किया जा रहा है। अल्लाह उनके इस खैर के काम को कुबूल फरमाकर उनके लिए सदकए जरियाह बनाये। आमीन

<http://www.najeebqasmi.com/>
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)
[Whatsapp: 00966508237446](#)

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, भारत (244302)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	7
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी - मोहतमिम (कुलपति) दारुल उलूम देवबंद	10
3	मुखबंध: हज़रत मौलाना मोहम्मद ज़करिय्या संभली - शैख-उल-हदीस नदवातुल उलैमा, लखनऊ	12
4	मुखबंध: प्रोफेसर डाक्टर शफीक़ अहमद खां नदवी - पूर्व अध्यक्ष अरबी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली	14
5	प्रारंभिक अध्याय	17
6	हदीस की तारीफ (परिभाषा)	18
7	हुज्जीयते हदीस (हदीस का शरई दलील होना) कुरान से	20
8	हुज्जीयते हदीस (हदीस का शरई दलील होना) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों से	26
9	हुज्जीयते हदीस (हदीस का दलील होना) इजमा से	27
10	कुरान करीम में अहकाम की तफ्सील ज़िक्र नहीं है	28
11	हदीस की किस्में (प्रकार)	33
12	ज़ईफ़ हदीस भी सही हदीस की एक किस्म है	35
13	हदीस निम्नलिखित उद्देश्यों में से किसी एक उद्देश्य के लिए होती है	41
14	हदीसों की लिखाई	42
15	हदीसों विश्वसनीय सूत्रों से ही उम्मत को पहुंची हैं जिनके बग़ैर कुरआन का समझना संभव नहीं	44

क्र.	विषय	पेज नं
16	हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कीमती फरमान (बातें)	51
17	आमाल का दारोमदार (निर्भरता) नियत पर है	62
18	दिखावा और शोहरत आमाल की बरबादी का कारण हैं	68
19	सबसे ज़्यादा जन्नत में ले जाने वाला अमल तक्रवा (परहेजगारी) है	71
20	तक्रवा की अहमियत (महत्त्व)	72
21	तक्रवा के विभिन्न फायदे (लाभ)	74
22	तक्रवा और इस्लाम के बुनियादी स्तंभ के बीच सम्बन्ध	75
23	हम मुत्तकी कैसे बनें?	77
24	अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा करना) नबीयों का तरीका	79
25	अल्लाह अपने बन्दे की तौबा से बहुत खुश होते हैं	88
26	कोई व्यक्ति कब तक तौबा कर सकता है?	92
27	सच्चे दिल से तौबा करने पर बड़े से बड़े गुनाहों की भी माफ़ी	92
28	सब्र की तौफ़ीक सबसे बेहतर उपहार	97
29	सब्र की कई किस्में (प्रकार) हैं	98
30	हमें कारोबारी, समाजी और घरेलू ज़िन्दगी में हमेशा सच बोलना चाहिए	106
31	सच बोलने का अच्छा बदला	110

क्र.	विषय	पेज नं
32	इताअत में मध्य मार्ग	113
33	इस्लामी शिक्षाओं का पालन करके ही रेप जैसे घिनौने अपराध से छुटकारा संभव है	121
34	ज़िना (व्यभिचार) बहुत बड़ा गुनाह है	123
35	ज़िना (व्यभिचार) और अश्लीलता के कारण	124
36	ज़िनाकारी (व्यभिचार) से बचने की अहमियत (महत्व)	127
37	ज़ानी (व्यभिचार करने वाले) की सज़ा	128
38	ऐ इंसान! जुल्म (अत्यचार) से रुक जा	131
39	हुकूक-ए-इंसान कुरान और हदीस की रोशनी में	141
40	आम लोगों के हुकूक (अधिकार)	141
41	माता पिता के हुकूक (अधिकार)	143
42	औलाद के हुकूक (अधिकार)	144
43	पति पत्नी के हुकूक (अधिकार)	145
44	पड़ोसियों के हुकूक (अधिकार)	146
45	रिश्तेदारों के हुकूक (अधिकार)	147
46	खाने, पीने, सोने और पहनने के अहकाम और मसाइल	150
47	सोने के आदाब (शिष्टाचार)	151
48	खाने के आदाब (शिष्टाचार)	153
49	लिबास (वस्त्र) पहनने के आदाब (शिष्टाचार)	155
50	दूसरों के साथ नरमी (दया), अच्छे अखलाक और सलाम में पहल की ज़रूरत है	160
51	आदर और नम्रता के साथ कार्य करें	161

क्र.	विषय	पेज नं
52	दूसरों के साथ नरमी का बर्ताव करें	161
53	तकब्बुर (घमंड) और जलन (इर्ष्या) से बचें और किसी व्यक्ति को हकीर (घटिया) न समझें	162
54	सबके साथ अच्छे अखलाक से पैश आएँ	163
55	सलाम में पहल करें	164
56	सलाम करने के कुछ अहकाम (आदेश)	166
57	अल्लाह तआला का करीमाना उसूल	169
58	एक बुराई पर एक, लेकिन अच्छाई पर सात सौ गुना अज़्र (इनाम)	169
59	इन्सान के आमाल (काम) की किस्में (प्रकार)	170
60	नेक कामों पर अज़्र और सवाब ज्यादा क्यों?	171
61	हमारी छोटी और कीमती ज़िन्दगी	172
62	हमारी ज़िन्दगी का मुख्य उद्देश्य	173
63	कुरान की कुछ आयात, जिनमें नेकी पर अज़्र (इनाम) और सवाब की कसरत ज़िक्र है	174
64	कुछ नेक काम, जिन पर बड़े अज़्र और सवाब का वादा है	175
65	तीन लोगों का गुफा में बंद होने पर नेक अमल का वसीला बनाकर अल्लाह से दुआ करना	178
66	वसीला	180
67	वसीले की किस्में (प्रकार)	180

प्रस्तावना

मोहम्मद नजीब कासमी संभली

कुरान-ए-करीम अल्लाह तआला की किताब है, जो अल्लाह तआला ने कयामत तक आने वाले सभी जिन्नात और इंसानों के मार्गदर्शन के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की पीढ़ी (खानदान) से ५७१ में मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए अंतिम नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही के ज़रिए उतारी। रमज़ान के महीने की एक बरकत वाली रात “लायलातुलकद्र” में अल्लाह तआला ने “लौह-ए-महफूज़” (अति सुरक्षित स्थान) से आसमान-ए-दुनिया पर कुरान-ए-करीम उतारा और इसके बाद ज़रूरत के अनुसार थोड़ा थोड़ा हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरता रहा, और ६११ ई. से ६३४ ई. तक लगभग २३ वर्ष में कुरान-ए-करीम पूरा उतरा। अल्लाह की तरफ़ से नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई कि आप लोगों के सामने अपनी कीमती बातों और अमल से कुरान-ए-करीम के आदेश और मसाइल स्पष्ट तौर पर बयान करें। इसलिए नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के आदेश के अनुसार सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को कुरान-ए-करीम के अर्थ की शिक्षा ही नहीं देते थे, बल्कि उन्हें इसके शब्दों को भी याद कराते थे, तथा कुरान-ए-करीम की सुरक्षा के लिए कुरान-ए-करीम को लिखवाने की भी विशेष व्यवस्था करते थे। इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वही उतरने के बाद वही के लेखकों को लिखा दिया करते थे।

यह मुकद्दस किताब हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने से लेकर रहती दुनिया तक मार्गदर्शन बनी रहेगी, क्योंकि अल्लाह तआला ने इस किताब की सुरक्षा अपने ज़िम्मे लेकर इसको संक्षिप्त और संदर्भ

बनाया है कि इमानियात (यकीन), इबादात, लेनदेन, समाजिक, आर्थिक और अर्थशास्त्र के नियम कुरान-ए-करीम में उल्लेख हैं। हाँ! इनका विवरण नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कीमती बातों और कार्यों यानी हदीसों में मौजूद हैं। मगर बहुत अफ़सोस और चिंता की बात है कि हमारा संबंध इस किताब से रोज़ाना कम होता जा रहा है। यह किताब हमारी मस्जिदों और घरों में बंद होकर रह गई है, न तिलावत (पढ़ना) है, न सोच विचार है और न ही इसके अहकाम और मसाइल पर अमल। आज का मुस्लमान दुनिया की भाग दोड़ में इतना खो गया है कि कुरान-ए-करीम के अहकाम और मसाइल को समझना तो अलग इसकी तिलावत (पढ़ने) का भी समय नहीं है।

कुरान-ए-करीम की शिक्षाओं को आम करने के लिए नई टेक्नोलोजी से लाभ उठाकर हर जुमा को फ्री ऑनलाइन दर्स-ए-कुरान और दर्स-ए-हदीस की व्यवस्था की गयी, जिसमें २० मिनट ऑनलाइन पाठ के बाद १० मिनट का समय प्रश्न और उत्तर के लिए भी दिया गया। ऑनलाइन क्लासों की वीडियो को यूट्यूब पर अपलोड करके उनको सोशल मीडिया पर शेयर भी किया गया। इस तरह अल्लाह की कृपा और उसकी तौफ़ीक़ से विभिन्न देशों से हज़ारों लोगों ने इन पाठकों से लाभ उठाया, और यह सिलसिला बराबर जारी है। **दर्स-ए-कुरान के पहले चरण में कुरान-ए-करीम की उन अंतिम सूरतों (सूरह “अल अलक” से सूरह “अल नास” तक) की संक्षिप्त तफ़्सीर बयान की गई जिनको आम तौर पर मुस्लमान रोज़ाना पाँच समय की नमाज़ों में पढ़ते हैं।**

सामान्य लाभ के लिए दुरुस-ए-कुरान और दुरुस-ए-हदीस को तीन भाषाओं (उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी) में तौफ़ीक़-ए-इलाही और एक अहल-ए-ख़ैर की सहायता से आम लोगों विशेषकर स्कूल में पढ़ने वाले छात्र और छात्राओं

को फ्री बाँटने के लिए प्रकाशित कर रहे हैं, ताकि दीनी जानकारी देने के साथ बच्चों और बच्चियों की सही तरबियत भी हो सके। सभी सबक हमारी वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) और हमारी मोबाइल ऐप ([Deen-e-Islam](#)) पर भी अपलोड कर दिए गए हैं। किताबों की भाषाओं के विशेषज्ञों से संपादन भी कराया गया। हिंदी के अनुवाद में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि अनुवाद समान्य भाषा में हो, ताकि हर आम और खास के लिए फायदा उठाना आसान हो। अंग्रेजी किताबों को वैश्विक स्तर पर पेश करने का प्रयास किया गया है ताकि दुनिया के पूर्व और पश्चिम में इस से लाभ उठाया जा सके।

अंत में अल्लाह से दूआ करता हूँ कि इन सेवाओं को स्वीकृति और लोकप्रियता से नवाज़ कर मुझे और इन छह किताबों के प्रकाशन में जिस व्यक्ति ने जिस तरह का भी सहयोग दिया सभी को बड़ा अज़्र (बदला) अता फ़रमाए। तथा हज़रत मौलाना मुफ़्ती **अबुल कासिम नौमानी** साहब, हज़रत मौलाना **मौहम्मद ज़करिय्या संभली** साहब और प्रोफ़ेसर डाक्टर **शफ़ीक़ अहमद ख़ान नदवी** साहब का शुक्रगुज़ार (आभारी) हूँ कि उन्होंने अपनी व्यस्तगी के बावजूद मेरी इन किताबों को पढ़कर मुखबंद लिखा। शिक्षा विशेषज्ञ और मशहूर व्यापारी जनाब **डॉक्टर नदीम तरीन** साहब और जनाब डॉक्टर **शफ़ाअतुल्लाह ख़ान** साहब की दुनिया और आखिरत की कामयाबी के लिए विशेषकर दूआ करता हूँ जिनके योगदान से तीन भाषाओं में छह किताबों के प्रकाशन का या प्रोजेक्ट (परियोजना) पूरा हुआ है।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाद)

३० जनवरी २०१८

मुखबंध

हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी साहब मोहतमिम (कुलपति) दारुल उलूम देवबंद

जनाब मौलाना मुहम्मद नजीब क़ासमी संभली का संबंध पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध शहर “संभल” से है, जहाँ कई उलैमा, अकाबिर, मशाइख (बड़े लोग), मुस्लिहीन (इस्लाह करने वाले यानि सुधारक) और लेखक पैदा हुए।

मौलाना नजीब दारुल उलूम देवबंद के फ़ाज़िल (विद्वान) और इल्मी रुचि रखने वाले आलिम-ए-दीन हैं। मौलाना सऊदी अरब की राजधानी “रियाज़” शहर में रहते हैं। अल्लाह तआला ने मौलाना को इल्मी और लेखनीय रुचि के साथ उम्मत के हक में सहानुभूति का दिल भी अता फ़रमाया है। मौलाना के इस्लाही (सुधारक) और दावती लेख सऊदी अरब, भारत और दूसरे अन्य देशों के विभिन्न अखबारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना क़ासमी ने नई टेक्नोलोजी को दीनी शिक्षा और तबलीग़ के लिए अच्छे ज़रिए के तौर पर उपयोग करने का उदाहरण स्थापित किया। दीन-ए-इस्लाम (**Deen-e-Islam**) के नाम से मौलाना ने विभिन्न दीनी विषयों पर आधारित उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी में एक मोबाइल ऐप तैयार की है जो बहुत लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है। तथा हज़ के बारे में मार्गदर्शन (गाइड) के लिए उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी में एक स्थायी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) इस विषय पर सेवा में लगी

हुई है। इसी के साथ मौलाना ने ऑनलाइन दुरुस-ए-कुरान (कुरान के पाठ) और दुरुस-ए-हदीस (हदीस के पाठ) की श्रृंखला शुरू किया हुआ है, जिससे विभिन्न देशों के लोग फ़ायदा प्राप्त कर रहे हैं, तथा सोशल मीडिया के ज़रिए यह दुरुस (पाठ) लोगों के पास बराबर पहुँचते रहते हैं।

यह बहुत खुशी की बात है कि इन दोनों दुरुस (पाठकों) का पहला मजमूआ (संग्रह) उर्दू, हिंदी और अंग्रेज़ी तीनों भाषाओं में बड़ी संख्या में प्रकाशित होने वाला है, मैंने दोनों दुरुस (पाठकों) पर नज़र डाली और इनको उम्मत के लिए बहुत ही फ़ायदेमंद पाया। भाषा और अन्दाज़-ए-बयान आसान और आकर्षक है। अल्लाह तआला इस सिलसिले (श्रृंखला) को बाक़ी रखने और अधिक वुसअत (विस्तार) की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उम्मत को फ़ायदा हासिल करने का मौक़ा अता फ़रमाए। आमीन

अबुल कासिम नौमानी

मोहतमिम दारुल उलूम देवबंद

25/04/1439 ही.

मुखबंध

हज़रत मौलाना मोहम्मद ज़करिय्या संभली साहब शैख-उल-हदीस नदवातुल उलैमा, लखनऊ

अज़ीज़-ए-मोहतरम मौलाना मौहम्मद नजीब कासमी संभली का संबंध एक इल्मी और दीनी खानदान से है, इनके दादा हज़रत मौलाना मौहम्मद इस्माईल संभली साहब (र.ह.) की गिनती अपने ज़माने के उन बड़े उलैमा में होती थी जिन्होंने मदरसों में हदीस की शिक्षा देने के साथ साथ मदरसों के बाहर की विभिन्न प्रकार की दीनी सेवाओं में हर तरह की शिरकत की। इनके नाना मौलाना मुफ़्ती मुशर्रफ़ हुसैन संभली साहब (र.ह.) हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी (र.ह.) के शागिर्द (विधार्थी) थे, और लंबे समय तक कई मदरसों में “सिहाह-ए-सित्ता” (हदीस की छह मशहूर किताबों) के उस्ताद (शिक्षक) रहे थे। खुद मौलाना मौहम्मद नजीब साहब भी दारुल उलूम देवबंद के फ़ाज़िल (विद्वान) हैं, और अल्लाह सुबहानहु व तआला ने इल्म के साथ साथ सलामती-ए-तबअ भी अता फरमाई। वह काफ़ी समय से इल्मी और दीनी विषयों पर लिखते रहते हैं, और आजकल की मीडिया और संचार में इनके लेख दुनिया के कोने कोने तक पहुँच रहे हैं।

अब अल्लाह तआला के फ़ज़ल और करम (दया) से इन्होंने बुनियादी (प्राथमिक) इस्लाही लेख के बारे में हदीस-ए-नबवी के दुरुस का यह मजमूआ (संग्रह) लिखा है, इन दुरुस से पहले हदीस-ए-नबवी के बारे में जो महत्वपूर्ण और ज़रूरी बातें लिखी गई हैं वह भी पढ़ने वालों के लिए बहुत फ़ायदेमंद (लाभकारी) हैं।

मौलाना का इल्म (ज्ञान) गहरा और भाषा (ज़बान) सरल (सादा) और रवां है, इसलिए उम्मीद है कि यह दुरुस बहुत ही फ़ायदेमंद और उपयोगी (लाभदायक) होंगे। अल्लाह तआला इस मजमूआ (संग्रह) से लोगों को फ़ायदा पहुँचाए और खुद मौलाना के लिए आखिरत का खज़ाना बनाए। आमीन।

मौहम्मद ज़करिय्या संभली, लखनऊ

7 जुमादल अव्वल 1439 हि. 25 जनवरी 2018 ई.

मुखबंध

प्रोफ़ेसर डाक्टर शफ़ीक़ अहमद ख़ान नदवी साहब

पूर्व अध्यक्ष अरबी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली

डाक्टर मौहम्मद नजीब कासमी की एक दूसरी पुस्तक “हदीस के सन्देश” है। यह किताब हदीस-ए-नबवी शरीफ़ के विषय पर एक लाभदायक परिचयात्मक परिचय के साथ १५ पाठ पर आधारित है। रसूले अकरम सल्लल्लह अलैहि वसल्लम के इरशादात (शब्दों) से लिए हुए और चुने हुए कीमती शब्द (जवामिउल कलिम) और (अअमाल का दारोमदार ‘निर्भर’ नियत पर है) पर उपयोगी बातचीत करने के बाद लेखक ने तक्रवा, अल्लाह पर भरोसा, सच्चाई, इताअत में मध्य मार्ग, नाजायज़ (अवैध) यौन संबंध से बचना, जुल्म से बचना, इंसानों के हुक्क (अधिकार), माता पिता के हुक्क, बच्चों के हुक्क, पति पत्नी के हुक्क, खाने पीने के आदाब, वस्त्र पहनने के अहकाम (आदेश), दूसरों के साथ नरमी (दया) से बर्ताव, सलाम में पहल करने की फ़ज़ीलत, अल्लाह तआला की मेहरबानी और नेक कार्यों के ज़रिए से मांगी गई दुआ की स्वीकृति (कुबूलियत) जैसे विषयों पर फ़ायदेमंद, लाभकारी, संक्षिप्त और उपयोगी बातचीत की है। हदीस का शब्द उर्दू ज़बान (भाषा) में केवल हदीस-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए आम तौर पर इस्तेमाल हुआ है, जबकि अरबी में इसका अर्थ बातचीत (Talk) या नए (Modern) के भी हैं। शरीयत के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किए हुए क़ौल (बात), कार्य, तक्रीर और सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से रिवायत की होई रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की खूबियों को “हदीस” कहा जाता है। “तकरीर” से मुराद वह कार्य होता है जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने देखा, आप खामोश रहे और मना नहीं फ़रमाया।

हदीसों वास्तव में कुरानी आयात में आए हुए अहकाम की स्पष्टीकरण और अमली ततबीकात (व्यावहारिक कार्यान्वयन) होती हैं, जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज की अदाएगी का हुक्म (आदेश) कुरान में है, लेकिन उनकी अदाएगी के तरीके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत ही में मिलेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: “नमाज़ ऐसे पढ़ो जैसे मैं पढ़ता हूँ। हज वगैरह के सिलसिले में भी इस तरह की हदीसों आई हैं। कुरान-ए-करीम ने समर्थन भी किया है: “जिसने रसूल का पालन किया उसने अल्लाह ही का पालन किया”। (सूरह: अन्निसा)

दूसरी जगह फ़रमान-ए-इलाही है: “अल्लाह के रसूल अपनी तरफ़ से मनमानी बात नहीं करते, वह जो कुछ भी कहते हैं, वही ही होती है।

(सूरह: नजम)

इरशाद-ए-रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है: “अल्लाह उसको खुश रखे जिसने मुझसे कोई हदीस सुनी और अच्छी तरह महफूज़ की, फिर उसे दूसरों तक पहुँचाई।

अब सूरत-ए-हाल (स्थिति) यह है कि हदीस का फ़न (कला, कौशल) एक मुनज्ज़म और संगठित फ़न (कला) है। जरह (बहस और मुबाहसा) और तअदील (संशोधन), मअरिफ़ातुल असनाद और असमाउर्रिजाल (सनदों और लोगों के नाम की जानकारी) की छानबीन और तहकीक़ पर नई टेक्नोलोजी के संसाधनों से सजा हुआ कीमती

(बहुमूल्य) खज़ाना दुनिया भर के पुस्तकालयों में मौजूद और इन्टरनेट पर आसानी से उपलब्ध हैं।

यह पुस्तक “हदीस के सन्देश” डाक्टर मौहम्मद नजीब कासमी के विशेष ज्ञान पर आधारित है। इसके अलावा “कुरान के उपदेश” भी तैयार कर चुके हैं। मौलाना २२ वर्ष से हमसे बहुत करीब हैं, १९९५ ई. से जब वह “बी.ए.” (ऑनर्स) के विद्यार्थी के हैसियत से जामिया मिल्लिया इस्लामिया आए थे। बी.ए. के साथ साथ उन्होंने “डिप्लोमा इन मॉडर्न अरबिक” और “एडवांस्ड डिप्लोमा इन अरबिक इंग्लिश ट्रांसलेशन” की सनद प्राप्त कीं। फिर दिल्ली यूनिवर्सिटी से “एम ए” की डिग्री हासिल करके जामिया में “पी एच डी” कोर्स में दाखिल हुए, और “الْجَوَابُ الْأَدْبِيَّةُ وَالْبَلَاغِيَّةُ وَالْجَمَالِيَّةُ فِي الْحَدِيثِ النَّبَوِيِّ مِنَ الصَّحِيحَيْنِ الْبُخَارِيِّ وَمُسْلِمَ” के विषय पर मेरे अंतर्गत में काम पूरा करके डाक्टरेट हासिल की। अब वह माशा अल्लाह वर्षों से सऊदी अरब के इल्मी और दीनी स्रोतों से सीधे फ़ायदा हासिल करते हुए अपने इख़्तिसास (विशेषज्ञान) के स्वाद की भरपूर सिंचाई कर रहे हैं, और अरबी, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं में लगातार लिखते हैं।

उम्मीद की जाती है कि अन्य जिम्मेदारियों को पूरा करने के साथ साथ इनके लिखने का सिलसिला जारी रहेगा, आम और ख़ास लोगों की मानसिक जागरूकता, इल्मी और दीनी तरबियत का ज़रिया बनकर सद्का-ए-जारिया (समाज सेवा) के सौभाग्य (शर्फ़) और हमेशा बाक़ी रहने की निअमत (दान) से इन्हें तरक्की देगा।

शफ़ीक़ अहमद ख़ान नदवी, पूर्व अध्यक्ष अरबी विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया (नई दिल्ली)

8 जुमादल अक्वल 1439 हि. 26 जनवरी 2018 ई.

प्रारंभिक अध्यायः

- हदीस की तारीफ (परिभाषा)
- हदीस का शरई दलील (तर्क) होना
- हदीस की किस्में (प्रकार)
- ज़ईफ हदीस भी सही हदीस की एक किस्म है
- हदीसों की किताबत (लिखाई)
- हदीसें विश्वासनीय ज़राए से ही उम्मत को पहुंची हैं, जिनके बग़ैर कुरआन समझना मुमकिन नहीं
- हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कीमती फरमान (बातें)

हदीस की तारीफ (परिभाषा):

उस कलाम को हदीस कहा जाता है जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात या अमल (कार्य) या किसी सहाबी के अमल पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुकूत (खामोशी) या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफात (विशेषता) में से किसी सिफत (विशेषता) का ज़िक्र किया गया हो।

हदीस के दो अहम हिस्से होते हैं:

(सनद) जिन वास्तों से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात या अमल (कार्य) या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई सिफत (विशेषता) उम्मत तक पहुंची हो।

(मतन) वह कलाम जिसमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात या अमल (कार्य) या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई सिफत (विशेषता) ज़िक्र की गयी हो।

उदहारण: “फलां आदमी ने फलां आदमी से और उन्होंने हज़रत उमर से रिवायत किया कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया” ये हदीस की सनद है।

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये फरमान कि “आमाल (कामों) का निर्भर नियत पर है” ये हदीस का मतन है।

हुज्जियत का मतलब: हुज्जीयत का मतलब इस्तिदलाल (किसी हुकुम का साबित करना) करने के हैं, यानी कुरान की तरह हदीस से भी अक्काएद, अहकाम और फज़ाइले आमाल साबित होते हैं, लेकिन

इसका दर्जा कुरान करीम के बाद है, जिस तरह ईमान के मामले में अल्लाह और उसके रसूल के बीच फ़र्क़ नहीं किया जा सकता है कि एक को माना जाए और दूसरे को न माना जाए, ठीक इसी तरह अल्लाह के कलाम और कलामे रसूल के बीच भेदभाव की कोई जगह नहीं है कि एक को वाजिबुल इताअत (वह आदेश जिसका पालन करना ज़रूरी हो) माना जाए और दूसरे को न माना जाए, क्योंकि इन दोनों में से किसी एक के इंकार पर दूसरे का इंकार खुद बखुद लाज़िम आएगा। खुदाई गैरत गवारा नहीं करती कि उसके कलाम को तसलीम करने का दावा किया जाए मगर उसके नबी के कलाम को तसलीम न किया जाए। अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में साफ साफ बयान फरमा दिया “**पस ऐ नबी यह लोग आपके कलाम को नहीं ठुकराते बल्कि यह ज़ालिम अल्लाह की आयतों के मुंकिर (ना मानने वाले) हैं**”। (सूरह इनाम 33) गरज़ ये कि कुरान करीम पर ईमान और उसके अनुसार अमल करने की तरह हदीसों पर ईमान लाना और उनके अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारना ईमान की तकमील (पूर्यता) के लिए ज़रूरी है, क्योंकि अल्लाह तआला ने आपको यह पद दिया है कि आपकी ज़बाने मुबारक से जिस चीज़ की हिल्लत (हलाल) का एलान हो गया वह हलाल है और जिसको आप सल्लल्लह अलैहि वसल्लम ने हराम फरमा दिया वह हराम है। और अल्लाह तआला ने स्पष्ट तौर पर अपने पाक कलाम में बयान फरमा दिया कि कुरान करीम के पहले मुफ़स्सीर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनकी इताअत क़यामत तक आने वाले हर इंसान के लिए लाज़िम और ज़रूरी है, और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम की बात मानना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

अक़वाल (कही गयी बातें) और अफ़आल (किय गए काम) के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारना ही तो है और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल और अफ़आल हमें हदीस में ही तो मिलते हैं।

हुज्जीयते हदीस (हदीस का शरई दलील होना) कुरान करीम से:

अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम कुरान करीम में बहुत बार हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दलील होने को बयान फरमाया है, जिनमें से चंद आयात का तर्जुमा नीचे लिखा जा रहा है।

“यह किताब हमने आपकी तरफ उतारी है कि लोगों की जानिब जो हुकुम नाज़िल फरमाया गया है आप उसे खोल खोल कर बयान कर दें, शायद कि वह गौर और फिक्र करें (सोचें)” (सूरह नहल 44)

“यह किताब हमने आप पर इसलिए उतारी है कि आप उनके लिए हर चीज़ को स्पष्ट कर दें जिसमें वह इख़िलाफ कर रहे हैं” (सूरह नहल 64)

अल्लाह तआला ने इन दोनों आयात में स्पष्ट रूप से बयान फरमा दिया कि कुरान करीम के पहले मुफ़स्सिर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला की तरफ से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह ज़िम्मेदारी दी गई है कि आप लोगों के सामने कुरान करीम के अहकाम और मसाइल खोल खोल कर बयान करें, इन दोनों मज़कूर आयात के अलावा अल्लाह तआला ने कुरान करीम की सैकड़ों आयात में अपनी इताअत (बात मानना) के साथ रसूल की इताअत का भी हुकुम दिया है, कहीं फरमाया “अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो” और फरमाया

“अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो” इन सब जगहों पर अल्लाह तआला की तरफ से बंदों से एक ही मांग है कि अल्लाह के आदेशों पर अमल करो और नबी की बात मानो, गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बहुत सी जगहों पर यह बात स्पष्ट रूप से बयान कर दी कि अल्लाह तआला की इताअत के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत भी ज़रूरी है और अल्लाह तआला की इताअत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत के बेगैर मुमकिन नहीं है। अल्लाह तआला ने हमें रसूल की इताअत का हुकुम दिया और रसूल की इताअत जिन वास्ते से हम तक पहुंची है यानी हदीसों का ज़खीरा अगर उन पर हम संदेह करें तो गोया हम कुरान करीम की सैकड़ों आयात के मुंकिर (इंकार करने वाले) हैं या ज़बाने हाल से यह कह रहे हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसी चीज़ का हुकुम दिया यानी इताअते रसूल का जो हमारे इख्तियार में नहीं है।

इसी तरह अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत को इताअते इलाही करार देते हुए फरमाया “जिसने रसूल की इताअत की उसने दरअसल अल्लाह तआला की इताअत की।”
(सूरह निसा 80)

इस आयत में अल्लाह तआला ने इताअते रसूल को हुब्बे इलाही का मेयार करार दिया, यानी अल्लाह तआला से मोहब्बत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत में है। इसलिए अल्लाह तआला का इरशाद है “ऐ नबी लोगों से कह दें कि अगर तुम हक़ीक़त में अल्लाह तआला से मोहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो,

अल्लाह तुमसे मोहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फरमाएगा”। (सूरह आले इमरान 31)

“जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेगा उसे अल्लाह तआला ऐसी जन्नतों में दाखिल फरमाएगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और इन बागों में वह हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा और उसकी निर्धारित सीमाओं से आगे निकलेगा, उसे जहन्नम में डाल देगा जिसमें वह हमेशा रहेगा, ऐसों ही के लिए अपमानजनक अज़ाब है।” (सूरह निसा 13, 14)

गरज़ ये कि अल्लाह और उसके रसूल की इताअत न करने वालों का ठिकाना जहन्नम है।

“जो अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेगा उसे अल्लाह तआला ऐसी जन्नतों में दाखिल फरमाएगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, और जो मुंह फेरेगा उसे दर्दनाक अज़ाब देगा” (सूरह फतह 17)

इन दो आयात में अल्लाह तआला ने अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत पर हमेशा हमेशा की जन्नत और अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नाफरमानी पर हमेशा हमेशा के अज़ाब का फैसला फरमाया है।

“जो लोग अल्लाह तआला और उसके रसूल की इताअत करेंगे वह उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह तआला ने इनाम नाज़िल फरमाया है, यानी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शोहदा और सालेहीन, कैसे अच्छे हैं यह रफीक़ जो किसी को उपलब्ध हो जाएँ” (सूरह निसा 69)

इस आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत करने वालों का हशर अम्बिया, सिद्दीकीन, शोहदा और नेक लोगो के साथ होगा।

“किसी मोमिन आदमी और मोमिना औरत को यह हक़ नहीं है कि जब अल्लाह और उसके रसूल किसी मामले का फैसला कर दें तो फिर उसे इस मामले में खुद फैसला करने का अधिकार प्राप्त है और जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कहना नहीं मानेगा वह खुली गुमराही में पड़ेगा” (सूरह अहज़ाब 36)

“तेरे रब की कसम यह कभी मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपसी इख़्तिलाफ़ में आपको फैसला करने वाला न मान लें, फिर जो कुछ तुम फैसला करो उसपर अपने दिलों में तंगी भी न महसूस करें बल्कि सर झुका कर तसलीम कर लें” (सूरह निसा 65)

इस आयत में अल्लाह तआला ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फैसलों की नाफरमानी को ईमान खत्म होने की निशानी और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत (बात मानना) को ईमान की अलामत करार दिया है।

“हकीकत यह है कि अल्लाह ने मोमिन पर बड़ा अहसान किया कि उनके बीच उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उनके सामने आयतों की तिलावत करे, उन्हें पाक साफ़ बनाए और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे” (सूरह आले इमरान 164) इस आयत से स्पष्ट रूप से मालूम हुआ कि रसूल का काम सिर्फ़ किताब पहुंचाना नहीं था,

बल्कि अल्लाह की किताब सुना कर उसके अहकाम (आदेश) को सिखाना भी था, और लोगों के दिलों की सफाई करना भी आपको भेजने का उद्देश्य भी था, दिलों की सफाई सिर्फ किताब हाथ में देने से नहीं होता बल्कि उसके लिए बात और अमल से रहनुमाई (मार्गदर्शन) ज़रूरी है जिसको अल्लाह तआला ने बयान फरमाया कि वह नबी लोगों को किताब और हिकमत सिखाता है, किताब से मुराद कुरान करीम और हिकमत से मुराद बात और अमल से लोगो की रहनुमाई (मार्गदर्शन) यानी हदीस नबवी है।

“रसूल उम्मी उनको नेकियों का हुकुम देते हैं और बुराइयों से रोकते हैं और पाकिज़ा चीज़ों को उनके लिए हलाल करार देते हैं और गन्दी चीज़ को उन पर हराम करार देते हैं” (सूरह आराफ 157)

इस आयत में अल्लाह तआला ने हज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हलाल करार देने वाला और हराम करार देने वाला बताया है। गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने आपको यह सम्मान दिया कि आपकी ज़बाने मुबारक से जिस चीज़ के हलाल का एलान हो गया वह हलाल है और जिसको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हराम फरमा दिया वह हराम है।

“यक्रीनन तुम्हारे लिए रसूलल्लाह में उमदा नमूना मौजूद है, हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह तआला की और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और कसरत के साथ (बार बार) अल्लाह को याद करता है” (सूरह अहज़ाब 21)

यानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी जो हदीसों की शकल में हमारे पास सुरक्षित है, कयामत तक आने वाले सभी इंसानों के लिए अच्छा नमूना है कि हम अपनी ज़िन्दगियाँ इसी नमूना के अनुसार गुजारें।

हुक्मे रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुखालिफत करने वालों को अल्लाह जहन्नम की सज़ा सुनाते हुए अल्लाह तआला फरमाता है “जो व्यक्ति रसूल की मुखालफत करे और ईमान वालों की रविश के सिवा किसी और के रास्ते पर चले जबकि हिदायत इस पर स्पष्ट हो चुकी है तो इसको हम इसी तरफ चलाएंगे जिधर वह फिर गया और उसे जहन्नम में झाँकेंगे जो बदतरीन ठिकाना है।” (सूरह निसा 115)

गरज़ ये कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बहुत सी जगहों पर यह बात बतलाई है कि अल्लाह तआला की इताअत के साथ रसूल की इताअत भी ज़रूरी है यानी अल्लाह तआला की इताअत रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत के बेगैर मुमकिन नहीं है, अल्लाह तआला ने हमें रसूल की इताअत का हुकुम दिया और रसूल की इताअत जिन वास्तों से हम तक पहुँची है यानी हदीसों, उन पर अगर हम संदेह करने लगे तो हम कुरान करीम की इन मज़कूरा सभी आयात के मुँकिर या ज़बाने हाल से यह कह रहे हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसी किसी चीज़ का हुकुम दिया है यानी रसूल की इताअत जो हमारे इख्तियार में नहीं है।

हुज्जीयते हदीस (हदीस का शरई दलील होना) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल (बातों) से:

सारे नबीयों के सरदार और आखिरी नबी हूज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी कुरान करीम के साथ सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इत्तिबा (पालन करने) को ज़रूरी करार दिया है, हदीस की तकरीबन हर किताब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात बहुत ज्यादा मौजूद हैं, इनमें से सिर्फ़ तीन हदीसें पेश हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने अल्लाह की नाफरमानी की। (बुखारी और मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब मैं तुम्हें किसी चीज़ से रोकूँ तो उससे रुक जाओ और जब मैं तुम्हें किसी काम का हुकुम करूँ तो अपनी शक्ति के अनुसार उसपर अमल करो। (बुखारी और मुस्लिम)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत के सभी लोग जन्नत में दाखिल होंगे सिवाए उन लोगों के जिन्होंने इंकार किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल! दुखूले जन्नत से कौन इंकार कर सकता है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसने मेरी इताअत की (पालन किया) वह जन्नत में दाखिल हो गया और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने (दुखूले जन्नत से) इंकार किया। (बुखारी और मुस्लिम)

हुज्जीयते हदीस (हदीस का शरई दलील होना) इजमा से:

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में और इन्तिकाल के बाद साहाबा-ए- किराम किसी भी मसअला का हल पहले कुरान करीम में तलाश किया करते थे, फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत में, इसी कारण अधिकतर उलमा ने वही की दो किसमें की है, जैसा कि सूरह नज्म की इब्तिदाई आयात से मालूम होता है जिसमे अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि “और न वह अपनी इच्छा से कोई बात कहते हैं, वह तो सिर्फ वही है जो उतारी जाती है।”

(1) वही मतलू - वह वही जिसकी तिलवात की जाती है यानी कुरान करीम जिसका एक एक शब्द अल्लाह का कलाम है।

(2) वही गैर मतलू - वह वही जिसकी तिलवात नहीं की जाती है यानी सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिसके अल्फ़ाज़ (शब्द) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हैं, परन्तु बात अल्लाह तआला की है।

कुरान करीम में अहकाम की तफसील ज़िक्र नहीं है:

कुछ हज़रात कुरान करीम की चंद आयात मसलन “तिबयानन लिकुल्ले शैय” (सूरह नहल 89) और “तफसीलन लिकुल्ले शैय” (सूरह इनाम 154) से गलत मफहूम ले कर यह बयान करने की कोशिश करते हैं कि कुरान करीम में हर मसअले का हल है और कुरान करीम को समझने के लिए हदीस की कोई खास ज़रूरत नहीं है, हालांकि हदीसे रसूल भी कुरान करीम की तरह शरीअते इस्लामिया में दलील और हुज्जत है, जैसा कि अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में बहुत सी जगहों पर स्पष्ट रूप से ज़िक्र किया है यानी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल (शब्द) और अमल से भी अहकामे शरीया साबित होते हैं।

कुरान करीम में उमूमन अहकाम की तफसील मज़कूर नहीं है, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला के हुकुम के अनुसार अपने अक़वाल और आमाल से अहकाम की तफसील बयान की है, इसी लिए तो अल्लाह तआला नबी और रसूल को भेजता है कि वह अल्लाह तआला के अहकाम अपने शब्दों और कार्यों से लोगों के लिए बयान करें। मसलन अल्लाह तआला ने कुरान करीम में बेशुमार जगह पर नमाज़ पढ़ने, रुकू और सजदे करने का हुकुम दिया है, लेकिन नमाज़ की तफसील कुरान करीम में मौजूद नहीं है कि एक दिन में कितनी नमाज़ अदा करनी है? क़याम या रुकू या सजदा कैसे किया जाएगा और कब किया जाएगा और उसमें क्या पढ़ा जाएगा? एक समय में कितनी रिकात अदा करनी है?

इसी तरह कुरान करीम में ज़कात की अदाएगी का तो हुकुम है, लेकिन तफसीलात मौजूद नहीं है कि ज़कात की अदाएगी रोज़ाना

करनी है या साल भर में या पांच साल में या ज़िन्दगी में एक मरतबा? फिर यह ज़कात किस हिसाब से दी जाएगी? किस माल पर ज़कात ज़रूरी है, और इसके लिए क्या क्या शरायत हैं?

गरज़ ये कि अगर हदीस की हुज्जीयत पर शक करें तो कुरान करीम की वह सैकड़ों आयात जिनमें नमाज़ पढ़ने, रूकू करने या सजदा करने का हुकुम है या ज़कात की अदाएगी का हुकुम है वह सब अल्लाह की पनाह बेमानी हो जाएंगी।

इसी तरह कुरान करीम (सूरह माइदा 38) में हुकुम है कि चोरी करने वाले मर्द और औरत के हाथ को काट दिया जाए, अब सवाल पैदा होता है कि दोनों हाथ काटें या एक हाथ? और अगर एक हाथ काटें तो दाहिना काटे या बायां? फिर उसे काटें तो कहाँ से? बगल से या कोहनी से? या कलाई से? या उनके बीच में किसी जगह से? फिर कितने माल की कीमत की चोरी पर हाथ काटें? इस मसअला की वज़ाहत हदीस में ही मिलती है, मालूम हुआ कि कुरान करीम हदीस के बेगैर नहीं समझा जा सकता है।

इसी तरह कुरान करीम (सूरह जुमा) में यह इरशाद है कि जब जुमा के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ दौड़ो और खरीद और फरोख्त छोड़ दो, सवाल यह है कि जुमा का दिन कौन सा है? यह अज़ान कब दी जाए? उसके अल्फ़ाज़ क्या हों? जुमा की नमाज़ कब अदा की जाए? उसको कैसे पढ़ें? खरीद और फरोख्त की क्या क्या शरायत हैं? इस मसअला की पूरी वज़ाहत हदीसों में ही मज़कूर है।

कुछ हज़रात सनद हदीस की बुनियाद पर हुई हदीसों की अक़साम या रावियों को मज़बूत या कमज़ोर करार देने में मुहद्दिसीन और फुक़हा

के इख्तिलाफ की वजह से हदीसे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ही संदेह की निगाह से देखते हैं, हालांकि उन्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम क़यामत तक आने वाले सभी अरब और अजम की रहनुमाई (मार्गदर्शन) के लिए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फरमाया और क़यामत तक उसकी हिफाज़त का वादा किया है और इसी कुरान करीम में अल्लाह तआला ने बहुत सी जगह (मसलन सूरह नहल 44, 64) पर इरशाद फरमाया है कि **“ऐ नबी! यह किताब हमने आप पर नाज़िल फरमाई ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस कलाम को खोल खोल कर लोगों के लिए बयान कर दें”** तो जिस तरह अल्लाह तआला ने कुरान करीम के अल्फ़ाज़ की हिफाज़त की है, उसके मानी और अर्थ जो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान फरमाए हैं वह भी कल क़यामत तक सुरक्षित रहेंगे इन्शाअल्लाह, कुरान करीम के अल्फ़ाज़ के साथ साथ उसके मानी और अर्थ की हिफाज़त भी मतलूब है, वरना कुरान के नाज़िल होने का उद्देश्य ही ख़तम हो जाएगा।

इसमें कोई शक नहीं कि हदीसों के संग्रह में कुछ बातें गलत तरीके से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ जोड़ी गई हैं, लेकिन मुहद्दिसीन और उलमा की बेलौस कुर्बानियों से तक्ररीबन सभी ऐसी गलत बातों की पहचान हो गई है जो हदीस के संग्रह का थोड़ा सा हिस्सा है? जहां तक रावियों (हदीस को बयान करने वालों) के सिलसिला में मुहद्दिसीन और उलमा के इख्तिलाफात का तअल्लुक है तो इस इख्तिलाफ की बुनियाद पर हदीस की हुज्जीयत पर संदेह नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इख्तिलाफ का असल उद्देश्य खुलूस

के साथ हदीसों के संग्रह में मौजूआत को अलग करना और अहकामे शरीआ में इन्ही हदीसों को काबिले अमल बनाना है जिस पर किसी तरह का कोई संदेह न रहे, जहाँ कोई संदेह हो तो उन हदीसों को अहकाम (आदेश) के बजाए सिर्फ आमाल की फज़ीलत की हद तक महदूद रखा जाए।

मसलन मरीज़ के इलाज में डाक्टरों का इख्तिलाफ होने की सूरत में डाक्टरी पेशा को ही रद्द नहीं किया जाता है, इसी तरह मकान का नक्शा तैयार करने में इंजीनियरों के इख्तिलाफ की वजह से इंजीनियरों के बजाए मज़दूर से नक्शा नहीं बनवाया जाता है, मौजूदा दौर में भी तालीम और तअल्लूम के लिए एक ही कोर्स के विभिन्न तरीके हैं, हर इलाका में ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीके विभिन्न हैं, गरज़ ये कि ज़िन्दगी के तक़रीबन हर शोबे में इख्तिलाफ मौजूद है, इन इख्तिलाफात के बावजूद हम ज़िन्दगी के ही मुंकिर नहीं बन जाते हैं तो हदीसों की तक़सीम और रावियों को भरोसेमंद करार देने में इख्तिलाफ की वजह से हदीस का ही इंकार क्यों? बल्कि यह इख्तिलाफ कभी उम्मत के लिए रहमत बनते है कि ज़माने के बदलाव के एतबार से मसअला का फैसला किसी एक राय के अनुसार कर दिया जाता है, तथा इन इख्तिलाफात की वजह से तहक़ीक़ (अनुसंधान) का दरवाजा भी खुला रहता है।

खुलासा कलाम:

सहाबा-ए-किराम, ताबेइन, तबेताबेइन, मुहद्दिसीन, मुफस्सेरीन, फ़ुक्हा, उलमा और इतिहासकार गरज़ ये कि इब्तिदाए इस्लाम से मौजूदा ज़माने तक उम्मत मुस्लिमा के विद्वानों के सभी समूहों ने माना है

कि कुरान के बाद हदीस इस्लामी क़ानून का दूसरा मुख्य स्रोत है और हदीस भी कुरान करीम की तरह शरीअते इस्लामिया में दलील और हुज्जत है जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान में बहुत सी जगहों पर ज़िक्र फरमाया, तथा कुरान करीम में एक जगह भी यह ज़िक्र नहीं कि सिर्फ और सिर्फ कुरान करीम पर अमल करो। गरज़ ये कि कुरान के आदेशों पर अमल के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शब्दों और कार्यों यानी हदीसे नबवी के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारना ज़रूरी है। हक़ तो यह कि हदीस के बेगैर कुरान समझना मूमकिन ही नहीं है, क्योंकि अल्लाह की तरफ से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह ज़िम्मेदारी दी गई है कि आप लोगों के सामने कुरान करीम के अहक़ाम और मसाइल खोल खोल कर बयान करें और हमारा यह ईमान है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िम्मेदारी बहुस्ने खूबी अंजाम दी है, मगर मुस्तशरेकीन (प्राच्य विद्या विशारद) ने तौरेत और इंजील की हिफ़ाज़त और तदवीन के तरीकों पर बात न कर के हदीस की हिफ़ाज़त और उसके लिखने पर एतेराज़ात किए हैं, मगर वह हक्काएक के बजाए सिर्फ और सिर्फ इस्लाम दुश्मनी पर लिखे गये हैं।

अल्लाह तआला हम सबको कुरान और सुन्नत के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारने वाला बनाए, आमीन।

हदीस की किस्में (प्रकार):

सनदे हदीस (जिन वास्तों से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ौल या अमल या तक्ररीर या आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई सिफत (विशेषता) उम्मत तक पहुंची है) के एतेबार से हदीस की विभिन्न किस्में बयान की गई हैं, जिनमें से तीन मुख्य किस्में नीचे लिखी हैं।

सही - वह हदीस जिसकी सनद में हर रावी (हदीस बयान करने वाला) इल्म और तक्रवा दोनों में कमाल को पहुंचा हुआ हो और हर रावी ने अपने शैख से हदीस सुनी हो, और हदीस के टेक्स्ट में किसी दूसरे मज़बूत रावी की रिवायत से कोई बड़ा फ़र्क न हो और कोई दूसरी कमी (नुक्स) भी न हो।

सही का हुकुम - अधिकतर मुहद्दीसीन, मुफस्सेरीन, फुक्हा और उलमा का इन हदीसों से अक्लाएद और अहकाम साबित करने में इत्तिफाक है।

हसन - वह हदीस जिसकी सनद में हर रावी तक्रवा में तो कमाल को पहुंचा हुआ हो और हर रावी ने अपने शैख से हदीस भी सुनी हो, तथा हदीस के टेक्स्ट में किसी दूसरे मज़बूत रावी की रिवायत से कोई बड़ा फ़र्क भी न हो, लेकिन कोई एक रावी इल्म में उच्च पैमाने का न हो।

हसन का हुकुम - अधिकतर मुहद्दीसीन, मुफस्सेरीन, फुक्हा और उलमा का इन हदीसों से अक्लाएद और अहकाम साबित करने में इत्तिफाक है, लेकिन इसका दर्जा सही से कम है।

ज़ईफ - हदीसे हसन की शराएत में से कोई एक शर्त मौजूद ना हो।

ज़ईफ़ का हुकुम - ज़ईफ़ हदीसों से अहकाम और फज़ाइल में इस्तिदलाल के लिए फुक़हा और उलमा और मुहद्दिसीन की तीन राय हैं।

- 1) ज़ईफ़ हदीसों से अहकाम और फज़ाइल दोनों में इस्तिदलाल किया जा सकता है।
- 2) ज़ईफ़ हदीसों से अहकाम और फज़ाइल दोनों में इस्तिदलाल नहीं किया जा सकता है।
- 3) अक्राएद या अहकाम तो साबित नहीं होते, लेकिन कुरान या सही हदीसों से साबित शुदा आमाल की फज़ीलत के लिए ज़ईफ़ हदीसों कबूल की जाती हैं। अधिकतर मुहद्दिसीन, मुफ़स्सेरीन, फुक़हा और उलमा की यही राय है। मशहूर मुहद्दिस इमाम नववी ने उलमा उम्मत का इस पर इजमा होने का ज़िक्र किया है।

(नोट) हदीस की इस्तिलाह में सही गलत या बातिल के मुकाबला में इस्तेमाल नहीं होता है, बल्कि सही का मतलब ऐसी हदीस जिसकी सनद में ज़र्रा बराबर किसी किस्म की कोई कमी न हो और सभी रावी इल्म और तक़वा में कमाल को पहुंचे हुए हों, जबकि हदीस हसन का मतलब है कि जो सही के मुकाबले दर्जा में कुछ कम हो, ज़ईफ़ का मतलब यह है कि उसकी सनद के किसी रावी में कुछ कमज़ोरी हो जैसा कि ऊपर बयान किया गया। गरज़ ये कि ज़ईफ़ हदीस सही हदीस की एक किस्म है। ज़ईफ़ हदीस में ज़ोफ़ आम तौर पर मामूली दर्जा का ही होता है। हदीस के ज़ख़ीरे में अगरचे कुछ मौजूआत भी शामिल हो गई हैं, लेकिन वह गिनती में बहुत ज़्यादा नहीं हैं, तथा मुहद्दिसीन और उलमा ने दिन रात की कोशिश से उनको चिन्हित भी कर दिया है।

ज़ईफ हदीस भी सही हदीस की एक किस्म है:

पहले ज़माने से आज तक इस्तिलाहे हदीस में सही के मुकाबले में मौजू इस्तेमाल होता है, यानी वह मनघड़त बात जो हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ गलत मनसूब कर दी गई हो। मुहद्दिसीन और उलमा ने दिन रात की कोशिश से उनकी निशानदही भी कर दी है और हदीस के ज़खीरे में उनकी तादाद बहुत ज़्यादा नहीं है, जबकि ज़ईफ हदीस सही हदीस की ही एक किस्म है, लेकिन इसकी सनद में कुछ कमज़ोरी की वजह से जमहूर (अधिकतर) उलमा इसको फज़ाइल में कबूल करते हैं। मसलन सनद में अगर कोई रावी गैर मारूफ साबित हुआ, यानी यह मालूम नहीं कि वह कौन है या उसने किसी एक मौक़ा पर झूट बोला है या सनद में इंकिताअ है (यानी दो रावियों के बीच किसी रावी का ज़िक्र न किया जाए मसलन, ज़ैद ने कहा कि अमर ने रिवायत की है, हालांकि ज़ैद ने अमर का ज़माना नहीं पाया, मालूम हुआ कि यक़ीनन इन दोनों के बीच कोई वास्ता छूटा हुआ है) तो इस किस्म के शक और शुबहा से मुहद्दिसीन, फुक्कहा और उलमा इहतियात के तौर पर उस रावी की हदीस को अक्काएद और अहकाम में कबूल नहीं करते हैं, बल्कि जो अक्काएद या अहकाम कुरान करीम या सही हदीसों से साबित हुए हैं उनके फज़ाइल के लिए कबूल करते हैं, इसलिए बुखारी और मुस्लिम के अलावा हदीस की मशहूर सभी किताबों में ज़ईफ हदीसों की अच्छी खासी तादाद मौजूद है और उम्मत मुस्लिमा इन किताबों को पुराने ज़माने से कबूलियत का शरफ दिए हुए है, हत्ताकि कुछ उलमा की तहकीक़ (अनुसंधान) के अनुसार बुखारी की 'तआलीक़' और मुस्लिम की 'शवाहिद' में भी कुछ ज़ईफ हदीसों मौजूद हैं। इमाम बुखारी ने

हदीस की बहुत सी किताबें लिखी हैं, बुखारी के अलावा उनकी भी सभी किताबों में बहुत ज़ईफ हदीसों मौजूद हैं। सही बुखारी और सही मुस्लिम से पहले और बाद में हदीसों की किताबें लिखी गईं, मगर हर मुहद्दिस ने अपनी किताब में ज़ईफ हदीसों ज़िक्र फरमाई हैं। इसी तरह कुछ मुहद्दिस ने सिर्फ सही हदीसों को ज़िक्र करने का अपने ऊपर इल्तिज़ाम किया, जैसे कि सही इब्ने खुज़ैमा और सही इब्ने हिब्बान वगैरह, मगर इसके बावजूद उन्होंने अपनी किताब में अहादीस ज़ईफा भी ज़िक्र फरमाई हैं, जो इस बात की स्पष्ट दलील है कि पहले ज़माने से आज तक सभी मुहद्दिसीन ने ज़ईफा हदीसों को क़बूल किया है। सबसे मशहूर तफसीरे कुरान (तफसीर इब्ने कसीर) में बड़ी संख्या में ज़ईफ हदीसों हैं, लेकिन उसके बावजूद तफ़्सीर 700 साल से पूरी उम्मत मुस्लिमा ने इसको क़बूल किया है और सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली तफसीर है और इसके बाद में लिखी जाने वाली तफसीरों के लिए स्रोत है।

अगर ज़ईफ हदीस काबिले एतेबार नहीं है तो सवाल यह है कि मुहद्दिसीन ने अपनी किताबों में उन्हें क्यों जमा किया? और उनके लिए लम्बे सफर क्यों किए? तथा यह बात भी ज़ेहन में रखें कि अगर ज़ईफ हदीस को भरोसे के लायक नहीं समझा जाएगा तो सीरते नबवी और तारीखे इस्लाम का एक बड़ा हिस्सा दफन करना पड़ेगा, क्योंकि सीरत और तारीखे इस्लाम का बड़ा हिस्सा ऐसी रिवायत पर मबनी (आधारित) है जिसकी सनद में कमज़ोरी हो। पुराने ज़माने से जमहूर (अधिकतर) मुहद्दिसीन का उसूल यही है कि ज़ईफ हदीस फज़ाइल में मोतबर है और उन्होंने ज़ईफ हदीस को सही हदीस की किस्मों में ही शुमार किया है। मुस्लिम शरीफ की सबसे ज़्यादा

मक़बूल शरह लिखने वाले इमाम नववी (रियाजुस सालेहीन के लिखक) फरमाते हैं: “मुहद्दीसीन, फुक़हा, और जमहूर (अधिकतर) उलमा ने फरमाया है कि ज़ईफ़ हदीस पर अमल करना फज़ाइल, तरगीब और तरहीब में जाएज़ और मुस्तहब है।” (अल अज़कार पेज 7, 8) इसी उसूल को दूसरे उलमा और मुहद्दीसीन ने लिखा है जिन में से कुछ के नाम यह हैं: शैख मुल्ला अली क़ारी (मौज़ूआते कबीरा पेज 5, शरहुल अक़ारिया जिल्द 1 पेज 9, फतहु बाबिल इनाया 1/49), शैख इमाम हाकिम अबू अब्दुल्लाह नीशापूरी (मुस्तदक हाकिम जिल्द 1 पेज 490), शैख इब्ने हजर अलहैसमी (फतहुल मुबीन पेज 32), शैख अबू मोहम्मद बिन कुदामा (अलमुगनी 1/1044), शैख अल्लामा शौकानी (नैलुल औतार 3/48), शैख हाफिज इब्ने रजब हमबली (शरह इलल अत तिर्मिज़ी 1/72, 74), शैख अल्लामा इब्ने तैमिया हमबली (फतावा 1 पेज 39), शैख नवाब सिद्दीक हसन खां (दलीलुत तालिब अलल मतालिब पेज 889)।

मौजूदा ज़माने में कुछ हज़रात जो मुसलमानों की आबादी का एक प्रतिशत भी नहीं हैं अपनी राय को उम्मत मुस्लिमा के सामने इस तरह पेश करते हैं कि वह जो कहते हैं वही सिर्फ़ सही हदीसों पर मबनी है और पूरी उम्मत मुस्लिमा के अक़वाल ज़ईफ़ हदीसों पर मबनी हैं। उनकी नज़र में हदीस के सही या ज़ईफ़ होने का मेयार (गुणवत्ता) सिर्फ़ यह है कि जो वह कहें, वही सिर्फ़ सही है, हालांकि हदीसों की किताबें लिखने के बाद हदीस बयान करने वाले रावियों पर बाक़ाएदा बहस हुई, जिसको ‘असमाउर रिजाल’ की बहस कहा जाता है। शरई अहक़ाम में उलमा और फुक़हा के इख़्तिलाफ़ की तरह बल्कि इससे भी कहीं ज़्यादा इख़्तिलाफ़ मुहद्दीसीन का रावियों को

ज़ईफ और सिकह (भरोसेमंद) करार देने में है। यानी एक हदीस एक मुहद्दिस के नुक्तए नज़र में ज़ईफ और दूसरे मुहद्दिसीन की राय में सही हो सकती है, लिहाज़ा अगर कोई हदीस पेश की जाए तो फौरन आम लोगों को बेगैर तहकीक किए हुए यह तबसिरा नहीं करना चाहिए कि यह हदीस सही नहीं है। इसलिए कि बहुत ज़्यादा मुमकिन है कि वह हदीस हो जिससे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल का इंकार लाज़िम आए और अगर कोई आलिम किसी हदीस को काबिले अमल नहीं समझता है तो वह उस पर अमल न करे लेकिन अगर कोई दूसरा मकतबे फिक्र उस हदीस को काबिले अमल समझता है और उस हदीस पर अमल करना कुरान और हदीस के किसी हुकुम के मुखालिफ भी नहीं है तो हमें चाहिए कि हम सभी मकातिबे फिक्र की राय का एहतेराम करें, मसलन रजब के शुरू महीने पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से **“अल्लाहुम्मा बारिक लना फी रजबिन व शाबान व बल्लिगना रमज़ान”** पढ़ना साबित है और यह हदीस मुसनद अहमद, बज़्ज़ार, तबरानी और बैहकी जैसी किताबों में मौजूद है जिनको पूरी उम्मत मुस्लिमा ने क़बूल किया है तो जो उलमा इस हदीस की सनद पर एतेराज़ करते हैं वह यह दुआ न पढ़ें, बल्कि अगर उलमा की एक जमाअत इस हदीस को काबिले अमल समझ कर यह दुआ मांगती है तो उनके बिदअती होने का फतवा सादिर करना कौन सी अकलमंदी है। इसी तरह उलमा, फुकहा और मुहद्दिसीन की एक बड़ी जमाअत की राय है कि 15वीं शाबान से मुतअल्लिक हदीसों के काबिले क़बूल और उम्मत मुस्लिमा का अमल शुरू से इस पर होने की वजह से 15वीं शाबान की रात में अपने अपने तौर पर नफल नमाज़ों की अदाएगी, कुरान करीम की

तिलावत, ज़िक्र और दुआओं का किसी हद तक एहतेमाम करना चाहिए। लिहाज़ा इस तरह से 15वीं शाबान की रात में इबादत करना बिदअत नहीं बल्कि इस्लामी तालीमात के ऐन मुताबिक़ है। गरज़ ये कि ज़ईफ़ हदीस भी सही हदीस की एक किस्म है और उम्मतें मुस्लिमा ने फज़ाइले आमाल के लिए हमेशा उनको क़बूल किया है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हदीस लिखने की आम इजाज़त नहीं थी, ताकि क़ुरान की आयात हदीसों में मिल न जाएं, लेकिन व्यक्तिगत रूप से सहाबा-ए-किराम की एक जमाअत ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त से हदीसों के सहीफ़े तैयार कर रखे थे। ख़ुलफ़ाए राशेदीन के ज़माने में भी हदीस लिखने का नज़्म व्यक्तिगत रूप से जारी रहा। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अपनी खिलाफ़त के ज़माने में हदीसों को जमा कराने का खास एहतेमाम किया। इस तरह हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहि की खुसूसी तवज्जोह से पहली सदी हिजरी के अंत तक हदीसों का एक बड़ा ज़खीरा जमा कर लिया गया था जो बाद में लिखी गई किताबों के लिए मुख्य स्रोत बना।

हदीस-ए-कुदसी: उस हदीस को कहते हैं कि जिसमें नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से यह बयान हो की अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है, यानी अल्लाह तआला के पैग़ाम (संदेश) को अल्लाह तआला ही के शब्द में ज़िक्र किया जाए तो उसको हदीस-ए-कुदसी कहा जाता है। जबकि हदीस-ए-नबवी में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के पैग़ाम (संदेश) को अपने शब्दों के ज़रिए बयान फ़रमाते हैं।

हदीस-ए-कुदसी की संख्या: हदीस-ए-कुदसी की संख्या के बारे में उलैमा और मुहद्दिसीन की राय विभीन्न प्रकार की हैं, अल्लामा इब्ने हजर रहिमाहुल्लाहु की तहक़ीक़ के अनुसार हदीस-ए-कुदसी की संख्या सौ से कुछ ज़्यादा है।

कुरान और हदीस-ए-कुदसी में फ़र्क़ (अंतर): हालांकि हदीस-ए-कुदसी भी अल्लाह तआला के कलाम पर शामिल होती है, लेकिन हदीस-ए-कुदसी और कुरान-ए-करीम के बीच में अंतर मौजूद हैं, यहाँ कुछ बयान कर रहा हूँ:

- 1) कुरान मोजज़ा (चमत्कार) है, इसके जैसी एक आयत पेश न किये जा सकने का क़यामत तक लोगों को चैलेंज है, जबकि हदीस-ए-कुदसी इस तरह नहीं है।
- 2) कुरान-ए-करीम फ़साहत और बलागत (स्पष्टता और वाग्मिता) का सबसे बड़ा नमूना है, जबकि हदीस-ए-कुदसी इस तरह नहीं है।
- 3) कुरान-ए-करीम हर ज़माने में लोगों की बहुत बड़ी संख्या के ज़रिए लोगों तक पहुँचा है, इसके एक एक शब्द की हिफ़ाज़त

(सुरक्षा) की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने खुद ली है, जबकि हदीस-ए-कुदसी इस तरह नहीं है।

- 4) कुरान-ए-करीम को बगैर वुजू के छू नहीं सकते, तथा नापाक व्यक्ति इसकी तिलावत (पढ़) नहीं कर सकता है, जबकि हदीस-ए-कुदसी इस तरह नहीं है।
- 5) कुरान-ए-करीम की तिलावत (पढ़ना) इबादत है, नमाज़ में कुरान-ए-करीम की तिलावत (पढ़ना) करना अनिवार्य है, जबकि हदीस-ए-कुदसी इस तरह नहीं है।

हदीस-ए-कुदसी का उदाहरण: हज़रत अबु हुदैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: “कि मैं बन्दे के साथ वैसा ही मामला करता हूँ जैसा कि वह मेरे साथ गुमान (सोच) रखता है, और जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ, तो अगर वह मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसको अपने दिल में याद करता हूँ और अगर वह मेरा लोगों में ज़िक्र करता है तो मैं लोगों से बेहतर यानी फ़रिश्तों (जो मासूम और बेगुनाह हैं) में ज़िक्र करता हूँ”। (बुखारी और मुस्लिम)

हदीस मज़क़ूरा मक्कासिद में से किसी एक उद्देश्य के लिए होती है:

- 1) कुरान करीम में वारिद अक्काएद, अहकाम और मसाइल की ताकीद।

- 2) कुरान करीम में वारिद अक्काएद, अहकाम और मसाइल के इजमाल की तफसील
- 3) कुरान करीम के संक्षेप का विस्तार।
- 4) कुरान करीम के उमूम की तखसीस (आम चीजों को खास करना)।
- 5) कुछ दूसरे अक्काएद, अहकाम और मसाइल का ज़िक्र, जैसा कि अल्लाह तआला ने **सूरह हशर, आयत 7** में इरशाद फरमाया “जिसका हुकुम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दें उसको बजा लाओ और जिस काम से मना करें उससे रूक जाओ।”

हदीसों की किताबत (लिखाई):

200 हिजरी से 300 हिजरी के बीच हदीसों लिखने का खास एहतेमाम हुआ, इसलिए हदीस की मशहूर किताबें बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाउद, इब्ने माजा, नसई वगैरह (जिनको सिहाए सित्तह कहा जाता है) इसी दौर में लिखी गई हैं, जबकि मोअत्ता इमाम मालिक 60 हिजरी के करीब लिखी गई। इन हदीसों की किताबों के लिखने से पहले ही 50 हिजरी में हज़रत इमाम अबू हनीफा (शैख नोमान बिन साबित) की वफात हो चुकी थी। इमाम मोहम्मद रहमतुल्लाह अलैह की रिवायत से इमाम अबू हनीफा की हदीस की किताब **(किताबुल आसार)** इन हदीसों की किताबों के लिखने से पहले मुरत्तब हो गई थी। यह बात अच्छी तरह ज़ेहन में रखें कि पूरी दुनिया में बाक्काएदा लिखने के आम मामूल 200 हिजरी के बाद ही शुरू हुआ है, यानी हदीस की तरह तफसीर, सीरत और इस्लामी तारीख जैसे दीनी उलूम की बाक्काएदा किताबत 200 हिजरी के बाद ही शुरू हुई है। इसी तरह

असरी उलूम और शेर और शायरी भी 200 हिजरी से पहले दुनिया में उमूमी तौर पर तहरीरी शकल में मौजूद नहीं थी, क्योंकि कम तादाद ही पढ़ना लिखना जानती थी। 200 हिजरी तक सभी उलूम ही हत्ताकि शायरों के बड़े बड़े दीवान भी सिर्फ ज़बानी तौर पर एक दूसरे से मुंतकिल (अंतरण) होते चले आ रहे थे। अगर यह एतेराज़ किया जाए कि हदीस की बाक़ाएदा किताबें 200 हिजरी के बाद सामने आई हैं तो इस किस्म के एतेराज़ तफ़सीरे कुरान, सीरत की किताबों और इस्लामी तारीख और शायरों के दीवानों बल्कि यह एतेराज़ दूसरे असरी उलूम पर भी किया जा सकता है, क्योंकि बाक़ाएदा उनकी किताबत 200 हिजरी के बाद ही शुरू हुई है। 200 हिजरी तक अगरचे बहुत सी किताबें मनज़रे आम पर आ चुकी थीं, मगर आम तौर पर सभी उलूम सिर्फ ज़बानी ही पढ़े और पढ़ाए जाते थे।

खुलासए कलाम यह है कि कुरान के बाद हदीस इस्लामी क़ानून का दूसरा मूल स्रोत है और हदीसे नबवी भी कुरान करीम की तरह शरीअते इस्लामिया में क़तई दलील और हुज्जत है। हदीस के बेग़ैर हम कुरान को समझना तो दरकिनार इस्लाम के पांच बुनियादी मुख्य रुक्न को भी नहीं समझ सकते हैं।

हदीसों विश्वसनीय ज़राए से ही उम्मत को पहुंचीं जिनके बगैर कुरआन फ़हमी मुमकिन नहीं

कुछ लामज़हब (जिनका कोई मज़हब नहीं) की जानिब से यह एतराज़ किया जाता है कि अहादीसे मुबारका दूसरी हिजरी में लिखी गयीं, इसलिए उनकी सही होने पर कैसे भरोसा किया जा सकता है? हमारे कुछ मुस्लिम भाई भी किसी हद तक उनकी तहरीरों या बयानात से परभावित होकर कम इल्मी की वजह से इस तरह के सवालात करना शुरू कर देते हैं। इस मौजू पर बहुत कुछ लिखा गया है।

1) इतिहास गवाह है कि कुछ सहाबाए किराम ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में भी हदीसों लिखी थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद भी कुछ सहाबाए किराम ने हदीसों लिखने का सिलसिला जारी रखा। और ताबईन की एक जमाअत ने हदीसों लिखने का खास एहतमाम किया।

2) कुरआने करीम की आयात के नाज़िल होने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कातबीने वही के ज़रिए नाज़िल शुदा आयात लिखवा दिया करते थे, कातबीने वही की तादाद ज़्यादा से ज़्यादा पचास थी। गर्ज़ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में कुरआने करीम की अस्ल हिफ़ाजत याद करके ही की गयी, क्योंकि उस ज़माने में बहुत कम लोग ही लिखना पढ़ना जानते थे। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अन्हु के ज़माने में कुरआने करीम जो विभिन्न जगहों पर लिखा था को एक जगह जमा तो कर दिया गया था, लेकिन कुरआने करीम की असल हिफ़ाजत याद करके

ही की जाती रही क्योंकि उस समय यही अहम ज़रिया था। हज़रत उस्मान ग़नी रज़िअल्लाहुअन्हु के ज़माने में जब इस्लाम अरब से अजम तक फैल गया तो कुरआने करीम के नुस्खे तैयार करके गर्वनरों को भेज दिये गये ताकि उसी के मुताबिक कुरआने करीम के नुस्खे तैयार किये जायें। ग़र्ज़ कुरआने करीम की पहली हिफाज़त याद करके ही हुई है। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वही नाज़िल होने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को याद हो जाती थी जैसा कि कुरआने करीम में इसका ज़िक्र है। आज भी पूरी दुनिया में लाखों हुफ़फ़ाज़े किराम कुरआने करीम को हिफ़्ज करके उसकी हिफाज़त में अहम रोल अदा कर रहे हैं।

3) पहली सदी हिजरी में दुनिया का कोई भी इल्म तहरीरी शक़ल में नहीं था, यहाँ तक कि किसी भी ज़बान की शायरी पहली हिजरी में बाकायदा तौर पर तहरीरी शक़ल में नहीं थी। तारीख़ की कोई भी मुसतनद किताब किसी भी ज़बान में दुनिया में किसी भी जगह पर पहली हिजरी में लिखी नहीं की गयी। साइंस, जियोलोजी और बायोलोजी वगैरह जैसे उलूम भी दुनिया में पहली हिजरी में तहरीरी शक़ल में मौजूद नहीं थे। ग़र्ज़ कि यह ऐसा है कि कोई व्यक्ति कहे कि आज से पचास साल पहले किताबें कम्प्यूटर के ज़रिए लिखी नहीं जाती थीं, जब दुनिया में यह ज़रिया मौजूद ही नहीं था तो कहां से किताबें कम्प्यूटर से लिखी होतीं। ग़र्ज़ कि पहली सदी हिजरी में तालीम का अस्ल ज़रिया लिखना नहीं बल्कि सुनना, सुनाना और याद करना ही था। इसी वजह से सीरतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर कोई बाकायदा किताब पहली हिजरी में मन्ज़रे आम पर नहीं आयी, हालांकि कुछ सहाबा या ताबईन ने सीरतुन्नबी के कुछ

वाकियात लिखे थे। पहली हिजरी में क़यामत तक आने वाले सभी इन्सानो के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत एक दूसरे को ज़बानी ही बयान की जाती थी, क्योंकि उस समय यही अहम ज़रिया था।

4) हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज ने अपने दौर ख़िलाफ़त (99हि.-101हि.) में पहली हिजरी के अंत तक मुहदसीन और उलमा की सरपरस्ती में सरकारी तौर पर हदीसों की बहुत बड़ी संख्या को एक जगह जमा करा दिया था। यह वह ज़माना था जब सहाबाए किराम से तालीम और तरबियत हासिल करने वाले बेशुमार हज़रात मौजूद थे। जब दूसरी हिजरी में लिखना पढ़ना आम हुआ तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज रहमतुल्लाह अलैइह के दौर ख़िलाफ़त में जमा शुदा हदीसों को बुनियाद बनाकर हदीसों की किताबें लिखी गयीं, और अल्लाह के डर के साथ पूरी ईमानदारी से मुहदसीन ने हज़ारों मील के सफ़र तय करके हदीसों की मुकम्मल तहकीक़ (खोज) करके ही हदीसें लिखीं।

5) कुरआने करीम की सैंकड़ों आयात में अल्लाह तआला ने रसूल की इताअत का हुक्म दिया है, रसूल की इताअत हदीसों में ही तो मौजूद है। अगर हदीसों के ज़ख़ीरे पर एतराज़ किया जायेगा तो कुरआन की उन सैंकड़ों आयात का इन्कार लाज़िम आयेगा जिनमें रसूल की इताअत का हुक्म दिया गया है।

6) हदीसों के ज़ख़ीरे में कुछ मौजूआत शामिल हो गयी थीं, लेकिन वह पूरे ज़ख़ीरे के मुक़ाबले में एक फीसद से भी कम हैं, तथा उसी समय मुहदसीने किराम ने अपनी ज़िन्दगियाँ लगाकर इन मौजू को हदीसों से अलग कर दिया था। चंद मौजू हदीसों को बुनियाद बनाकर

हदीसों के काबिल एतमाद इतने बड़े ज़खीरे को शक और शुबह से देखना ना सिर्फ़ गैर न्यायिक बल्कि ज़ालिमाना फैसला होगा।

7) कुरआने करीम में सिर्फ़ उसूल बयान किये गये हैं, अहकाम की तफ़सील ज़िक्र नहीं है। अगर हदीसों के ज़खीरे पर भरोसा नहीं किया जायेगा तो किस तरह कुरआने करीम पर अमल होगा। कुरआने करीम में नमाज़, ज़कात और हज जैसे दीने इस्लाम के बुनियादी अरकान की अदायगी का हुक्म तो मौजूद है लेकिन अदायगी का तरीका और अहकाम और मसाइल हदीसों में ही मौजूद हैं। कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने खुद बयान किया कि हमने कुरआन आखिरी नबी पर उतारा है, ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अहकाम और मसाइल खोल खोल कर लोगों के सामने बयान कर दें। अगर हदीसों के ज़खीरे पर शक और शुबह किया जायेगा तो फिर कौनसा ज़रिया होगा जिससे मालूम हो कि कुरआने करीम में अल्लाह की मुराद क्या है। सही बात यही है कि कुरआने करीम को हदीस के बगैर नहीं समझा जा सकता, मसलन कुरआने करीम में है कि चोरी करने वाले के हाथ काट दिये जायें, अब सवाल पैदा होता है कि कितने माल के चुराने पर हाथ काटे जायें, फिर हाथ कौनसा काटा जाये और कहाँ से। कुरआने करीम में इसकी कोई वज़ाहत नहीं है, ज़ाहिर है कि उसका विवरण हदीसों में ही है। इसी तरह कुरआने करीम (सूरतुल जुमअह) में इरशाद है कि जब जुमे की नमाज़ के लिए पुकारा जाये तो अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो और खरीद और फरोख्त छोड़ दो। सवाल यह है कि जुमे का दिन कौनसा है? यह अज़ान कब दी जाये? उसके अल्फाज़ क्यों हों? जुमे की

नमाज़ कब अदा की जाये? उसको कैसे पढ़ें? खरीद और फरोख्त की क्या क्या शराएत हैं? इन मसाइल का पूर्ण विवरण हदीसों में ही है।

8) जिन माध्यम से कुरआने करीम हमारे पास पहुंचा है, उनही माध्यम से हदीसों हमारे पास पहुंची हैं, हाँ कुरआने करीम का एक एक शब्द शुरू से ही बहुत बड़ी संख्या ने मुन्तिकल (Transfer) किया है, (अगरचे शुरू में अस्ल हिफ़ाज़त याद करने से ही हुई है) लेकिन सभी हदीसों तवातुर के साथ मुन्तिकल नहीं हुई हैं, इसीलिए इसका मक़ाम (स्थान) कुरआने करीम के बाद है।

9) दुनिया में मौजूद दूसरी मज़हबी किताबों की हिफ़ाज़त के लिए जो कमज़ोर वसाइल (सूत्रों) इख्तियार किये गये हैं उनका कुरआन और हदीस की हिफ़ाज़त के लिए इख्तियार किये गये मज़बूत वसाइल से कोई मुक़ाबला नहीं है, क्योंकि रिवायत का सिलसिला सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम में ही मिलता है, यानि अगर कोई व्यक्ति कुरआन और हदीस की कोई बात बयान करता है तो वह साथ में यह भी ज़िक्र करता है कि किन किन वास्तों से यह बात उसको पहुंची है। हदीसों की मशहूर किताबों की तसनीफ़ के बाद अब सिर्फ़ उन किताबों का हवाला लिख दिया जाता है क्योंकि हदीस की किताबों में हदीस की इबारत के साथ सनद भी ज़िक्र है यानि किन किन वास्तों से यह हदीस हदीस लिखने वाले तक पहुंची है।

10) जिन हदीसों की सनद में कोई संदेह नज़र आया तो उलमाए उम्मत ने एहतियात के तौर पर उन हदीसों को फ़जाइल के लिए तो क़बूल किया मगर उनसे अहक़ाम साबित नहीं किये।

11) कुरआने करीम 23 साल में नाज़िल हुआ है। आयत का शाने नुज़ूल यानि आयत कब और किस मौक़े पर नाज़िल हुई हदीस में ही

ज़िन्न है। तथा कुछ मसाइल में हुक्म बतदरीज नाज़िल हुआ, मसलन शराब की हुरमत एक साथ नाज़िल नहीं हुई, इसलिए फ़रमाने इलाही है: ऐ ईमान वालो! जब तुम नशे की हालत में हो तो उस समय नमाज़ के करीब भी ना जाना जब तक तुम जो कुछ कह रहे हो उसे समझने ना लगे। (सूरतुन्निहा 43) गर्ज़ कि पहले नमाज़ की हालत में शराब को मना किया गया, फिर मुकम्मल तौर पर शराब की हुरमत नाज़िल हुई। इस तरह के धीरे धीरे नाज़िल होने वाले अहकाम की तफ़सील अहादीसे मुबारका में ही मौजूद है।

गर्ज़ कि जिस तरह अल्लाह उसके रसूल को अलग अलग नहीं किया जा सकता उसी तरह कुरआन और हदीस को अलग अलग नहीं किया जा सकता, यानि हदीस के बग़ैर कुरआने करीम को समझ ही नहीं सकते और कैसे समझ सकते हैं क्योंकि अल्लाह तआला ने अपना कलाम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाया ताकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने कौल और अमल से अल्लाह की मुराद बयान करें। अल्लाह तआला ने सूरतुन्निहा आयत 80 में रसूलुल्लाह की इताअत को इताअत इलाही करार देते हुए फ़रमाया: जिस व्यक्ति ने रसूलुल्लाह की इताअत की उसने दरअसल अल्लाह तआला की इताअत की। तथा अल्लाह तआला ने कुरआन हकीम में कई जगहों पर यह बात स्पष्ट तौर पर बयान कर दी कि अल्लाह तआला की इताअत के साथ रसूल की इताअत भी ज़रूरी है, यानि अल्लाह की इताअत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इताअत के बग़ैर संभव ही नहीं है। अल्लाह तआला ने हमें रसूल की इताअत का हुक्म दिया और रसूल

की इताअत जिन वास्तों से हम तक पहुंची है यानि हदीसों का जखीरा उन पर अगर हम संदेह करने लगे तो गोया हम कुरआने करीम की उन मज़कूरा सभी आयात के मुनकिर (ना मानने वाले) हैं या ज़बाने हाल से कह रहे हैं कि अल्लाह तआला ने ऐसी चीज़ का हुक्म दिया है यानि इताअत रसूल जो हमारे इख्तियार में नहीं है।

हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कीमती फरमान (अच्छी बातें)

बेमिसाल अदीबे अरब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मुझे जवामिउल कलिम से नवाज़ा गया है। (सही बुखारी) जिसका हासिल यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम छोटे से जुमले (शब्दों) में बड़े अर्थ को बयान करने की कुदरत रखते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अनगिनत विशेषताओं में से एक मुख्य विशेषता यह भी है कि जिस समय आप पर पहली वही नाज़िल हुई और आपसे पढ़ने के लिए कहा गया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने “मैं पढ़ने वाला नहीं” कह कर माज़रत चाही, लेकिन अल्लाह तआला की जानिब से ऐसी खास तरबियत हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शब्दों और कार्यों को रहती दुनिया तक नमूना बना दिया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कीमती बातों से फायदा उठाने वाले हज़रात बड़े बड़े अदीब बन कर दुनिया में चमके। आपकी ज़बाने मुबारक से निकले कुछ जुमले रहती दुनिया तक अरबी भाषा के मुहावरे बन गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहत, खुतबे, तक्रीर, दुआ और पत्र से अरबी भाषा को शब्दों के नए ज़खीरे के साथ अलग पैटर्न भी मिला।

यह एक मोजज़ा (चमत्कार) ही तो है कि “मैं पढ़ने वाला नहीं” कहने वाला व्यक्ति कुछ ही समय बाद एक मौक़ा पर इरशाद फरमाता है “मैं अरब में सबसे ज़्यादा फसीह हूँ, इसकी वजह यह है कि मैं कबीला कुरैश से हूँ और मेरी रिज़ाअत (स्तनपान) कबीला बनी साद

में हुई।” (आफाएक़ फी गरीबिल हदीस लिज्जमखशरी) यह दोनों कबीले उस समय अपनी ज़बान और अदब में खुसूसी मक़ाम रखते थे। इसी तरह हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मरतबा हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया “मैं अरब की सर जमीन में बहुत घूम चुका हूँ, बड़े बड़े अदीबों के कलाम को सुना हूँ, लेकिन आपसे ज़्यादा फसीह और अदीब किसी व्यक्ति को नहीं पाया। आपको किसने अदब सिखाया?” हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब में इरशाद फरमाया कि “मुझे मेरे रब ने अदब सिखाया और अच्छे अदब से नवाजा।”

ऊपर ज़िक्र हुई हदीस की सनद पर उलमा ने कुछ कलाम किया है, मगर इसमें ज़िक्र हुए अर्थ और मफहूम को सबने तसलीम किया है। गरज़ ये कि अल्लाह तआला की जानिब से फसाहत और बलागत का ऐसा मेयार (गुणवत्ता) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता किया गया जिसकी नज़ीर क़यामत तक मिलना मुमकिन नहीं है और आपके कीमती फरमान (अच्छी बातें) इंसानियत के लिए मशअले राह हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ुतबे खास कर हज्जतुल विदा के मौक़े पर दिया गया आपका अंतिम महत्वपूर्ण ख़ुतबा न सिर्फ़ जवामिउल कलिम (अच्छी कीमती बातें) में से है बल्कि हुकूके इंसानी (मानव अधिकार) का बुनियादी मन्शूर (घोषणा पत्र) भी है। इस ख़ुतबा-ए-मुबारका में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आज से चैदह सौ साल पहले संक्षिप्त शब्दों में इंसानियत के लिए ऐसे उसूल पेश किए जिनपर अमल करके आज पूरी दुनिया में अमन और अमान कायम किया जा सकता है।

जहां हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अच्छी और कीमती बातें को विशेष अहमियत हासिल है, वहीं शरीअते इस्लामिया में इन अच्छी बातें को याद करके महफूज़ करने की भी खास फज़ीलत आई हैं इसलिए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया “जो व्यक्ति मेरी उम्मत के फायदा के वास्ते दीन के काम की चालीस हदीसों याद करेगा अल्लाह तआला उसको क़यामत के दिन आलिमों और शहीदों की जमाअत (समूह) में उठाएगा और फरमाएगा कि जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाखिल हो जाए।” यह हदीस हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद, हज़रत मआज़ बिन जबल, हज़रत अबू दरदा, हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत जाबिर और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हुम से रिवायत है, और हदीस की विभिन्न किताबों में लिखी है। कुछ उलमा ने हदीस की सनद में कुछ कलाम किया, मगर हदीस में मज़कूरा सवाब के हुसूल के लिए सैकड़ों उलमा ने अपने अपने अंदाज़ पर चालीस हदीसों जमा की हैं। सही मुस्लिम की सबसे मशहूर शरह लिखने वाले इमाम नववी की चालीस हदीसों की किताब “अलअरबईन नवविया” पूरी दुनिया में बहुत मकबूल हुई है।

सही बुखारी और सही मुस्लिम में ज़िक्र हुए हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चालीस फरमान पेशे खिदमत हैं जिनमें इल्म के खज़ाने भर दिए गए हैं और यह आला अखलाक और तहज़ीब और तमद्दुन के कीमती उसूल हैं। लिहाजा हमें चाहिए कि इन हदीसों को याद करके इन पर अमल करें और दूसरों को पहुंचाएं ताकि गैर मुस्लिम हज़रात भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सही

तालीमात से परिचित हों और इस्लाम से संबंधित अपने शक और शुबहात (संदेह) दूर कर सकें।

1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सभी आमाल का दारोमदार नियत पर है। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

2) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कबीरा (बड़ा) गुनाह अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना है, माता पिता की नाफरमानी करना, किसी बेगुनाह को क़त्ल (हत्या) करना और झूटी गवाही देना है। (सही बुखारी)

3) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सात हलाक करने वाले गुनाह से बचो। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! वह सात बड़े गुनाह कौन से हैं (जो इंसान को हलाक करने वाले हैं)? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया शिर्क करना, जादू करना, किसी व्यक्ति को नाहक क़त्ल करना, सूद खाना, यतीम के माल को हड़पना, मैदाने जंग से भागना और पाक दामन औरतों पर तोहमत (झूठा दोष) लगाना। (बुखारी और मुस्लिम)

4) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुनाफिक़ की तीन अलामतें (निशानी) हैं, झूट बोलना, वादा खिलाफी करना और अमानत में खयानत करना। (बुखारी और मुस्लिम)

5) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुममें सबसे बेहतर व्यक्ति वह है जो क़ुरान सीखे और खिखाए। (सही बुखारी)

- 6) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह के नज़दीक सब अमलों में वह अमल ज़्यादा महबूब है जो हमेशा हो चाहे थोड़ा हो। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)
- 7) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मैं आखिरी नबी हूँ, मेरे बाद कोई नबी पैदा नहीं होगा। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)
- 8) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया पवित्र रहना आधा ईमान है। (सही मुस्लिम)
- 9) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह की सबसे महबूब जगह मस्जिदें हैं। (सही मुस्लिम)
- 10) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर एक मरतबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उसपर 10 बार रहमतेँ नाज़िल फरमाएगा। (सही मुस्लिम)
- 11) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मोमिन एक बिल से दोबारा डसा नहीं जाता है। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)
- 12) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया पहलवान व्यक्ति वह नहीं जो लोगों को पछाड़ दे बल्कि पहलवान व्यक्ति वह है जो गुस्सा के समय अपने नफ्स पर काबू रखे। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)
- 13) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मुसलमान के मुसलमान पर पांच हक़ हैं। सलाम का जवाब देना, मरीज़ को देखने जाना, जनाज़ा के साथ जाना, उसकी दावत क़बूल

करना और छींक का जवाब यरहमुकुमुल्लाह कह कर देना। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

14) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह उस व्यक्ति पर रहम (दया) नहीं करता जो लोगों पर रहम नहीं करता। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

15) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जुल्म (अत्याचार) कयामत के दिन अंधेरी की सूरत (आकार) में होगा। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

16) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया चुगलखोर जन्नत में नहीं जाएगा। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

17) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया दुनिया में ऐसे रहो जैसे कोई मुसाफिर या राहगुजर (रास्ता गुजरने वाला) रहता है। (सही बुखारी)

18) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रिशता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जाएगा। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

19) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर कोई व्यक्ति (रोज़ा रख कर भी) झूट बोलना और उस पर अमल करना नहीं छोड़ता तो अल्लाह तआला को उसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वह अपना खाना पीना छोड़ दे। (सही बुखारी)

20) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया इंसान के झूटा होने के लिए इतना ही काफी है कि जो बात सुने (बेगैर तहकीक के) लोगों से बयान करना शुरू कर दे। (सही मुस्लिम)

21) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया वह व्यक्ति जन्नत में नहीं जाएगा जिसका पड़ोसी उसकी तकलीफों से महफूज़ न हो। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

22) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम में से वह व्यक्ति मेरे नज़दीक ज़्यादा महबूब है जो अच्छे अखलाक़ वाला हो। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

23) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया सदका देने से माल में कमी नहीं आती और जो बन्दा दरगुज़र (माफ़) करता है अल्लाह तआला उसकी इज़्ज़त बढ़ाता है और जो बन्दा अल्लाह के लिए आजिज़ी इख्तियार करता है (विनम्रता अपनाता है) उसका मान ऊंचा करता है। (सही मुस्लिम)

24) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अगर कोई व्यक्ति अपने घर वालों पर खर्च करता है तो वह भी सदका है, यानी उसपर भी बदला मिलेगा। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

25) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ नौजवान की जमाअत! तुम में से जो भी निकाह की ताकत रखता हो उसे निकाह कर लेना चाहिए, क्योंकि यह नज़र को नीची रखने वाला और शरमगाहों की हिफाज़त करने वाला है और जो कोई निकाह की इस्तिताअत न रखता हो उसे चाहिए कि रोज़े रखे, क्योंकि यह उसके लिए नफ़सानी इच्छा में कमी का कारण होगा। (सही बुखारी)

26) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया औरत से निकाह (आम तौर पर) चार चीज़ों की वजह से किया जाता है। उसके माल की वजह से, उसके खानदान के शर्फ़ की वजह से, उसकी ख़ुबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से। तुम

दीनदार औरत से निकाह करो, अगरचे गर्द आलूद हों तुम्हारे हाथ, यानी शादी के लिए औरत में दीनदारी को जरूर देखना चाहिए, चाहे तुम्हें यह बात अच्छी न लगे। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

27) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हलाल स्पष्ट है, हराम स्पष्ट है। उनके बीच कुछ संदेहास्पद चीजें हैं जिनको बहुत सारे लोग नहीं जानते। जिस व्यक्ति ने संदेह वाली चीजों से अपने आपको बचा लिया उसने अपने दीन और इज्जत की हिफाजत की और जो व्यक्ति संदेहास्पद चीजों में पड़ेगा वह हराम चीजों में पड़ जाएगा उस चरवाहे की तरह जो दूसरे की चरागाह के करीब बकरियां चराता है, क्योंकि बहुत मुमकिन है कि उसका जानवर दूसरे की चरागाह से कुछ चरले। अच्छी तरह सुन लो कि हर बादशाह की एक चरागाह होती है, याद रखो कि अल्लाह की ज़मीन में अल्लाह की चरागाह उसकी हराम करदा चीजें हैं और सुन लो कि जिस्म के अंदर एक गोशत का टुकड़ा है। जब वह संवर जाता है तो सारा जिस्म संवर जाता है और जब वह बिगड़ जाता है तो पूरा जिस्म बिगड़ जाता है, सुन लो कि यह (गोशत का टुकड़ा) दिल है।

(सही बुखारी)

28) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह की कसम! मुझे तुम्हारे लिए गरीबी का खौफ नहीं है बल्कि मुझे खौफ है कि पहली क़ौमों की तरह कहीं तुम्हारे लिए दुनिया यानी माल और दौलत खोल दी जाए और तुम उसके पीछे पड़ जाओ, फिर वह माल और दौलत पहले लोगों की तरह तुम्हें बर्बाद कर दे।

(सही बुखारी और सही मुस्लिम)

29) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला बन्दा की मदद करता रहता है जबतक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहे। (सही मुस्लिम)

30) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जब अमानतों में खयानत होने लगे तो बस कयामत का इंतज़ार करो। (सही बुखारी)

31) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हराम खाने पीने और हराम पहनने वालों की दुआएँ कहां से कुबूल हों। (सही मुस्लिम)

32) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मिसकीन और बेवा औरत की मदद करने वाला अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले की तरह है। (सही बुखारी और सही मुस्लिम)

33) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम्हें अपने कमज़ोरों की वजह से रोज़ी दी जाती है और तुम्हारी मदद की जाती है। (सही बुखारी)

34) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह तआला ऐसे व्यक्ति पर रहम करे जो बेचते समय, खरीदते समय और तकाज़ा करते समय (कर्ज़ वगैरह का) दरियादिली और वुसअत से काम लेता है। (सही बुखारी)

35) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया खाओ, पीयो, पहनो और सदका करो, लेकिन फुज़ूलखर्ची और तकब्बुर के बेगैर (यानी फुज़ूलखर्ची और तकब्बुर (अहंकार) के बेगैर खूब अच्छा खाओ, पीयो, पहनो और सदका करो)। (सही बुखारी)

36) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया रश्क दो ही आदमियों पर हो सकता है, एक वह जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसे माल को राहे हक में लुटाने की पूरी तौफीक मिली हुई है और दूसरा वह जिसे अल्लाह ने हिकमत दी है और वह उसके ज़रिया फैसला करता है और उसकी तालीम देता है। (सही बुखारी)

37) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मोमिन की मिसाल उनकी दोस्ती और इत्तिहाद और शफक़त में बदन की तरह है। बदन में से जब किसी हिस्सों को तकलिफ होती है तो सारा बदन नींद न आने और बुखार आने में शरीक होता है। (सही मुस्लिम)

38) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया आपस में बुग़ज़ (द्वेष) न रखो, हसद न करो, पीछे बुराई न करो, बल्कि अल्लाह के बन्दे और आपस में भाई बन कर रहो और किसी मुसलमान के लिये जाएज़ नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज़्यादा नाराज़ रहे। (सही बुखारी)

39) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया (सच्चा) मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान (की तकलीफ) से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें। मुहाजिर वह है जो उन कामों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने मना किया है। (सही बुखारी)

40) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया हर चीज़ में भलाई ज़रूरी है, लिहाज़ा जब तुम (किसी को सज़ा के तौर पर) क़त्ल करो तो अच्छी तरह क़त्ल करो और (जानवर को) ज़बह करो तो अच्छी तरह ज़बह करो और तुम में से हर एक को अपनी

छुरी तेज़ कर लेनी चाहिए और अपने जानवर को आराम देना चाहिए। (सही मुस्लिम)

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मज़कूरा बाला इरशादात की रौशनी में हम इंशाअल्लाह बड़े बड़े गुनाह खास कर शिर्क, माता पिता की नाफरमानी, किसी का क़त्ल, चुगलखोरी, जादू, सूद, जुल्म, ज़्यादती, वादा खिलाफी, अमानत में खयानत, रिश्तेदारी को तोड़ना, पड़ोसियों को तकलीफ पहुंचाना, हराम और संदेहास्पद चीजों का इस्तेमाल, फुज़ूलखर्ची, तकब्बुर, हसद और द्वेष जैसी हलाक करने वाली बुराइयों से अपने आपको महफूज़ रखेंगे जो हमारे मुआशरे में नासूर बन गई हैं और अपने नबी की तालीमात के अनुसार सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए नेक काम करेंगे और अपने अखलाक को बेहतर बना कर इस्तिक्ामत (स्थिरता) के साथ दुनियावी ज़िन्दगी में ही हमेशा हमेशा की उखरवी ज़िन्दगी की तैयारी करने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे। अल्लाह तआला हमें हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवामिउल कलिम (अच्छी कीमती बातें) को समझ कर पढ़ने वाला, उनके अनुसार अमल करने वाला और उनके कीमती पैगामात को दूसरों तक पहुंचाने वाला बनाए, आमीन।

आमाल का दारोमदार (निर्भरता) नियत पर है

हज़रत उमर फारूक रज़ि. फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाते सुना: आमाल का दारो मदार नियत पर है और हर व्यक्ति को वही मिलेगा जिसकी उसने नियत की है। जिसकी हिजरत दुनिया कमाने की या किसी औरत से निकाह की खातिर हो, उसकी हिजरत (नियत के मुताबिक) उसी के लिए होगी जिसके लिए हिजरत की है। (सही बुखारी)

इस हदीस के रावी सहाबी रसूल हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि. हैं जो फारूक के लक़ब से पहचाने जाते हैं। 6 नबुव्वत में 33 साल की उम्र में इस्लाम लाए। आप से पहले 39 मर्द इस्लाम कुबूल कर चुके थे। आपके इस्लाम लाने से मुसलमानों को बहुत शक्ति मिली। सारी जंगों में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहे। कुरआन करीम अगरचे हज़रत अबू बकर सिद्दीक के अहदे खिलाफत (काल) में जमा किया गया मगर ये प्रस्ताव हज़रत उमर फ़ारूक ही का था। मदीना मुनव्वरा की तरफ हिजरत छुप कर नहीं की बल्कि खुल्लम खुल्ला तौर पर की। हज़रत अबू बकर सिद्दीक ने अपने अहदे खिलाफत (काल) में सहाबाए किराम के मशवरे से हज़रत उमर फारूक को मुसलमानों का खलीफा बनाया। बाद में आपको अमीरुल मोमिनीन के खिताब से नवाज़ा गया। आपके अहदे खिलाफत में मुल्क ईराक़, फारस, शाम और मिस्र फतह हुए। इस्लामी कलेंडर का उद्घाटन हुआ। कूफ़ा और बसरा शहर आबाद किए गए। माहे रमज़ान में नमाज़े तरावीह का जमाअत के साथ एहतमाम शुरू हुआ। ज़कात की आमदनी के इन्दराज (प्रविष्टि) की गरज़ से बैतुल माल कायम

किया गया। 26 ज़िलहिज्जा 23 हिजरी की सुबह आप मस्जिदे नब्वी में नमाज़े फ़ज़ की इमामत कर रहे थे कि फ़िरोज़ नामी मजूसी गुलाम ने ख़न्जर से ज़ख़मी किया, चार दिनों के बाद 1 मुहर्रमुलहराम 24 हिजरी को इंतक़ाल फ़रमा गए। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि. के पास में दफ़न हुए। हज़रत उमर फ़ारूक़ की ख़िलाफ़त दस साल, छः माह और चार दिन रही।

हमने ऑनलाइन दर्से हदीस के लिए अल्लामा यहया बिन शर्फ़ नववी शाफ़ई की मशहूर किताब **“रियाज़ुस्सालिहीन”** का चयन किया है। अल्लामा नववी का ताल्लुक़ दमिशक़ के करीब वाके नवी बस्ती से है। अल्लामा नववी ने कुरआन और हदीस की ऐसी बड़ी ख़िदमात अंजाम दी हैं जिससे रहती दुनिया तक लोग फायदा उठाते रहेंगे इंशाअल्लाह। अल्लामा नववी ने अपनी सिर्फ़ 45 साला ज़िन्दगी में इतनी किताबें लिखीं हैं कि अल्लाह के फ़ज़ल और करम और उसकी तौफीक़ के बग़ैर मुमकिन ही नहीं था। इनमें से एक सही मुस्लिम की मशहूर शरह है जो 18 जिल्दों पर मुश्तमिल है। रियाज़ुस्सालिहीन में विभिन्न विषयों पर आधारित 1327 अबवाब (खंड) के तहत तक़रीबन 1400 हदीसों ज़िक़्र की गई हैं। अल्लामा नववी ने रियाज़ुस्सालिहीन के पहले बाब **“बाबुल इख़लासि व इहज़ारिन्नियति फ़ी जमीइल आमाल”** के तहत सबसे पहले वह हदीस ज़िक़्र की है जो सही बुख़ारी में सबसे पहले मज़कूर है। मौज़ू (विषय) की अहमियत के पेशे नज़र इमाम बुख़ारी ने ये हदीस मज़ीद छः स्थानों पर अपनी किताब में ज़िक़्र फ़रमाई है। हम भी अपने दर्से हदीस का आगाज़ इसी हदीस से कर रहे हैं।

जिस तरह बहुत सी आयात का शाने नुज़ूल होता है, इसी तरह कुछ औकात हदीसों का भी शाने वुरूद (सबब) होता है, यानी जिस वाक्ये पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये हदीस इरशाद फ़रमाई। मशहूर आलिमे दीन अल्लामा ऐनी लिखते हैं कि एक व्यक्ति ने एक औरत उम्मे कैस के पास निकाह का प्रस्ताव भेजा तो उम्मे कैस ने ये शर्त रखी कि अगर तुम हिजरत कर लो तो तुमसे निकाह कर लूँगी। इसलिए उन्होंने निकाह की खातिर हिजरत की। उनको मुहाजिर उम्मे कैस से मौसूम किया जाता है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इत्तेला मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने खुतबे के दौरान मज़कूरा बाला हदीस बयान फ़रमाई।

इस हदीस के तीन हिस्से हैं:

पहला हिस्सा इन्नमल आमालु बिन्नियात: “इन्नमा” अरबी जुबान में हस्र के लिए आता है। “आमाल” अमल की जमा है। “निय्यात” नियत की जमा है। नियत के माना दिल के इरादे के हैं। शरीअते इस्लामिया में अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए इबादत के इरादे को नियत कहते हैं। गरज़ इस जुमले के मायने ये हैं: आमाल का दारोमदार नियत पर है, यानी किसी भी व्यक्ति की जानिब से किए गए नेक आमाल पर बदला सिर्फ़ उसी सूरत में मिलेगा जबकि नियत सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा का हुसूल हो। जिस तरह जिस्म में रूह की हैसियत है उसी तरह आमाल में नियत का दर्जा है। नेक आमाल की उसी सूरत में कीमत और क़द्र है जबकि इनसे अल्लाह की रज़ामंदी मतलूब हो, वरना रूह के बग़ैर जिस्म की तरह नेक अमल की भी कोई हैसियत नहीं है जैसा कि कुरआन और हदीस की

रौशनी में उल्माए किराम ने लिखा है कि नेक अमल करने से पहले अपनी नियतों को खालिस अल्लाह के लिए करें। नेक अमल की अदाएंगी के दौरान भी अपनी नियतों का जाएज़ा लेते रहें और नेक अमल से फ़रागत के बाद भी अपने दिलों को टटोलते रहें कि अल्लाह की रज़ामंदी को हासिल करने के अलावा कोई दूसरा मक़सद तो नहीं है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “और इन्हें इसके सिवा कोई और हुक्म नहीं दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत इस तरह करें कि बंदगी को बिल्कुल एक तरफ़ होकर सिर्फ़ इसी के लिए खालिस रखें।” (सूरह अल बय्यिनह: 5) इसी तरह फ़रमाने इलाही है: “अल्लाह को न इन (जानवरों) का गोश्त पहुँचता है और न इनका खून, लेकिन उसके पास तुम्हारा तक़्वा पहुँचता है।” (सूरह अल हज्ज: 37) गरज़ कि अल्लाह तआला हमारे दिलों की कैफ़ियात को देखता है, लिहाज़ा हमें हर नेक अमल सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए करना चाहिए।

दूसरा हिस्सा वइन्नमा लिक्लिमरिइम मानवा: ये जुमला दरअसल पहले जुमले की मज़ीद ताकीद और वज़ाहत के लिए है, यानी नियत में जितना इखलास होगा उतना ही अज़्र और सवाब मिलेगा। मसलन एक व्यक्ति मस्जिद में सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने आता है जबकि दूसरा व्यक्ति नफ़ली एतकाफ़ की भी नियत कर लेता है तो पहले को एक अमल और दूसरे को दो अमल का सवाब मिलेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “मेरी इस मस्जिद (मस्जिदे नबवी) में नमाज़ का सवाब दूसरी मस्जिदों के मुकाबले में हजार गुना ज़्यादा है सिवाए मस्जिदे हराम के।” (सही मुस्लिम) इब्ने माज़ा की रिवायत में पचास हजार नमाज़ों के सवाब का ज़िक्र है।

जिस खुलूस के साथ वहाँ नमाज़ पढ़ी जाएगी उसी के अनुसार अज़्र और सवाब मिलेगा इंशाअल्लाह। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: आदमी नमाज़ से फ़ारिग होता है और उसके लिए सवाब का दसवाँ हिस्सा लिखा जाता है, इसी तरह कुछ के लिए नवाँ हिस्सा, कुछ के लिए आठवाँ, कुछ के लिए सातवाँ, छटा, पाँचवाँ, चौथाई, तिहाई, आधा हिस्सा लिखा जाता है। (अब् दाऊद, नसई, सही इब्ने हिब्बान) जिस क़दर खुलूस और खुशू और खुजू (अल्लाह के धियान के साथ) के साथ नमाज़ की अदाएंगी होगी उतना ही अज़्र और सवाब ज़्यादा मिलेगा।

तीसरा हिस्सा फ़मन कानत हिजरतुहु.....: तीसरा जुमला दरअसल दूसरे जुमले की तफ़सील है। “जिसकी हिजरत दुनिया के कमाने या किसी औरत से निकाह की खातिर हो, उसकी हिजरत (नियत के मुताबिक़) उसी के लिए होगी जिसके लिए हिजरत की है।” इसको मिसाल से इस तरह समझें जैसे बीज, पेड़ और फल है। नियत बीज की तरह है, इस बीज से पेड़ का पैदा होना अमल है और इस पर मालिक की मेहनत से लगभग सात सौ दाने लग गए। अगर बीज बोने के बाद पानी ना दिया जाए और उसकी देख भाल ना की जाए तो एक दाना भी न आता। इसके फल की मिठास और कड़वाहट आदि बीज की हैसियत पर है, इसी तरह नियत सही नहीं तो फल भी कड़वा होगा और इंशाअल्लाह अच्छी नियत पर अच्छा फल मिलेगा।

हिजरत के मायने हैं दारुल कुक्र से दारुल इस्लाम की तरफ हिजरत करना जैसा कि मक्का मुक़र्रमा से मदीना मुनव्वरा के लिए हिजरत की गई। फतहे मक्का तक मक्का मुक़र्रमा से मदीना मुनव्वरा

हिजरत करना वाजिब था, क्योंकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को हुक्म दिया था कि मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा हिजरत कर जाएँ। लेकिन 20 रमज़ान 8 हिजरी को फतहे मक्का के बाद मक्का मुकर्रमा दारुल इस्लाम बन गया तो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि फतहे मक्का के बाद हिजरत नहीं है। हिजरत के एक दूसरे मायने भी हैं जैसा कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “मुहाजिर वह है जो इन कामों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने मना किया है।” (सही बुखारी, सही मुस्लिम) गरज़ कि जिन आमाal, अक़वाल और अखलाक़ से कुरआन और हदीस में हमें मना किया गया है, जिन चीज़ों के खाने और पीने से हमें रोका गया है और जिन चीज़ों को देखने सुनने और बोलने से हमें दूर रहने की तालीम दी गई है उन मामलों से बचना भी हिजरत के बराबर है।

औउ इला इमरअतिन यनकहुहा: दुनिया के ज़िक्र के बाद औरत का खुसूसी तौर पर ज़िक्र किया गया, क्योंकि औरत जहाँ बाइसे रहमत है, बेशुमार खूबियों की हामिल है, वहीं इस उम्मत के लिए एक फितना भी है जैसा कि सूरह आले इमरान में अल्लाह तआला ने ज़िक्र किया है। तथा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “मैंने अपने बाद मर्दों के लिए औरतों से बढ़ कर नुक़सानदेह और कोई फितना नहीं छोड़ा।” (सही बुखारी) तथा जैसा कि ज़िक्र किया गया है कि मुहाजिर उम्मे कैस के वाक़ये के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने ख़ुतबे के दौरान ये हदीस बयान फ़रमाई थी, लिहाज़ा औरत का विशेष रूप से ज़िक्र किया गया।

क्या नेक अमल के लिए ज़बान से नियत करना ज़रूरी है? कुरआन और हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफाक है कि नियत असल में दिल के इरादे का नाम है और ज़बान से नियत करना ज़रूरी नहीं है, लेकिन अगर कोई व्यक्ति ज़बान से भी नियत करता है तो बेहतर है ताकि ज़बान अमल के अनुकूल बन जाए। मसलन एक व्यक्ति ने मगरिब की अज़ान के समय वुजू किया और जमात से नमाज़ की आदयगी के लिए मस्जिद की तरफ रूख किया तो नियत जो असल में दिल के इरादे का नाम है वह मुकम्मल हो गया, लेकिन नमाज़ शुरू करते समय ज़बान से भी ये कह ले कि मैं मगरिब की तीन रकअत नमाज़ अदा कर रहा हूँ तो बेहतर है। रोज़ा रखने के समय भी ज़बान से नियत कर लें तो बेहतर है। हज का एहराम बांधते समय ये नियत करनी होगी कि हज की कौन सी किस्म का चयन किया है और हज तमत्तो का इरादा करने पर पहले सिर्फ़ उमरे का एहराम बांधना होगा, लिहाज़ा सिर्फ़ उमरे की आदयगी की नियत करें। **सही मुस्लिम (हदीस नम्बर 1154)** में है कि एक बार हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत आइशा रज़ीअल्लाहु अन्हा से पूछा कि घर में कुछ खाने के लिए है? हज़रत आइशा रज़ीअल्लाहु अन्हा ने कहा नहीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तो मैं रोज़ा रखने वाला हूँ। हदीस की दूसरी किताबों में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तो मैं रोज़ा रखने वाला हूँ। गरज़ कि नियत असल में दिल के इरादे का नाम है, लेकिन ज़बान से इसका इज़हार करना बिदअत नहीं है बल्कि कुछ मौकों पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबाए किराम से ज़बान से नियत करने का सुबूत मिलता है।

रिया और शोहरत आमाल की बरबादी का सबब हैं: हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे, इतने में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि मैं तुम्हें दज्जाल के फितने से ज़्यादा ख़तरनाक बात से आगाह न करूँ? हमने अर्ज़ किया ज़रूर या रसूलुल्लाह! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: शिर्क ख़फी दज्जाल से भी ज़्यादा ख़तरनाक है और वह ये है कि एक आदमी नमाज़ के लिए खड़ा हो और नमाज़ को इसलिए लम्बा करे कि कोई आदमी उसे देख रहा है। (इब्ने माजा) इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “जिसने दिखावे की नमाज़ पढ़ी उसने शिर्क किया।” (मुसनद अहमद) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बहुत से रोज़ा रखने वाले ऐसे हैं कि उनको रोज़े रखने से सिर्फ़ भूखा रहने के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता और बहुत से रात जागने वाले ऐसे हैं कि उनको रात के जागने (की कठिनाई) के सिवा कुछ भी नहीं मिलता। (इब्ने माजा, नसई)

इस हदीस के चंद फ़ायदे: इस हदीस की बहुत अहमियत (महत्त्व) है यहाँ तक कि इमाम अहमद बिन हंबल ने कहा है: इस्लाम के उसूल तीन हदीसों पर मबनी हैं: हज़रत उमर फारूक रज़ि० से मरवी यह हदीस (आमाल का दारोमदार नियत पर है), हज़रत आएशा रज़ि० से मरवी हदीस (जिसने हमारे दीन में ऐसी चीज़ शुरू की जो शरीअत में नहीं है, तो वह स्वीकार नहीं है) और हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० की हदीस (हलाल स्पष्ट है और हराम स्पष्ट है। इनके बीच कुछ मुश्तबह (संदेहास्पद) चीज़ें हैं जिनको बहुत सारे लोग नहीं जानते। जिस व्यक्ति ने शुबह वाली चीज़ों से अपने आपको बचा

लिया उसने अपने दीन और इज़्ज़त की हिफाज़त की और जो व्यक्ति मुश्तबह (संदेहास्पद) चीज़ों में पड़ जाएगा वह उस चरवाहे की तरह जो दूसरे की चरागाह के करीब बकरियाँ चराता है क्योंकि बहुत मुमकिन है कि उसका जानवर दूसरे की चरागाह से कुछ चर ले। अच्छी तरह सुन लो कि ये एक बादशाह की एक चरागाह होती है, याद रखो कि अल्लाह की ज़मीन में अल्लाह की चरागाह इसकी हाराम की हुई चीज़ें हैं, और सुन लो कि जिस्म के अन्दर गोश्त का एक टुकड़ा है जब वह संवर जाता है तो सारा जिस्म संवर जाता है और जब वह बिगड़ जाता है तो पूरा जिस्म बिगड़ जाता है, सुन लो कि ये (गोश्त का टुकड़ा) दिल है।

इस हदीस के कुछ फ़ायदे:

- (1) नियत असल में दिल के इरादे का नाम है। ज़बान से नियत करना शर्त नहीं, लेकिन कर लें तो बेहतर है ताकि ज़बान अमल के मुवाफ़िक़ हो जाए।
- (2) आमाल के सही और ख़राब और मुकम्मल और अधूरा होने का दारोमदार नियत पर है।
- (3) जैसी नियत होगी वैसा ही सवाब मिलेगा, यानी नियत में जितना ख़ुलूस होगा उतना ही बन्दा सवाब का मुस्तहिक़ होगा।
- (4) इबादत और आदत में नियत के ज़रिए फर्क़ होता है।
- (5) नियत में ख़ुलूस की वजह से इंसान अमल से ज़्यादा अज़्र और सवाब हासिल कर सकता है।
- (6) रिया और शोहरत इंसान के आमाल की बरबादी का कारण हैं।

सबसे ज़्यादा जन्नत में ले जाने वाला अमल

तक़वा (परहेजगारी - अल्लाह का डर) है

तक़वा के माअना:

अपने आपको अपने रब की नाराज़गी से बचाना तक़वा है। तक़वा यानि अल्लाह का डर सभी भलाइयों का मजमूआ (संयोजन) है। अल्लाह तआला ने दुनिया के वुजूद से लेकर क़यामत तक आने वाले सभी इन्सानों और जिनों के लिए तक़वा की वसीयत फ़रमायी है। तक़वा ही क़यामत के दिन निजात दिलाने वाली क़शती है। तक़वा मोमिनीन के लिए अच्छा लिबास और अच्छा ज़ादेराह है। यह वह बड़ी नेमत है जिससे दिल की बंदिशें खुल जाती हैं, जो रास्ते को रोशन करती हैं और इसी की बदौलत गुमराह भी हिदायत पा जाता है। तक़वा एक ऐसा कीमती मोती है कि उसके ज़रिए बुराइयों से बचना और नेकियों को इख़्तियार करना आसान हो जाता है। तक़वा से बारे में दामादे रसूल हज़रत अली रज़िअल्लाहुअन्हु की एक बात किताबों में ज़िक्र है कि तक़वा दरअसल अल्लाह तआला से डरने, शरीअत पर अमल करने, जो मिल जाये उस पर क़नाअत (संतुष्टी) करने और क़यामत के दिन की तैयारी करने का नाम है।

तक़वा की एक तारीफ़ जो सहाबी-ए-रसूल हज़रत उबई बिन कअब रज़िअल्लाहुअन्हु ने हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहुअन्हु के पूछने पर बयान फ़रमायी थी। इस तरह है: हज़रत उबई बिन कअब रज़िअल्लाहुअन्हु ने उनसे पूछा: क्या आप कभी कांटों वाले रास्ते पर नहीं चले? हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया क्यों नहीं? हज़रत उबई बिन कअब रज़िअल्लाहु अन्हु ने उनसे पूछा उस समय तुम्हारा अमल क्या होता है? हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा

कि मैं अपने कपड़े समेट लेता हूँ और कोशिश करता हूँ कि मेरा दामन कांटों में ना उलझ जाये। हज़रत उबई बिन कअब रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा कि बस यही तक़्वा है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

तक़्वा का अस्ल केंद्र दिल है, लेकिन इसका इज़हार विभिन्न आमाल के ज़रिए होता है, जैसा कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिल की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया: तक़्वा यहां है।

(मुस्लिम)

ग़र्ज़ कि तक़्वा असल में अल्लाह तआला से डर और मोहब्बत के साथ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े के अनुसार वर्जित चीज़ों से बचने और आदेशों पर अमल करने का नाम है।

तक़्वा की अहमियत:

अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम की सैंकड़ों आयात में विभिन्न अन्दाज़ से तक़्वा यानि अल्लाह से डरने का हुक्म और उसकी अहमियत और ताकीद को ज़िक्र किया है। तक़्वा से मुतअल्लिक़ सभी आयात का ज़िक्र करना इस समय मेरे लिए संभव नहीं है, लेकिन चंद आयात का अनुवाद पेश कर रहा हूँ:

ऐ ईमान वालों! दिल में अल्लाह का वैसा ही डर रखो जैसा डर रखना उसका हक़ है। (सूरह आले इमरान 102) ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी सच्ची बात कहा करो। (सूरह अलअहज़ाब 70) ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहा करो। (सूरह अत्तौबा 119) ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और हर व्यक्ति यह देखे कि उसने कल के लिए क्या आगे भेजा है। और अल्लाह से डरो। (सूरह अलहश्र 18) तक़्वा कोई ऐसा अमल नहीं है जो सिर्फ़ इस उम्मत के लिए खास हो बल्कि दुनिया के वुजूद से लेकर

आजतक और क़यामत तक आने वाले हर व्यक्ति पर अनिवार्य है कि वह अल्लाह से डरकर ज़िन्दगी के दिन गुज़ारे। अल्लाह का फ़रमान है: हमने तुम से पहले अहले किताब को भी और तुम्हें भी यही ताकीद की है कि अल्लाह से डरो। (सूरह अन्निसा 131)

दुनिया बनाने वाले ने अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी तक्रवा यानि अल्लाह से डरने का हुक्म दिया है। सूरह अलअहज़ाब आयत नम्बर 1 में इरशादे बारी है: ऐ नबी! अल्लाह से डरते रहो।

ज़िल्लत के नक़शों में इज़्ज़त देने वाले ने क़ुरआन में एलान कर दिया कि उसके दरबार में माल और दौलत और जाह और मनसब (पद) से कोई व्यक्ति अज़ीज नहीं बन सकता, बल्कि उसके यहाँ इज़्ज़त का मेयार सिर्फ़ अल्लाह का डर है। जो जितना अल्लाह तआला से डर कर इस ख़तम होने वाली दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारेगा वह उसके दरबार में उतना ही ज़्यादा इज़्ज़त पाने वाला होगा। फ़रमाने इलाही है: वास्तव में अल्लाह के नज़दीक तुम में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह व्यक्ति है जो तुम में सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी (अल्लाह से डरने वाला) हो। (सूरह अलहुजरत 13)

इबादती, मामलाती और सामाजिक ज़िन्दगी में चौबीस घंटे हर समय अल्लाह तआला का डर आसान नहीं है जब कि शैतान, नफ़स और समाज हमें मुख़ालिफ़ सिम्त ले जाने पर जोर लगाता है, इसलिए रहमतुललिल आलमीन ने बन्दों पर रहम फ़रमाकर इरशाद फ़रमाया: जहां तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो। (सूरह अत्तगाबुन 16) यानि हर व्यक्ति अपनी इस्तिताअत के मुताबिक अल्लाह से डरते हुए ज़िन्दगी के क्षण गुज़ारता रहे। अगर किसी व्यक्ति से कोई

गलती हो जाये तो फ़ौरन दिल से माफ़ी मांगे, इंशाअल्लाह अल्लाह उसको अल्लाह तआला माफ़ फ़रमायेगा। लेकिन इसका मतलब हरगिज़ यह नहीं है कि हम तक्रवा में भी डंडी मारना शुरू कर दें जैसा कि फ़रमाने इलाही है: ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है। (सूरह आले इमरान 102)

हज के सफ़र के दौरान और आम ज़िन्दगी में भी एक मुसलमान दुनियावी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न चीज़ें हासिल करना चाहता है। अल्लाह का फ़रमान है: और (हज के सफ़र में) ज़ादे राह साथ ले जाया करो, क्योंकि अच्छा ज़ादे राह तक्रवा है। (सूरह अलबक्रा 197) यानि दुनियावी असबाब को इख्तियार करना शरीअते इस्लामिया के खिलाफ़ नहीं है, लेकिन सबसे बेहतर ज़ादे राह तक्रवा यानि अल्लाह का डर है। सूरह अत्तलाक़ आयत 2 और 3 में अल्लाह ने एलान कर दिया कि तक्रवा का रास्ता इख्तियार करने वाला दोनों जहां की कामयाबी हासिल करने वाला है: और जो कोई अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए मुश्किल से निकलने का कोई रास्ता पैदा कर देगा और उसे ऐसी जगह से रिज़क अता करेगा जहां से उसे गुमान भी नहीं होगा। तथा दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया: अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो अल्लाह तआला तुम को एक ख़ास शान अता फ़रमायेगा और तुम्हारे गुनाह तुम से दूर कर देगा और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमायेगा। (सूरह अल अन्फाल 29)

तक्रवा के फ़वाईद:

अल्लाह तआला ने कुरआने करीम में तक्रवा के विभिन्न लाभ और फायदे ज़िक्र फ़रमाये हैं, चंद निम्नलिखित हैं:

हिदायत मिलती है, (सूरह अलबकरा 2)। ऐसा इल्म मिलता है जिसके ज़रिए हक़ और बातिल के बीच फ़र्क़ किया जा सके। (सूरह अल अन्फाल 29)। ग़म दूर हो जाते हैं और ख़ूब रोज़ी मिलती है। (सूरह अत्तलाक़ 2 और 3)। अल्लाह की मदद हासिल होती है। (सूरह अन्नहल 128)। अल्लाह की मुहब्बत मिलती है। (सूरह अत्तौबा 7)। दुनियावी उम्र में आसानी होती है। (सूरह अत्तलाक़ 4)। गुनाहों की माफ़ी होती है और बड़ा अज़्र मिलता है (सूरह अत्तलाक़ 8)। नेक अमल की क़बूलियत होती है। (सूरह अलमायदा 27)। कामयाबी हासिल होती है (सूरह आले इमरान 130)। अल्लाह की जानिब से खुशख़बरी मिलती है। (सूरह युनूस 62-64)। जहन्नम से छुटकारा मिल जाता है, जो बहुत बुरा ठिकाना है। (सूरह मरियम 71 और 72)। हर इन्सान की सबसे बड़ी ख़्वाहिश यानि जन्नत में दाख़िला नसीब होता है। (सूरह नून 34)

तक़वा और इस्लाम के बुनियादी अरकान के बीच सम्बन्ध:

तक़वा और नमाज़: अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में इरशाद फ़रमाया: बेशक नमाज़ बेहयायी और बुराइयों से रोकती है। (सूरह अलअनकबूत 45) बेहयाई और बुराइयों से रुकना ही तक़वा है।

तक़वा और ज़कात: अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: उनके माल से ज़कात लो, ताकि उनको पाक करे और बाबरकत करे उसकी वजह से और दुआ दे उनको। (सूरह अत्तौबा 103)

ज़कात कोई टैक्स नहीं है जो मुसलमान हुकूमत को अदा करता है, इसी तरह ज़कात की अदायगी अमीर का ग़रीब पर कोई अहसान नहीं है, बल्कि जिस तरह मरीज़ को अपने बदन की इस्लाह के लिए

दवा की ज़रूरत होती है, इसी तरह अपने नफ़्स की इस्लाह के लिए हर मुसलमान की ज़रूरत है कि वह अल्लाह के हुक्म पर अपने माल की ज़कात अदा करे। और यह सिर्फ़ अल्लाह के डर की वजह से होता है कि इन्सान माल जैसी पसंदीदा चीज़ को अल्लाह तआला के हुक्म पर कुरबान करने के लिए तैयार हो जाता है और यही ख़ौफ़े खुदा (अल्लाह का डर) यानि तक्वा की बुनियाद है।

तक्वा और रोज़ा: रोज़ा उन आमाल में से है जो तक्वा हासिल करने में मददगार होते हैं। अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में रोज़े की फ़र्ज़ियत की यही हिकमत बताई है कि रोज़े से इन्सान में तक्वा पैदा होता है। फ़रमाने इलाही है: ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जिस तरह तुम से पहली उम्मतों पर फ़र्ज़ किया गया था ताकि तुम मुत्तकी बन जाओ। (सूरह अलबकरा 183) रोज़े से ख्वाहिशात को काबू में रखने की ताक़त पैदा होती है और यही तक्वा यानि अल्लाह के डर की बुनियाद है।

तक्वा और हज: सूरह अलहज की शुरुआत ही अल्लाह तआला ने तक्वे की तालीम से करके क़यामत तक आने वाले सभी इन्सानों और जिनों को बता दिया कि हज की अदायगी के लिए दुनिया के चप्पे चप्पे से बहुत लोगों का जमा होना क़यामत के दिन को याद दिलाता है जहाँ दूध पिलाने वाली माँ अपने उस बच्चे तक को भूल जायेगी जिसको उसने दूध पिलाया। गर्ज़ कि हज की अदायगी में भी यह तालीम है कि हम क़यामत के दिन की तैयारी करें और ज़ाहिर है यह दिल में अल्लाह के डर की वजह से ही मुमकिन है और यही तक्वा है।

हम मुत्तक़ी कैसे बनें?

इसका जवाब बहुत आसान है कि मुत्तक़ियों की जो विशेषता अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में बयान फ़रमायी हैं वह विशेषता अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करें। चौबीस घंटे हर समय हमारे दिल और दिमाग़ में यह रहना चाहिए कि अल्लाह तआला हमें देख रहा है और उसे हमें अपनी ज़िन्दगी के एक एक लम्हें का हिसाब देना है, चाहे हम मस्जिदे हराम में बैतुल्लाह के सामने हों या घर में अपने बच्चों के साथ। बाज़ार में ग्राहकों के साथ हों या चोपाल में लोगों के साथ। दारूल हदीस की मसनद पर बैठकर बुखारी जैसी हदीस की मुसतनद किताब पढ़ा रहे हों या किसी कॉलेज में साइंस की तालीम दे रहे हों। मस्जिद के मेहराब में बैठकर कुरआने करीम की तिलावत कर रहे हों या किसी यूनिवर्सिटी में हिसाब की तालीम हासिल कर रहे हों। यही दुनियावी ज़िन्दगी हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी में कामयाबी हासिल करने का पहला और आखिरी मौक़ा है, किसी भी समय मौत का फरिश्ता हमारी रूह हमारे जिस्म से जुदा कर सकता है। मरने के बाद खून के आंसू के समन्दर बहाने की बजाये अभी अल्लाह तआला के सामने सच्ची तौबा करके गुनाहों से बचें और क़यामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों के नबी के तरीक़े पर अल्लाह के हुक्मों को बजा लायें। अगर हम इस कीमती मोती से आरास्ता हो गये तो सबसे ज़्यादा बुरे ठिकाने से महफूज़ रहकर अल्लाह के मेहमान ख़ाने में हमेशा हमेशा चैन, सुकून और राहत के साथ अल्लाह तआला की ऐसी ऐसी नेमतों से सरफ़राज़ होंगे कि जिनके बारे में हम सोच भी नहीं सकते। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि कौनसी चीज़ सबसे ज़्यादा जन्नत

में ले जाने वाली है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: वह तक़वा (परहेज़गारी) और अच्छे अखलाक़ है। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि कौनसी चीज़ सबसे ज़्यादा जहन्नम में ले जाने वाली है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मुंह और शर्मगाह। (इब्ने माजा) मुंह से मुराद हARAM माल खाना, दूसरों की ग़ीबत करना, झूट बोलना वगैरह वगैरह। शर्मगाह से मुराद ज़िना और उसके लवाज़मात।

ग़र्ज़ कि उम्मून तक़वा तीन उमूर से हासिल होता है:

- 1) अहकामे इलाही पर अमल करना और बुराइयों से बचना।
- 2) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल करना और मकरूह चीज़ों से अपनी हिफ़ाज़त करना।
- 3) शक और शुबह वाली चीज़ों से अपने आपको महफूज़ रखना और कुछ जायज़ कामों को भी छोड़ना जैसा कि फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है: कोई व्यक्ति उस समय तक मुत्तक़ियों में शामिल नहीं हो सकता जब तक वह कुछ जायज़ चीज़ें ना छोड़ दे जिनमें कोई हर्ज नहीं है, उन चीज़ों से बचने के लिए जिनमें हर्ज है। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, हाकिम, बैहकी)

अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा करना)

नबियों का तरीका

अल्लाह तआला पर तवक्कुल यानि भरोसा करना नबियों के तरीके के साथ अल्लाह तआला का हुक्म भी है। कुरआन और हदीस में 'तवक्कुल अललल्लाह' का बार-बार हुक्म दिया गया है। सिर्फ़ कुरआने करीम में सात बार "वअलल्लाहि फल्यतवक्कल्लि मुतवक्किलून" फ़रमाकर मोमिनों को सिर्फ़ अल्लाह पर तवक्कुल करने की ताकीद की गयी है। यानि हुक्मे खुदावन्दी है कि अल्लाह पर ईमान लाने वालों को सिर्फ़ अल्लाह ही की ज़ात पर भरोसा करना चाहिए.....

आईये सबसे पहले तवक्कुल के माअना समझें। तवक्कुल के लफ़्ज़ी माअना किसी मामले में किसी ज़ात पर भरोसा करने के हैं, यानि अपनी आज़जी का इज़हार और दूसरे पर भरोसा करना 'तवक्कुल' कहलाता है। शरई इस्तिथार करना कि दुनियावी और उखरवी (दुनिया के बाद वाली) सभी मामलात में नफ़ा और नुक़सान का मालिक सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात है। उसके हुक्म के बग़ैर कोई पत्ता पेड़ से नहीं गिर सकता। हर छोटी बड़ी चीज़ अपने वुजूद और बाक़ी रहने के लिए अल्लाह की मोहताज है। गर्ज़ कि खालिके कायनात की ज़ात बारी पर मुकम्मल एतमाद करके दुनियावी असबाब इस्तिथार करना तवक्कुल अललल्लाह है। अगर कोई व्यक्ति बीमार हो जाये तो उसे मर्ज़ से शिफ़ायाबी के लिए दवा का इस्तेमाल तो करना है लेकिन इस यक़ीन के साथ कि जब तक अल्लाह तआला

शिफ़ा नहीं देगा दवा असर नहीं कर सकती। यानि दुनियावी असबाब (साधन) को इख़्तियार करना तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि अल्लाह तआला का निज़ाम यही है कि बंदा दुनियावी असबाब इख़्तियार करके काम को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा करे, यानि यह यक़ीन रखे कि जब तक हुक्मे खुदावंदी नहीं होगा असबाब इख़्तियार करने के बावजूद शिफ़ा नहीं मिल सकती।

हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा: क्या ऊंटनी को बांध कर तवक्कुल करूं या बग़ैर बांधे? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: बांधों और अल्लाह पर भरोसा करो। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि अहले यमन बग़ैर सामान के हज करने के लिए आते और कहते कि हम अल्लाह पर तवक्कुल करते हैं। लेकिन जब मक्का मुकर्रमा पहुंचते तो लोगों से सवाल करना शुरू कर देते। इसलिए अल्लाह तआला ने कुरआन की आयत (सूरह अलबकरा 197) नाज़िल फ़रमायी: हज के सफ़र में ज़ादे राह साथ ले जाया करो। (सही बुख़ारी)

जो भी असबाब उपलब्ध हों उन्हें इस यक़ीन के साथ इख़्तियार करना चाहिए कि करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह तआला की है। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने जब अपनी लम्बी बीमारी के बाद अल्लाह तआला से शिफ़ायाबी के लिए दुआ फ़रमायी तो अल्लाह तआला ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि वह

अपने पैर को ज़मीन पर मारें। ग़ौर करने की बात है कि क्या एक व्यक्ति का ज़मीन पर पैर मारना उसकी बीसियों साल की बीमारी की शिफ़ायाबी का इलाज है? नहीं। लेकिन उन्होंने ने अल्लाह के हुक्म से यह कमज़ोर सबब इख़्तियार किया जिसके ज़रिए अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से उनके ज़मीन पर पैर मारने से पानी का ऐसा चश्मा जारी कर दिया जिससे गुस्ल करने पर हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीसियों साल की बदन की बहुत सी बीमारियाँ ख़त्म हो गयीं। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के इस वाक़ये की तफ़सीलात के लिए सूरह अलअंबिया आयत 83 और 84, और सूरह ص 'साद' आयत 41 से 44 की तफ़सीर का अध्ययन करें। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के इस वाक़ये से हमें विभिन्न सबक़ मिले, दो अहम सबक़ यह हैं। पहला सबक़ यह है कि अल्लाह तआला अपने इरादे से भी हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को शिफ़ा दे सकते थे मगर दुनिया के दारुल असबाब होने की वजह से हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि वह कुछ हरकत करें यानि कम अज़ कम अपने पैर को ज़मीन पर मारें। दूसरा सबक़ यह है कि जो भी असबाब उपलब्ध हों उनको इस यकीन के साथ इख़्तियार करना चाहिए कि अल्लाह तआला की कुदरत और हुक्म से कमज़ोर असबाब के बावजूद किसी बड़ी से बड़ी चीज़ का भी वजूद हो सकता है।

हज़रत मरियम अलैहस्सलाम ने जब अल्लाह के हुक्म से बग़ैर बाप के हज़रत ईसा को जना तो उनके लिए हुक्मे खुदावंदी हुआ कि खजूर के तने को हिलायें यानि हरकत दें, उससे जब पकी हुई ताज़ा खजूरें झड़ें तो उनको खायें। अल्लाह तआला अपनी कुदरत से हज़रत मरियम अलैहस्सलाम को बग़ैर किसी सबब के भी खजूर खिला

सकते थे लेकिन दुनिया के दारुल असबाब होने की वजह से हुक्म हुआ कि खजूर के तने को अपनी तरफ हिलाओ। इसलिए हज़रत मरियम अलैहस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म पर अमल करके खजूर के तने को हिलाया। खजूर का तना इतना मज़बूत होता है कि चंद ताकतवर मर्द हज़रात भी उसे आसानी से नहीं हिला सकते हैं, लेकिन एक औरत ने इस कमज़ोर सबब को इख्तियार किया तो अल्लाह तआला ने अपने हुक्म से सूखे हुए खजूर के पेड़ से हज़रत मरियम अलैहस्सलाम के लिए ताज़ा खजूरें यानि भोजन का प्रबन्धन कर दिया। इस वाक्ये से मालूम हुआ कि जो भी असबाब उपलब्ध हों अल्लाह पर तवक्कुल करके उन्हें इख्तियार करना चाहिए।

असबाब (साधन) तो हमें इख्तियार करने चाहिए लेकिन हमारा भरोसा अल्लाह की ज़ात पर होना चाहिए कि वह असबाब के बगैर भी चीज़ को वजूद में ला सकता है और असबाब की मौजूदगी के बावजूद उसके हुक्म के बगैर कोई भी चीज़ वजूद में नहीं आ सकती। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जलती हुई आग में डाला गया, जलाने के सारे असबाब मौजूद थे, मगर अल्लाह का हुक्म हुआ कि आग हज़रत इब्राहिम के लिए सलामती बन जाये तो आग ने उन्हें कुछ भी नुक़सान नहीं पहुंचाया बल्कि वह आग जो दूसरों को जला देती हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए ठंडी और सलामती बन गयी। इसी तरह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की गर्दन पर ताक़त के साथ तेज़ छुरी चलायी गई, मगर छुरी भी काटने में अल्लाह के हुक्म की मोहताज होती है, अल्लाह ने उस छुरी को हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की गर्दन को ना काटने का हुक्म दे दिया था, इसलिए

काटने के असबाब की मौजूदगी के बावजूद छुरी हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की गर्दन नहीं काट सकी।

असबाब (साधनों) का प्रयोग करना अल्लाह का हुक्म है। हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने असबाब को इख्तियार भी फ़रमाया और उसका हुक्म भी दिया चाहे लड़ाई हो या कारोबार। हर काम में अपनी ताक़त के अनुसार असबाब (साधन) का इख्तियार करना ज़रूरी है, इसलिए जायज़ और हलाल तरीक़े पर असबाब और वसाइल इख्तियार करना, फिर अल्लाह की ज़ात पर पूरा यक़ीन करना अल्लाह पर भरोसा करने की रूह है। अगर तवक्कुल अललल्लाह का मतलब यह होता कि सिर्फ़ अल्लाह की मदद पर यक़ीन करके बैठ जायें तो सबसे पहले क़यामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों के नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस पर अमल करते, हालांकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा नहीं किया और ना कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने ऐसा कोई हुक्म दिया बल्कि दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए पहले पूरी तैयारी करने की ताकीद फ़रमायी।

जैसा कि अर्ज़ किया गया कि कुरआने करीम में अल्लाह पर तवक्कुल यानि भरोसा करने की बार-बार ताकीद की गयी है। इख्तिसार के मद्देनज़र यहां सिर्फ़ चंद आयात का तर्जुमा पेश कर रहा हूँ।

“तुम उस ज़ात पर भरोसा करो जो ज़िन्दा है, जिसे कभी मौत नहीं आयेगी”। (सूरह अलफ़ुरक़ान 58)

“जब तुम किसी काम के करने का इरादा कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो”। (सूरह आले इमरान 159)

“जो अल्लाह पर भरोसा करता है अल्लाह उसके लिए काफ़ी हो जाता है”। (सूरह अत्तलाक 3)

“बेशक ईमान वाले वहीं हैं जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाये तो उनके दिल नर्म पड़ जाते हैं और जब उन पर उसकी आयात की तिलावत की जाती है तो वह आयात उनके ईमान में इज़ाफ़ा कर देती हैं और वह अपने रब ही पर भरोसा करते हैं”। (सूरह अन्फ़ाल 3)

हमारे नबी ने भी बहुत बार अल्लाह पर तवक्कुल करने की तालीम दी है, फ़िलहाल सिर्फ़ एक हदीस पेश है: हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अगर तुम अल्लाह पर तवक्कुल करते जैसे तवक्कुल का हक़ होता है तो अल्लाह तआला तुम को इस तरह रिज़क़ इनायत फ़रमाते जैसा कि परिन्दों को देता है कि सुबह सवेरे खाली पेट निकलते और शाम को पेट भर कर वापस लौटते हैं। (तिर्मिज़ी) परिंदों को भी रिज़क़ हासिल करने के लिए अपने घोंसलों से निकलना पड़ता है, लेकिन रिज़क़ देने वाली ज़ात सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही की है।

जब कुफ़ारे मक्का उहद की जंग से वापस चले गये तो रास्ते में उन्हें पछतावा हुआ कि हम जंग में ग़ालिब आ जाने के बावजूद ख्वाह मख्वाह वापस आ गये, अगर कुछ और ज़ोर लगाते तो सभी मुसलमानों का खात्मा हो सकता था। इस ख़्याल की वजह से उन्होंने मदीना मुनव्वरा की तरफ़ लौटने का इरादा किया। दूसरी तरफ़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके इरादा से बाख़बर होकर उहद के नुक़सानात की तलाफ़ी के लिए जंगे उहद के अगले दिन

सुबह सवेरे सहाबा में यह एलाना फ़रमाया कि हम दुश्मन के पीछे जायेंगे और जो लोग जंगे उहद में शरीक थे सिर्फ़ वह हमारे साथ चलें। सहाबए किराम जंग की वजह से जख्मी और बहुत ज़्यादा थके हुए थे, लेकिन उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत पर लब्बैक कहा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने सहाबा के साथ मदीना मुनव्वरा से 'हमराउल असद' के मक़ाम पर पहुंचे तो 'क़बीला ख़ुज़ाआ' के एक व्यक्ति ने मुसलमानों के हौंसलों को खुद देखा। बाद में उस व्यक्ति की मुलाकात कुफ़फ़ारे मक्का के सरदार अबू सुफ़ियान से हुई तो उसने मुसलमानों के हौसले के मुताअल्लिक़ बताया और मक्का मुकर्रमा वापस जाने का मशवरा दिया। उससे कुफ़फ़ारे पर रोब (डर) तारी हुआ और वह वापस मक्का मुकर्रमा चले गये, मगर अबू सुफ़ियान ने एक व्यक्ति के ज़रिये मुसलमानों के लश्कर में यह ख़बर (झूठी) पहुंचा दी कि अबू सूफ़ियान बहुत बड़ा लश्कर जमा कर चुका है और वह मुसलमानों का खात्मा करने के लिए उन पर हमला करने वाला है। इस पर सहाबए किराम डरने के बजाये बोल उठे **'हस्बुनल्लाहु व नेमल वकील'** हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह अच्छा कारसाज़ है। (सूरह आले इमरान 173) यही तवक्कुल है।

हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम एक ग़ज़वे में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे। जब हम एक घने सायेदार पेड़ के पास आये तो उस पेड़ को हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए छोड़ दिया। मुशरिकीन में से एक व्यक्ति आया और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेड़ से लटकी हुई तलवार उसने ले ली और सूत कर कहने लगा:

क्या तुम मुझसे डरते हो? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: नहीं। उसने कहा कि तुम्हें मुझसे कौन बचायेगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा: अल्लाह। इस पर तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह तलवार पकड़कर फ़रमाया: तुम्हें मुझसे कौन बचायेगा? उसने कहा तुम बेहतर तलवार पकड़ने वाले बन जाओ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क्या तू ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही देता है? उसने कहा नहीं, लेकिन मैं आपसे यह अहद करता हूँ कि ना मैं आपसे लड़ूँगा और ना मैं उन लोगों का साथ दूँगा जो आपसे लड़ते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसका रास्ता छोड़ दिया। वह व्यक्ति अपने साथियों के पास गया और कहने लगा मैं ऐसे व्यक्ति के पास से आया हूँ जो लोगों में सबसे बेहतर है। (मुसनद अहमद, यह वाक्या अलफाज़ के फ़र्क के साथ बुखारी और मुस्लिम में भी मौजूद है)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने मुशरिकीन के क़दम देखे जब कि हम ग़ारे सौर (गुफा) में थे। वह हमारे सरों के ऊपर खड़े थे। मैंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! अगर इनमें से कोई अपने क़दमों की निचली जानिब देखे तो वह हमें देख ले। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ऐ अबू बक्र! तेरा उन दो के मुताअल्लिक़ क्या गुमान है कि अल्लाह जिनका तीसरा है। (बुखारी और मुस्लिम)

तवक्कुल अलल्लाह के हुसूल के लिए एक दुआ: हज़रत अनस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो व्यक्ति घर से निकलते समय यह दुआ पढ़े: “बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाहि वला हउला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह”, (मैं अल्लाह का नाम लेकर घर से निकलता हूँ और अल्लाह पर भरोसा करता हूँ और ना किसी भी काम की कुदरत मिल सकती है सकती है ना ताक़त मगर अल्लाह तआला की मदद से) तो उसको यह कह दिया जाता है कि तूने हिदायत पाई, तेरी किफ़ालत कर दी गयी, तुझे हर शर से बचा दिया गया और शैतान उससे दूर हट जाता है। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से बहुत खुश होते हैं

हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा से (जबकि वह उसकी बारगाह में तौबा करता है) उससे भी ज़्यादा खुश होते हैं जितनी खुशी तुम में से किसी मुसाफ़िर को अपनी उस (सवारी के) ऊंट के मिल जाने से होती है जिस पर वह चटियल बयाबान (मैदान) में सफ़र कर रहा हो, उसी पर उसके खाने पीने का सामान बंधा हुआ हो और (इत्तेफ़ाक से) वह ऊंट उसके हाथ से छूट कर भाग जाये और वह (उसको ढूँढ़ते ढूँढ़ते) मायूस हो जाये और इसी मायूसी के आलम में (थका हारा भूखा प्यासा) किसी पेड़ के साये के नीचे लेट जाये और उसी हालत में (उसकी आंख लग जाये और जब आंख खुले तो) अचानक उस ऊंट को अपने पास खड़ा हुआ पाये और (जल्दी से) उसकी नकेल पकड़ ले और खुशी के जोश में (ज़बान उसके काबू में ना रहे और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने की गर्ज से) कहने लगे! ऐ अल्लाह! तू मेरा बन्दा और मैं तेरा रब हूँ। (खुशी के मारे उसे पता भी ना चले कि मैं क्या कह गया)। (सही मुस्लिम)

बन्दे की तौबा से अल्लाह तआला की खुशी भी उसकी बड़ी शान और रहमत का तक्राज़ा है कि उसका एक भटका हुआ बन्दा अपनी नादानी से शैतान के बहकाने में आकर उसकी इबादत की राह से भटक गया था, अब सीधे रास्ते पर आ गया। लेकिन बन्दे की तौबा और इस्तिग़फ़ार से अल्लाह तआला की शान में कोई इज़ाफ़ा (वृद्धि) नहीं होता है। वह बड़ा है और बड़ा ही रहेगा। वह बेनियाज़ है, उसे

हमारी ज़रूरत नहीं है, लेकिन हम उसके मोहताज हैं। उसकी कोई नज़ीर नहीं है, वह पूरी कायनात का ख़ालिक, मालिक और राज़िक है। अल्लाह तआला से तौबा और इस्तिग़फ़ार करने का फ़ायदा हमें ही पहुंचता है, जिस तरह अल्लाह तआला के हुक्म की खिलाफ़वर्जी करने पर उसका नुक़सान भी हमें ही पहुंचता है।

कुरआन और हदीस की रोशनी में पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफ़ाक़ है कि गुनाहों से तौबा करना ज़रूरी है। अगर गुनाह का सम्बन्ध अल्लाह के हुक्म से है मसलन नमाज़ और रोज़ा की अदायगी में कोताही या उन आमाल को करना जिनसे अल्लाह और उसके रसूल ने मना किया है मसलन शराब पीना और ज़िना करना, **तो तौबा के लिए तीन शर्तें हैं:**

- 1) गुनाह को छोड़ना।
- 2) किये गये गुनाह पर शर्मिन्दा होना।
- 3) आइन्दा गुनाह ना करने का पक्का इरादा करना। लेकिन अगर गुनाह का सम्बन्ध बन्दों के हुक्म से है तो उन तीन शर्तों के अलावा मज़ीद एक अहम शर्त ज़रूरी है कि पहले बन्दे से मामला साफ़ किया जाये, यानि अगर उसका हक़ है तो वह अदा किया जाये या उससे माफी मांगी जाये। गर्ज़ कि बन्दों के हुक्म के मुतअल्लिक़ क़यामत तक के लिए अल्लाह तआला ने अपना उसूल और ज़ाब्ता बयान कर दिया पहले बन्दे का हक़ अदा किया जाये, उससे माफी मांगी जाये, फिर अल्लाह तआला की तरफ़ तौबा के लिए लौटा जाये।

तौबा के मायने लौटने के हैं। अल्लाह तआला की नाफ़रमानी से फ़रमांबरदारी की तरफ़ लौटना शरीअते इस्लामिया में तौबा कहलाता

है। अल्लाह के हुक्क में कोताही की सूरत में तौबा के सही होने के लिए तीन शर्तें और बन्दे के हुक्क में कोताही करने पर तौबा के लिए चार शर्तें ज़रूरी है। इसलिए हमें जिस तरह अल्लाह के हुक्क (अधिकार) को मुकम्मल तौर पर अदा करना चाहिए, इसी तरह बन्दों के हुक्क की अदायगी में थोड़ी सी कोताही से भी बचना चाहिए। बन्दों के हुक्क (अधिकार) में कोताही करने पर क़यामत के दिन मोहसिने इन्सानियत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान के मुताबिक आमाल के ज़रिए बन्दों के हुक्क की अदायगी की जायेगी, जैसा कि फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है: मेरी उम्मत का गरीब व्यक्ति वह है जो क़यामत के दिन बहुत सी नमाज़, रोज़ा, ज़कात (और दूसरी मकुबूल इबादतें) लेकर आयेगा, मगर हाल यह होगा कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगायी होगी, किसी का माल ना हक़ खाया होगा, किसी का खून बहाया होगा या किसी को मारा पीटा होगा तो उसकी नेकियों में से एक हक़ वाले को (उसके हक़ के बक़द्र) नेकियाँ दी जायेंगी, ऐसे ही दूसरे हक़ वाले को उसकी नेकियों में से (उसके हक़ के बक़द्र) नेकियाँ दी जायेंगी। फिर अगर दूसरों के हुक्क चुकाये जाने से पहले उसकी सारी नेकियाँ ख़त्म हो जायेंगी तो (उन हुक्क के बक़द्र) हक़दारों और मज़लूमों के गुनाह (जो उन्होंने किये होंगे) उन से लेकर उस व्यक्ति पर डाल दिये जायेंगे और फिर उस व्यक्ति को जहन्नम (नरक) में फेंक दिया जायेगा। (मुस्लिम)

अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में भी बार बार हमें तौबा करने की ताकीद फ़रमायी है। इख़्तसार के पेशे नज़र सिर्फ़ दो आयात पेश

हैं: ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह के सामने तौबा करो, ताकि तुम कामयाब हो जाओ। (सूरतुन्नूर 31)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह के सामने सच्ची तौबा करो। बहुत मुमकिन है कि तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे गुनाह माफ़ करके तुम्हें जन्नत में दाखिल कर दे। (सूरतुत्तहरीम 8)

पहली आयत में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि तौबा करने वाले कामयाब हैं, दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया कि सच्ची तौबा करने वालों के गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं और उनको जन्नत में दाखिल किया जायेगा।

कयामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों के नबी हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: ऐ लोगो! अल्लाह की बारगाह में तुम तौबा और इस्तिग़फ़ार करो। मैं दिन में सौ सौ बार तौबा करता हूँ। (मुस्लिम)

इसी तरह फ़रमाने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं: अल्लाह की कसम! मैं अल्लाह तआला से एक एक दिन में सत्तर सत्तर बार से ज्यादा तौबा और इस्तिग़फ़ार करता हूँ। (बुखारी)

हमारे नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुनाहों से پاک और साफ़ और मासूम होने के बावजूद रोज़ाना सौ सौ बार इस्तिग़फ़ार किया करते थे, इसमें उम्मत मुस्लिमा को तालीम है कि हम रोज़ाना ऐहतमाम के साथ अल्लाह तआला से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते रहें। इसमें हमारा ही फ़ायदा है जैसा कि हमारे नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो व्यक्ति पाबंदी से इस्तिग़फ़ार करता रहे (यानि अपने गुनाहों से माफ़ी मांगता रहे) अल्लाह तआला उसके लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देते

हैं, हर ग़म से उसे निजात अता फ़रमाते हैं और ऐसी जगह से रोज़ी अता फ़रमाते हैं कि जहां से उसको गुमान भी नहीं होता। (अब्दुल्लाह-बाबुन फ़िल इस्तिग़फ़ार)

कोई व्यक्ति कब तक तौबा कर सकता है?: हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला अपने बन्दे की तौबा उस समय तक कुबूल फ़रमाता है जब तक वह मरने की हालत को ना पहुंच जाये। (तिर्मिज़ी) यानि जब इन्सान का आखिरी समय आ जाता है तो फिर उसकी तौबा अल्लाह तआला क़बूल नहीं करते हैं। मौत का समय और जगह सिवाये अल्लाह तआला की ज़ात के किसी का मालूम नहीं। इसलिए कुछ बचपन में, तो कुछ नयी जवानी में और कुछ अर्धे उम्र में, जबकि बाकी बुढ़ापे में दुनिया को छोड़ जाते हैं। कुछ तंदरुस्त नौजवान सवारी पर सवार होते हैं, लेकिन उन्हें नहीं मालूम कि वह मौत की सवारी पर सवार हो चुके हैं। यही दुनियावी ज़िन्दगी, उखरवी ज़िन्दगी की तैयारी के लिए पहला और आखिरी मौक़ा है। इसलिए ज़रूरी है कि हम अफ़सोस करने या खून के आंसू बहाने से पहले इस दुनियावी ज़िन्दगी में ही अपने गुनाहों से तौबा करके अपने मौला को राज़ी करने की कोशिश करें ताकि हमारी रूह हमारे बदन से इस हाल में जुदा हो कि हमारा ख़ालिक, मालिक और राज़िक हम से राज़ी हो।

सच्चे दिल से तौबा करने पर बड़े से बड़े गुनाहों की भी माफ़ी: हदीस की मशहूर किताबों में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से सुनाया हुआ एक वाक़या ज़िक्र है: तुम से पहली

उम्मत में एक आदमी था जो 99 आदमियों को क़त्ल कर चुका था। उस ने किसी बड़े आलिमे दीन का पता दरयाफ़्त किया तो लोगों ने उसे एक (ईसाई) राहिब का पता बताया। यह व्यक्ति उस राहिब के पास गया और कहा कि मैं 99 आदमियों को क़त्ल कर चुका हूँ, क्या अब भी मेरे लिए तौबा का इमकान है? राहिब ने कहा: नहीं। तो उस व्यक्ति ने राहिब को भी क़त्ल कर डाला और इस तरह 100 क़त्ल पूरे कर दिये। (लेकिन वह अपने किये हुए गुनाह पर बहुत शर्मिन्दा था और अल्लाह तआला से सच्ची तौबा करना चाहता था।) फिर लोगों से बड़े आलिमें दीन का पता किया तो लोगों ने उसको एक और आलिम का पता बताया। यह व्यक्ति उनके पास गया और कहा मैं सौ आदमियों को क़त्ल कर चुका हूँ, क्या अब भी मेरे लिए तौबा का इमकान है? उसने कहा: हाँ, ज़रूर है। और भला अल्लाह के बन्दे और तौबा के बीच कोई चीज़ रूकावट हो सकती है? तुम फलां (उस) बस्ती में चले जाओ। वहां अल्लाह के कुछ नेक बंदे अपने रब की इबादत में मसरूफ़ हैं। तुम उनके साथ रहकर अल्लाह की इबादत में मसरूफ़ हो जाओ। यह व्यक्ति (तौबा करके) उस बस्ती की जानिब चल दिया। आधा रास्ता तय किया था कि मौत आ गयी। उसकी रूह के बारे में रहमत के फरिश्तों और अज़ाब के फरिश्तों में झगड़ा होने लगा। रहमत के फरिश्तों ने कहा कि यह व्यक्ति अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करके अल्लाह तआला की तरफ मुतवज्जेह हो चुका है, इसलिए हम उसकी रूह लेकर जायेंगे। अज़ाब के फरिश्तों ने कहा कि उसने अभी तक कोई नेक अमल नहीं किया है, इसलिए यह व्यक्ति रहमत का हकदार नहीं है। अल्लाह के हुकम से एक फरिश्ता इन्सानी शक़ल में उनके सामने आया। दोनों ने उसको अपना हकम बना

लिया। उस इन्सान नुमा फ़रिश्ते ने कहा कि दोनों सरज़मीनों (गुनाह की बस्ती और इबादत की बस्ती) की पैमाईश कर लो, जिस इलाके से यह करीब हुआ उसी इलाके के लोगों में शामिल कर दो। इसलिए उन्होंने ज़मीन की पैमाइश की, उस इलाके से करीबतर पाया जिसमें इबादते इलाही के इरादे से वह जा रहा था। कुछ रिवायात में आता है कि ख़ुद अल्लाह तआला ने बदकारी की सरज़मीन को हुक्म दिया कि तू दूर हो जा और नेकोकारी की सरज़मीन को हुक्म दिया कि तू करीब हो जा और इस तरह नेकी की सरज़मीन एक बालिशत करीब निकली इसलिए उसकी मग़्फ़िरत कर दी गयी।

इस वाक़ए की ताईद कुरआन और हदीस से भी होती है, इसलिए अल्लाह तआला **सूरतुज़्जुमर आयत 53** में इरशाद फ़रमाता है: कह दो कि “ऐ मेरे वह बन्दों! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती कर रखी है अल्लाह की रहमत से मायूस ना हो। यकीन जानो अल्लाह सारे के सारे गुनाह माफ़ कर देता है। यकीनन वह बख़श्ने वाला, बड़ा मेहरबान है।”

फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है: अल्लाह तआला रात को अपना हाथ फैलाते हैं ताकि दिन में गुनाह करने वाला रात को तौबा करे और दिन को अपना दस्ते कुदरत फैलाते हैं ताकि रात को गुनाह करने वाला दिन को तौबा करे। **(सहीह मुस्लिम)**

अल्लाह तआला दुनिया में शिर्क जैसे बड़े गुनाह को भी सच्ची तौबा करने पर माफ़ कर देता है। इसलिए हमें बहुत ज़ियादा गुनाहों के बावजूद अल्लाह तआला की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिए, लेकिन रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान (अक़लमंद व्यक्ति वह है जो अपना हिसाब करता रहे और मरने के बाद के

लिए अमल करता रहे। और बेवकूफ व्यक्ति वह है जो अपनी ख्वाहिश पर अमल करे और अल्लाह तआला से बड़ी बड़ी उम्मीदें बांधे) (तिर्मिज़ी और इब्ने माजा) के मुताबिक हमें गुनाह करने की जुरअत नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ऐसा ना हो कि तौबा की तौफ़ीक़ मिलने से पहले ही हमारी रूह जिस्म से निकल जाये।

इस वाक्ये से हमें यह सबक लेना चाहिए कि अल्लाह तआला हमें इस समय भी माफ़ करने के लिए तैयार है, इसलिए फ़ौरन गुनाहों से माफ़ी मांग कर अच्छाईयों की तरफ़ पहल करें। कल, जुमा या रमज़ान पर अपनी तौबा को ना टालें। बल्कि अभी गुनाहों से बचकर अपने किये हुए गुनाहों पर शर्मिन्दा हों और अल्लाह तआला से तौबा करें। इंशाअल्लाह अल्लाह हमारे बड़े बड़े गुनाहों को भी अल्लाह तआला माफ़ करने के लिए तैयार है। अगर तौबा से पहले हमारी रूह हमारे जिस्म से दूर होने लगे तो फिर खून के आंसू बहाने से भी कोई फ़ायदा नहीं होगा। अगर हमने बंदों के हुक्क़ (अधिकार) में कोताही की है तो पहली फ़ुरसत में हुक्क़ की अदायगी करके या माफ़ी मांग करके बंदे से अपना मामला साफ़ कर लें, वरना क़यामत के दिन आमाल के ज़रिए हुक्क़ की अदायगी की जायेगी जैसा कि हमारे नबी ने बयान किया है। जहां तक दुनियावी ज़िन्दगी में मशगूलियत का सम्बन्ध है तो हमारे नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर इन्सान को एक वादी सोने की मिल जाये तो वह चाहता है कि उसके पास दो वादियां हों। उसके मुंह को क़ब्र की मिट्टी ही भरेगी और तौबा करने वाले की तौबा अल्लाह तआला क़बूल फ़रमायेगे। (बुखारी और मुस्लिम)

बड़े बड़े गुनाहों से मुस्तक़िल तौबा करना ज़रूरी है, जबकि छोटे छोटे गुनाहों की मग़फ़िरत के लिए इस्तिग़फ़ार पढ़ना भी काफ़ी है। इसीलिए उलमाए किराम ने कुरआन और हदीस की रोशनी में लिखा है कि हमें हर नमाज़ के बाद और सुबह और शाम इस्तिग़फ़ार पढ़ना चाहिए। इन्सान के साथ शैतान, अपना नफ़्स और समाज लगा हुआ है, जिसकी वजह से इन्सान गुनाह से सच्ची तौबा करने के बावजूद उस गुनाह को दोबारा कर बैठता है, लेकिन इन्सान को हमेशा अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा होकर आइन्दा ना करने के इरादे के साथ तौबा करते रहना चाहिए और इस बात की दिन रात फ़िक्र करनी चाहिए कि फ़लां गुनाह से कैसे बचा जाये, जैसा कि मज़कूरा बाला वाक़ये में 99 क़त्ल करने के बाद वह व्यक्ति सच्चे दिल से तौबा करना चाहता था। अगर गुनाह से बचने का पक्का इरादा है तो अल्लाह तआला ज़रूर उस व्यक्ति को गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायेगा।

सब्र की तौफ़ीक सबसे बेहतर उपहार

सब्र इन्सान में एक ऐसी भीतरी ताक़त का नाम है जो ईमानी ताक़त से पैदा होती है, जिसके ज़रिए अपनी इच्छाओं पर क़ाबू पाना और अल्लाह तआला के फ़ैसलों पर संतुष्ट होना आसान होता है। सब्र का मतलब यह नहीं है कि इन्सान किसी तकलीफ़ या सदमे पर रोये भी नहीं। किसी तकलीफ़ या सदमे पर रंज और अफ़सोस करना इन्सान की फ़ितरत (स्वभाव) में दाख़िल है। इसीलिए शरीअते इस्लामिया ने किसी तकलीफ़ या मुसीबत के समय रोने पर कोई पाबंदी नहीं लगाई, क्योंकि जो रोना खुद बा खुद आ जाये वह बे सबरी में दाख़िल नहीं, लेकिन सब्र का मतलब यह है कि किसी तकलीफ़ या सदमे या हादसे पर अल्लाह तआला से कोई शिकायत ना किया जाये बल्कि अल्लाह तआला के फ़ैसले पर सहमती का इज़हार करके उसको तसलीम किया जाये। वैसे तो हर व्यक्ति अपनी ज़िन्दगी में बेशुमार बार सब्र करता है, मगर अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने की सूरत में ही सब्र करना इबादत बनेगा, वरना मजबूरी।

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का मुसीबतों और तकलीफ़ों पर सब्र करना 'सब्रेअय्यूबी' के नाम से मशहूर है। आपकी औलाद के इन्तक़ाल के अलावा आप का सभी माल भी ख़त्म हो गया था, तथा विभिन्न बीमारियाँ आपको लग गयी थीं, जिनकी वजह से लोगों ने आपको अलग थलग कर दिया था, मगर हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीवी ने आपकी बहुत ख़िदमात की। जब बीवी को भी आपकी वजह से बहुत ज़्यादा तकलीफ़ का सामना करना पड़ा तो हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अपनी तकलीफ़ों

की दूरी के लिए दुआ फ़रमायी, इसलिए आपको पूरी तरह स्वास्थ्य अता कर दी गयी।

सब्र की विभिन्न किस्में हैं:

1) अल्लाह तआला ने जिन आमाल के करने का हुक्म दिया है उनको बजा लाना चाहे बज़ाहिर मिज़ाज के खिलाफ हो। मसलन गर्म बिस्तर छोड़ कर नमाज़े फ़ज़्र की अदायगी करना। माल की मुहब्बत और उसकी ज़रूरत के बावजूद ज़कात के फ़र्ज़ होने पर ज़कात की अदायगी करना।

2) अल्लाह तआला ने जिन चीज़ों को हaram करार दिया है उनसे बचना चाहे नफ़्स की ख़्वाहिश हो। मसलन शराब पीने और रिश्वत लेने से बचना।

3) अल्लाह तआला के फैसलों पर सब्र करना, यानि जो भी हालात आयें उन पर सब्र करके अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करना।

अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम “कुरआन करीम” में जगह जगह सब्र करने की तालीम दी है। चंद आयात पेश हैं:

ऐ ईमान वालो! सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो। बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है और जो लोग अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हों उनको मुर्दा ना कहो। दरअसल वह ज़िन्दा हैं, मगर तुमको (उनकी ज़िन्दगी का) एहसास नहीं होता और देखो हम तुम्हें आजमायेंगे ज़रूर, (कभी) डर से और (कभी) भूख से और (कभी) माल और जान और फलों में कमी करके, और जो लोग (ऐसे हालात

में) सब्र से काम लें उनको खुशखबरी सुना दो। (सूरह अलबक्रा 153-155)

इसी तरह फ़रमाने इलाही है: ऐ ईमान वालो! सब्र करो और दुश्मन के मुकाबले में डटे रहो। (सूरह आले इमरान 200)

सब्र करने वालों को बेहिसाब अज़्र और सवाब अता किया जायेगा जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है: जो लोग सब्र से काम लेते हैं उनका सवाब उन्हें बेहिसाब दिया जायेगा। (सूरह अज़्जुमर 10)

हालात पर सब्र करने को अल्लाह तआला ने हिम्मत वाला काम करार दिया, इसलिए फ़रमाने इलाही है: जो व्यक्ति सब्र से काम ले और दरगुज़र कर जाये तो यह हिम्मत के कामों में से है।

सूरह अल अस्र में खालिके कायनात ने इन्सान की कामयाबी के लिए सब्र और सब्र की तलक़ीन को जरूरी करार दिया।

क़यामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों के आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपने क़ौल (बातों) और अमल से सब्र करने की तरगीब दी, इसलिए नबी बनाये जाने से लेकर वफ़ात तक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बेशुमार तकलीफ़ें दी गयीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर ऊंटनी की ओझड़ी डाली गयी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर घर का कूड़ा डाला गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को काहिन, जादूगर और मजनू कहकर मज़ाक उड़ाया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटियों को तलाक़ दी गयी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तीन साल तक बायकाट किया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पत्थर बरसाये गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना शहर छोड़ना पड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम गज़वा-ए-उहद के मौक़े पर ज़ख्मी किये गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जहर देकर मारने की कोशिश की गयी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी एक दिन में दोनों समय पेट भरकर खाना नहीं खाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भूख की वजह से अपने पेट पर दो पत्थर बांधे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर में दो दो महीने तक चूल्हा नहीं जला। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऊपर पत्थर की चट्टान गिराकर मारने की कोशिश की गयी। हज़रत फ़ातमा रज़िअल्लाहु अन्हा के सिवा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सारी औलाद की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने वफ़ात हुई। ग़र्ज़ कि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को विभिन्न तरीक़ों से सताया गया, मगर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी सब्र का दामन नहीं छोड़ा। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रिसालत की अहम ज़िम्मेदारी को सहनशीलता के साथ बहुत सुन्दरता से अन्ज़ाम देते रहे। हमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी से यह सबक़ लेना चाहिए कि घरेलू या मुल्की या अंतरराष्ट्रीय सतह पर जैसे भी हालात हमारे ऊपर आयें, हम उन पर सब्र करें और अपने नबी के नक्शे कदम पर चलते हुए अल्लाह से अपना ताल्लुक़ मज़बूत करें। हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मुसलमान को जो भी थकावट, बीमारी, ग़म, रंज, दुख और तकलीफ़ पहुंचती है हत्ता कि वह कांटा भी जो उसको चुभता है, उसकी वजह से अल्लाह तआला उसकी ग़लतियाँ माफ़ फ़रमाते हैं। (सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो व्यक्ति सवाल से बचने की कोशिश करता है अल्लाह उसे बचा लेते हैं और जो बेनियाज़ी तलब करता है अल्लाह तआला उसको बेनियाज़ कर देते हैं। जो सब्र इख़्तियार करता है अल्लाह तआला उसको सब्र अता करते हैं। सब्र से ज़्यादा बेहतर इनाम किसी को नहीं दिया गया। (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मोमिन का सारा मामला ही अजीब है कि उसके सभी काम उसके लिए ख़ैर हैं। मोमिन के अलावा किसी को यह चीज़ (अल्लाह की बड़ी नेमत) हासिल नहीं। अगर उसको खुशहाली मिलती है तो शुक्र करता है तो यह शुक्र करना उसके लिए बेहतर है और अगर उसको तंगदस्ती आ जाये तो सब्र करता है तो यह सब्र करना उसके लिए बेहतर है। (सहीह मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र एक औरत के पास से हुआ जो क़ब्र पर बैठी रो रही थी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तू अल्लाह से डर और सब्र कर। उसने कहा मुझसे हट जाओ। तुम्हें मेरी वाली मुसीबत नहीं पहुंची और ना तुम उसको जानते हो। उस औरत ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं पहचाना था। जब उसको बता गया कि वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे, तो वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर हाज़िर हुई और वहां किसी दरबान को ना देखा तो कहने लगी। मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं पहचाना। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: बिलाशुबह सब्र

वही है जो तकलीफ़ के शुरू में किया जाये। (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम) यानि किसी मुसीबत या परेशानी के आने पर शुरू से ही सब्र करना चाहिए।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिससे अल्लाह तआला भलाई का इरादा फ़रमाता है उसको कुछ तकलीफ़ दे दी जाती है। (सहीह बुखारी)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम में से कोई व्यक्ति तकलीफ़ में मुबतला होने की वजह से मौत की ना आशा करे। अगर उसे करना ही हो तो यूँ कहे: ऐ अल्लाह! मुझे ज़िन्दा रख जब तक ज़िन्दगी में मेरे लिए ख़ैर है और मुझे मौत दे जब मौत में मेरे लिए बेहतरी हो। (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जब अल्लाह तआला किसी बंदे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसको दुनिया में भी गुनाह की सज़ा जल्द दे देता है और जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से बुराई का इरादा फ़रमाता है तो गुनाह के बावजूद सज़ा को रोक देता है ताकि पूरी सज़ा क़यामत के दिन दे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मज़ीद फ़रमाया: बड़ा बदला बड़ी परीक्षा के साथ है। अल्लाह तआला जब किसी क़ौम को पंसद फ़रमाता है तो उनको किसी परीक्षा में डाल देता है। जो उस परीक्षा से राज़ी हो उसके लिए अल्लाह की रज़ामंदी है और जो नाराज़ हो उसके लिए अल्लाह की नाराज़गी है। (तिर्मिज़ी)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम में बहादुर वह नहीं जो दूसरों को पछाड़ दे। बहादुर वह है जो गुस्से के

समय अपने नफ़्स पर कंट्रोल करे। (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मोमिन मर्द और औरत की जान, औलाद और माल पर आज़माइश आती रहती है यहां तक कि वह अल्लाह तआला से जा मिलता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता। (तिर्मिज़ी)

किसी करीबी रिश्तेदार के इन्तक़ाल पर दिल का ग़मगीन होना और आंखों से आंसू का बहना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मगर बुलन्द आवाज़ से मरहूम की विशेषताएँ बयान करके रोने पीटने, कपड़ों के फाड़ने से हमारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया है। हमें ऐसे मौक़े पर सब्र से काम लेना चाहिए। हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इरशाद फ़रमाते हुए सुना: कोई बन्दा भी अपनी मुसीबत में यह कहे “इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैइहि राजिऊन, अलहुम्मा अजिरनी फ़ी मुसीबती वख़्लुफ़ ली ख़ैइरम्मिन्हा” तो अल्लाह तआला उसे उसकी मुसीबत में उसका बदला अता करता है और उससे बेहतर चीज़ उसे अता करता है। जब अबू सलमा रज़िअल्लाहु अन्हु का इन्तक़ाल हुआ तो मैंने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ यह दुआ पढ़ी, हालांकि मैं सोच रही थी कि उनसे बेहतर कौन होगा? अल्लाह तआला ने मुझे उनसे बेहतर दौलत यानि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता किया। (सहीह मुस्लिम)

हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा का पहला निकाह हज़रत अबू सलमा रज़िअल्लाहु अन्हु से हुआ था जो नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के फूफीज़ाद भाई थे। उन्होंने अपने शौहर के साथ हबशा और फिर मदीना की तरफ़ हिजरत की थी। आपको आप के खानदान वालों ने हज़रत अबू सलमा रज़िअल्लाहु अन्हु के साथ मदीना मुनव्वरा हिजरत करने से रोक दिया था और गोद का बच्चा भी छीन लिया था। बाद में हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु अन्हा की हालत पर तरस खाकर खानदान वालों ने बच्चे को दे दिया था और मदीना मुनव्वरा हिजरत करने की भी इज़ाजत दे दी थी। आप पहली मुहाजिर खातून थीं। उनके शौहर हज़रत अबू सलमा रज़िअल्लाहु अन्हु की जंगे उहद के ज़ख्मों से वफ़ात हो गयी थी। चार बच्चे यतीम छोड़े। जब कोई बज़ाहिर दुनियावी सहारा ना रहा तो नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बेकस बच्चों और उनकी हालत पर रहम खाकर उनसे निकाह कर लिया।

कहने का मतलब यह है कि दुनिया में कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसको परेशानियों, मुसीबतों, तकलीफ़ों और दुश्वारियों का सामना ना करना पड़े। अल्लाह ने कुरआने करीम (सूरह अल बलद) में चार चीज़ों की क़सम खाकर क़यामत तक के लिए उसूल और ज़ाब्ता बयान फ़रमा दिया कि दुनिया में इन्सान को इस तरह पैदा किया गया है कि उसे ज़िन्दा रहने के लिए किसी ना किसी शकल में तकलीफ़ ज़रूर उठानी पड़ती है चाहे वह कितना ही बड़ा हाकिम या दौलतमंद (धनवान) व्यक्ति क्यों ना हो। अंबिया, सहाबा, उलमा और नेक लोगों को भी परेशानियों से गुज़रना पड़ा है। हमारे ऊपर जो परेशानियाँ और दुश्वारियाँ आती हैं वह या तो हमारे आमाल की सज़ा होती हैं या अल्लाह तआला की जानिब से हमारी परीक्षा होती है। इसलिए मुसीबत या परेशानी के समय गुनाहों से तौबा इस्तग़फ़ार

करके हमें अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करना चाहिए, उसी में हमारी कामयाबी छुपी है। दुश्वारियों और परेशानियों के समय अल्लाह तआला ने हमें सब्र करने और नमाज़ कायम करने का हुकम दिया और फ़रमाया कि अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है। यानि सब्र करने वालों को अल्लाह की मदद हासिल होती है। इन दिनों मुसलमानों के सामने क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय बहुत मसाइल हैं, जिनके हल के लिए विभिन्न फार्मूले पेश किये जा सकते हैं, लेकिन सबसे अहम फार्मूला यह है कि हम अपना ताल्लुक ख़ालिके कायनात से मज़बूत करें और ख़ालिके कायनात के हुकम की रोशनी में हालात पर सब्र करके नमाज़ के ज़रिए अल्लाह तआला से मदद चाहें।

हमें कारोबारी, समाजी और घरेलू ज़िन्दगी में हमेशा सच बोलना चाहिए

सच्चाई इंसान की ऐसी खूबी है जिसकी अहमियत हर मज़हब और हर दौर में तसलीम (मानी) की गयी है। इसके बग़ैर मानवता मुकम्मल नहीं होती। इसीलिए शरीअते इस्लामिया में इसकी तरफ़ खास तवज्जोह दिलाई गयी है और बार बार सच बोलने की ताकीद की गयी है, इसलिए मोहसिने इन्सानियत नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा सच बोलने की तालीम दी और झूठ बोलने से मना फ़रमाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा सच बोलते थे, हत्ता कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नबी और रसूल ना मानने वालों ने भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई और अमानतदारी से मुतास्सिर (प्रभावित) होकर आप को सादिक (सच्चा) और अमीन (ईमानदार) जैसे अलकाब से नवाज़ा था। इस्लाम का सबसे बड़ा दुश्मन अबू जहल भी तसलीम करता था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी झूठ नहीं बोलते हैं। सभी नबियों ने भी हमेशा सच बोलने की ताकीद फ़रमाई। हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक अल्लाह का फ़रमान है: “और किताब में इब्राहिम को याद करो, बेशक वह निहायत सच्चे पैग़म्बर थे”। (सूरह मरियम 41), हज़रत युसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में कुरआने करीम (सूरह युसूफ़ 51) में है: “(असल किस्सा यह है कि) मैं (हज़रत ज़लीखा) ने उसको अपनी तरफ़ माइल (खींचना) करना चाहा और वह (हज़रत युसुफ़ अलैहिस्सलाम) बेशक सच्चा है।

अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में भी पूरी इंसानियत को बार बार सच बोलने की तालीम दी है, इसलिए इरशाद है: “ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों का साथ दो।” (सूरह अत्तौबा 119)

इसी तरह फ़रमाने इलाही है: “(खुदा फ़रमायेगा कि) आज वह दिन है कि सच बोलने वालों को उनकी सच्चाई ही फ़ायदा देगी।” (सूरह अलमायदा 119)

अल्लाह तआला झूठ बोलने वालों की मज़म्मत करते हुए इरशाद फ़रमाता है: “अल्लाह तआला उन लोगों को रास्ता नहीं दिखाते जो फुज़ूलखर्ची करने वाले हैं और झूठे हैं।” (सूरह अलमोमिन 28)

चूँकि झूठ के परिणाम ख़तरनाक हैं और झूठ बोलने वाले के साथ साथ दूसरे भी उसके शर से महफूज़ नहीं रहते, इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने झूठ बोलने वालों के लिए सख्त वर्इदें बयान फ़रमायीं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सच्चाई को लाज़िम पकड़ो, क्योंकि सच नेकी की राह दिखाता है और नेकी जन्नत की तरफ़ ले जाती है और आदमी यकसां तौर पर सच कहता है और सच्चाई की कोशिश में रहता है यहां तक कि अल्लाह की नज़र में उसका नाम सच्चों में लिख दिया जाता है। और झूठ से बचे रहो, इसलिए कि झूठ बहुत बड़ा गुनाह है और झूठ जहन्नम की राह बताता है और आदमी लगातार झूठ बोलता है और उसी की जुस्तजू में रहता है यहां तक कि अल्लाह के नज़दीक उसका शुमार झूठों में लिख दिया जाता है। (बुखारी और मुस्लिम)

सच बोलने की कैसी बड़ी अहमियत है कि इन्सान अपनी सच्चाई के ज़रिए जन्नत में दाखिल हो सकता है जो हर इन्सान की पहली और आखिरी ख्वाहिश है, जबकि झूठ बोलने की वजह से इन्सान को जहन्नम की दहकती हुई आग में जलना होगा अगर उसने मौत से पहले सच्ची तौबा नहीं की। ज़ाहिर है कि हर इन्सान चाहता है कि वह जहन्नम (नरक) से बच जाये। क़यामत तक आने वाले इन्सानों और जिनों के नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत हासिल करने और जहन्नम से बचने के लिए बताया कि अल्लाह तआला के दूसरे अहकाम को बजा लाकर सच बोलने को अपने ऊपर लाज़िम कर लें।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बेचने वाले और खरीदार को अधिकार है जब तक वह मजलिस (मामला तय होने वाली जगह) से अलग ना हों। अगर दोनों ने हकीकत को ना छुपाया और सच बोला तो उनकी खरीद और फरोख्त में बरकत डाल दी जायेगी और अगर हकीकत को छुपाया और झूठ बोला तो खरीद और फरोख्त की बरकत खत्म हो जायेगी। (बुखारी और मुस्लिम)

इन दिनों हमने व्यापार को केवल दुनियादारी का काम समझ लिया है, इसलिए हमारा यह ज़ेहन बन गया है कि झूठ और धोखाधड़ी के बग़ैर अब व्यापार कामयाब नहीं हो सकता। हालांकि अगर तिजारत अल्लाह के डर के साथ की जाये और किसी को धोखा देने की ग़र्ज़ से नहीं बल्कि सच्चाई और अमानतदारी को अपना मामूल बनाकर की जाये और अवैध कामों से बचा जाये तो यही तिजारत इबादत बनेगी और हलाल तिजारत के ज़रिए हासिल होने वाली रकम को

अपने और घरवालों के ऊपर खर्च करने पर बहुत इनाम मिलेगा और उसकी वजह से हमें आखिरत में कामयाबी हासिल होगी इंशाअल्लाह जैसा कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “जो ताजिर सच्चा और अमानतदार हो वह क़यामत के दिन अंबिया, सिद्दीकीन और शहीदों के साथ होगा। यह हदीस हदीस की विभिन्न किताबों में मौजूद है, इसकी सनद पर कुछ उलमा ने कलाम (आलोचना) किया है, लेकिन यह हदीस अच्छे मायने और मफ़हूम अपने अन्दर लिए हुए है। इसलिए हमें कारोबार में भी कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए।

आखिरी हदीस में बयान किया गया कि ख़रीद और फ़रोख़्त करने वालों को मजलिस से जुदा होने से पहले अपने फैसले को वापस लेने यानि ख़रीद और फ़रोख़्त को ख़तम करने का हक़ रहता है। लेकिन मजलिस से जुदा होने के बाद ख़रीद और फ़रोख़्त मुकम्मल हो जाती है, अब बेचने वाले को यह इख़्तियार नहीं कि यह कहे कि मैं इस चीज़ को नहीं बेचना चाहता या ख़रीदार कहे कि मैं इस चीज़ को ख़रीदना नहीं चाहता। हाँ दोनों अपनी सहमती से इस डील को ख़त्म कर सकते हैं। अगर बेचने वाला चीज़ की कमियों को छुपाकर कोई चीज़ फ़रोख़्त करे या ख़रीदने वाला धोखा देने का इरादा रखता हो तो ख़रीद और फ़रोख़्त में कैसे बरक़त हो सकती है? इसलिए हमें चाहिए कि हम ख़रीद और फ़रोख़्त में भी झूठ का सहारा ना लें बल्कि हमेशा सच ही बोलें। हमारे असलाफ़ (पुराने लोगों) ने हमेशा सच बोलकर व्यापार किया, इसलिए हर मैदान में कामयाब हुए। शहरे मक्का मुकर्रमा की मशहूर ताजिरा हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाहु अन्हा ने सबसे अफ़जल बशर (मनुष्य) हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम की तिजारत में दयानतदारी को देखकर ही तो निकाह का पैगाम भेजा था।

हज़रत हसन बिन अली रज़िअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि मुझे हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह बातें याद हैं: जो बात शक में मुबतला करे उसको छोड़ दो और उसको अपनाओ जो शक में ना डाले। सच्चाई इत्मीनान है और झूठ शक है। (तिर्मिज़ी) यानि जिसके हलाल होने में शक हो उसको छोड़ दो और उसको इख्तियार करे जिसमें कोई संदेह ना हो। और हमें झूठ का सहारा नहीं लेना चाहिए, सिर्फ़ और सिर्फ़ सच ही बोलना चाहिए। एक झूठ को सही साबित करने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं, इसलिए हम सिर्फ़ सच बात ही कहें।

सच बोलने का अच्छा बदला:

सच बोलने पर अच्छा बदला मिलने के विभिन्न वाक़ियात किताबों में मौजूद हैं। कुरआन और हदीस में ज़िक्र एक वाक़िया पेश है। 9 हिजरी में होने वाले गज़वए तबूक में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ शामिल ना होने वाले तीन हज़रात: हज़रत कअब बिन मालिक, हज़रत मरारह बिन रबीअ और हज़रत हिलाल बिन उमय्यह रज़िअल्लाहु अन्हुम जब आपने उनसे ग़ैर हाज़िरी के मुताल्लिक सवाल फ़रमाया तो उन्होंने झूठ से गुरेज़ करते हुए सभी सूरते हाल सच सच अर्ज़ कर दी, अल्लाह तआला ने उन पर यह इनायत फ़रमायी कि उनकी तौबा को कुबूल फ़रमाया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत कअब रज़िअल्लाहु अन्हु को इस बड़ी नेमत की बशारत देते हुए फ़रमाया: तुम्हें उस दिन की खुशख़बरी जो कि तुम्हारी मां के तम्हें जनम देने के दिन से लेकर

आज तक के सभी दिनों से तुम्हारे लिए अच्छा है। लेकिन जिन लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने झूठ बोला अल्लाह तआला ने उनके मुताअल्लिक **सूरह अततौउबा में आयात (94-96)** नाज़िल फ़रमायीं जो कि पांच दुनयावी और उख़रवी सज़ाओं से सम्बंधित हैं:

- (1) उनके साथ सम्बन्ध ख़त्म करने का हुक्म: **(फअरिज़ू अन्हुम)** उनसे बचो।
- (2) उन पर नापाक होने का हुक्म: **(इन्नहुम रिजसुन)** बिलाशुबह वह नापाक हैं। हाफ़िज इब्ने कसीर रहमतुल्लाह अलैइह फ़रमाते हैं: यानि उनका बातिन और उनके एतेकादात ख़बीस हैं।
- (3) उनका ठिकाना जहन्नम होना: **(वमाअ वाहुम जहन्नम)** उनका ठिकाना जहन्नम है। अल्लामा कुरतबी रहमतुल्लाह अलैइहि इसकी तफ़सीर में लिखते हैं: यानि उनकी मंज़िल और जगह जहन्नम है।
- (4) अल्लाह तआला का उनसे राज़ी (प्रसन्न) ना होना: **(फइन तरज़ऊ अन्हुम फ़इन्नल्लाहा ला यरज़ा अनिल कौमिल फ़ासिकीन)** सो अगर तुम उनमें राज़ी भी हो गये तो यकीनन अल्लाह फ़ासिक लोगों से राज़ी नहीं होते।
- (5) उनको फ़ासिक करार देना: उलमा फ़रमाते हैं कि ज़मीर (सर्वनाम) के बज़ाये फ़ासकीन का लफ़्ज इस्तेमाल किया गया ताकि उनके बारे में यह निशानदही की जा सके कि वह अल्लाह की इताअत से निकल चुके हैं और यही बात उन पर नाज़िल होने वाले अज़ाबों का सबब बनी।

हज़रत कअब बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हु ने सच बोलने पर अल्लाह तआला की तरफ से हासिल होने वाली नवाज़िशत की तुलना झूठ बोलने वालों पर अल्लाह की नाराज़गी से करते हुए बयान फ़रमाया: अल्लाह की क़सम! अल्लाह की तौफ़ीक से इस्लाम कुबूल करने के बाद मेरी नज़र में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने इस सच बोलने से बढ़कर मुझ पर कोई एहसान नहीं हुआ कि मैंने झूठ नहीं बोला और ऐसे हलाक नहीं हुआ जैसा कि झूठ बोलने वाले हलाक हो गये थे, वही के ज़रिए इस क़द्र शदीद वईद फ़रमायी कि इतनी सख़्त किसी दूसरे के लिए नहीं फ़रमायी गयी। हाफ़िज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैइह फ़रमाते हैं कि उसमें सच का फ़ायदा है और झूठ के अन्जाम की नहूसत की वजाहत है। सच बोलने पर तीनों हज़रात को अल्लाह की जानिब से तौबा की तौफ़ीक मिली और वह हमेशा हमेशा के लिए कामयाब हुए, जबकि दूसरे मुनाफ़िकीन ने झूठ का सहारा लिया, हालांकि अल्लाह तआला ने अपने नबी को वही के ज़रिए उनके झूठे होने के मुताअल्लिक इत्तलाअ फ़रमा दी थी, इसलिए हमेशा के लिए जहन्नम में डाले जायेंगे।

झूठ बोलना बड़ा पाप है, अगर हमने कभी झूठ बोला है तो अल्लाह तआला से पहली फ़ुर्सत में माफ़ी मांगें, क्योंकि बड़ा गुनाह होने की वजह से उसके लिए मुस्तक़िल तौबा ज़रूरी है। कुछ मौकों पर झूठ बोलने की इज़ाजत दी गयी है मसलन मियां-बीवी में बहुत ज़ियादा इख़्तिलाफ़ हो गया है और झूठ बोलने की वजह से सुलह हो सकती है तो मजबूरी में उसकी इज़ाजत है, लेकिन झूठ बोलने की आदत बनाना या किसी व्यक्ति को धोखा देने के लिए झूठ बोलना बहुत बड़ा गुनाह है और उसके समाज में बड़े नुक़सानात हैं।

इताअत में मध्य मार्ग

अल्लाह तआला अपने पाक कलाम में इरशाद फ़रमाता है: अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी का मामला करना चाहता है और तुम्हारे लिये मुश्किल पैदा नहीं करना चाहता। (सूरह अलबक्रा 185)

अल्लाह तआला रोज़े की फ़र्ज़ीयत नाज़िल फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाता है कि जो व्यक्ति भी माहे रमज़ान पाये तो वह उसमें ज़रूर रोज़े रखे। हाँ अगर कोई व्यक्ति बीमार या मुसाफ़िर है तो उसे अनुमति है कि बीमारी के दिनों या सफ़र के दौरान रोज़े ना रखकर बाद में छूटे हुए रोज़ों की कज़ा करे। बीमारी या सफ़र की वजह से रोज़ा ना रखने की इज़ाज़त और बाद में उसकी कज़ा करने को अल्लाह तआला ने फ़रमाया: अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी का मामला करना चाहता है और तुम्हारे लिए मुश्किल पैदा नहीं करना चाहता। इसी तरह वह बूढ़ा व्यक्ति जो रोज़ा रख ही नहीं सकता है उसको पहली आयत (184) में अल्लाह तआला ने इज़ाज़त दी की वह रोज़ा ना रखे बल्कि हर रोज़े के बदले में एक मिस्कीन को खाना खिलाये।

मालूम हुआ कि आसानी का मतलब हरगिज़ यह नहीं कि हम जो चाहें करें, कभी ज़कात की अदायगी की और कभी नहीं, बल्कि दीन में आसानी का मफ़हूम यह है कि कुरआन और हदीस का कोई भी हुक्म इन्सान की ताक़त के बाहर नहीं है, जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान है: अल्लाह किसी भी व्यक्ति को उसकी ताक़त से ज़्यादा ज़िम्मेदारी नहीं सौंपता। (सूरह अलबक्रा 286) मिसाल के तौर पर अल्लाह तआला ने हर मुसलमान पर रोज़ाना पांच नमाज़ों

की अदायगी फ़र्ज़ की है, चाहे मर्द हो या औरत, ग़रीब हो या मालदार, सेहतमंद हो या बीमार, ताक़तवर हो या कमज़ोर, बूढ़ा हो या नौजवान, मुसाफ़िर हो या मुक़ीम (अपनी जगह पर हो), बादशाह हो या गुलाम यहाँ तक कि जिहाद और लड़ाई के मौक़े पर मैदाने जंग में भी यह फ़र्ज़ माफ़ नहीं होता है। हाँ यह आसानी है कि अगर कोई व्यक्ति खड़े होकर नमाज़ अदा नहीं कर सकता है तो वह बैठकर पढ़े, अगर बैठकर भी नहीं पढ़ सकता तो लेटकर अदा करे। अगर मरीज़ क़िबले की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ सकता है तो उसको क़िबला की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़नी चाहिए, लेकिन अगर किसी परेशानी या रूकावट की वजह से क़िबले की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ना मुमकिन नहीं है तो जिस तरफ़ मुमकिन हो रुख़ करके नमाज़ पढ़ ले। इसी तरह मर्द को चाहिए कि वह फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद जाकर जमाअत के साथ अदा करे, लेकिन उज़्र (बीमारी) की वजह से घर पर भी तन्हा नमाज़ पढ़ सकता है। नमाज़ के लिए वुज़ू ज़रूरी है, लेकिन अगर कोई बीमार वुज़ू नहीं कर सकता है तो वह तय्यम्मुम करके नमाज़ पढ़े। वुज़ू में जो आज़ा (अंग) धोए जाते हैं अगर उस जगह पर पट्टी बंधी हुई है तो वुज़ू की सूरत में जिस जगह पर पट्टी बंधी हुई है उस जगह पर गीले हाथ से मसह कर ले, बाक़ी आज़ा (अंग) को धोले। आसानी का मतलब हरगिज़ यह नहीं कि वह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखों की ठंडक यानि नमाज़ ही ना पढ़े। इसी तरह ज़कात के फ़र्ज़ होने पर ज़कात की अदायगी तो करनी है, लेकिन अगर माल ज़कात के वाजिब होने के लिए ज़रूरी निसाब तक नहीं पहुंचाया निसाब से तो ज़्यादा है लेकिन उस पर एक साल नहीं गुज़रा या उधार मौजूदा माल से भी ज़्यादा है

तो ज़कात वाज़िब नहीं। इसी तरह शरीअते इस्लामिया में आमदनी पर ज़कात नहीं लगायी गयी, यानि इन्सान अपने और घर वालों की ज़रूरत, इसी तरह घर के सामान और बच्चों की तालीम पर जो रक़म खर्च करता है उस पर कोई ज़कात नहीं है। बल्कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अगर कोई व्यक्ति अपने घर वालों पर खर्चा करता है तो वह भी सद्का है यानि उस पर भी अज़्र (सवाब) मिलेगा। (बुखारी और मुस्लिम)

उम्मतु मुस्लिमा का इत्तेफ़ाक़ है कि हर बालिग़ मर्द और औरत को माहे रमज़ान के रोज़े रखना ज़रूरी है, लेकिन बीमार और मुसाफ़िर के लिए इज़ाज़त है कि वह रोज़ा ना रखकर बाद में क़ज़ा करे, इसी तरह इन्तहाई बूढ़े व्यक्ति के लिए इज़ाज़त है कि रोज़ा ना रखकर हर रोज़े के बदले में सद्क़ए फ़ितर की मिक़दार सद्का निकाले। नमाज़, रोज़ा और ज़कात की तरह हज़ भी इस्लाम का एक रुक्न है। उम्र में एक बार सिर्फ़ उसी व्यक्ति पर फ़र्ज़ है जिसको अल्लाह तआला ने इतना माल दिया हो कि अपने घर से मक्का मुकर्रमा तक आने जाने पर कादिर हो और अपने घर वालों के खर्च वापसी तक बर्दाश्त कर सकता हो। जैसा कि फ़रमाने इलाही है: लोगों पर अल्लाह तआला का हक़ है कि जो उसके घर तक पहुंचने की ताकत रखता हो वह उसके घर का हज़ करे। (सूरह आले इमरान 97)

दीन के बुनियादी अरकान को मिसाल देकर समझाया गया कि दीने इस्लाम में आसानी का मतलब अपनी ख़्वाहिशात की इत्तेबा नहीं जैसा कि ला मज़हब लोग समझते हैं, बल्कि अल्लाह के अहकाम को नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके पर बजा लाने का नाम ही दीन है, चाहे उसके लिए कुछ तकलीफ़ें बर्दाश्त करनी

पड़े। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जहन्नम (नरक) ख्वाहिशाते नफ़सानी से ढक दी गयी है और जन्नत मुश्किलात और कठिनाइयों से ढकी हुई है। (बुखारी) इन्सान अगर उखरवी ज़िन्दगी में कामयाब होना चाहता है जो यकीनन हर व्यक्ति की इच्छा है, तो उसे चाहिए कि वह अपनी इच्छाओं पर अमल छोड़कर अल्लाह के अहकाम के मुताबिक और हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारे, यानि उखरवी कामयाबी के लिए केवल एक ही रास्ता है और वह है दीने इस्लाम को अपनाना। दीने इस्लाम पर अमल करना आसान ज़रूर है, यानि इन्सान के लिए उसकी ताकत से बाहर किसी अमल को अनिवार्य नहीं बनाया गया है, लेकिन यह बात यकीनी है कि दीने इस्लाम के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारने में दुश्वारियाँ ज़रूर आती हैं, मसलन फ़ज़ की नमाज़ की अदायगी के लिए यकीनन सुबह को गहरी नींद आने के बावजूद उठना पड़ता है, सर्दी के बावजूद वुज़ करना पड़ता है और मस्जिद में जाकर नमाज़ अदा करनी होती है। माल की मोहब्बत और ज़रूरत के बावजूद ज़कात के फ़र्ज़ होने पर उसकी अदायगी करनी होती है। रोज़ा रखने में भूक प्यास बर्दाश्त करनी पड़ती है, गर्ज़ कि हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी में कामयाबी हासिल करने के लिए अहकामे इलाही पर अमल करना ज़रूरी है, चाहे उसके लिए मुश्किलात और दुश्वारियों का सामना करना पड़े। हाँ यह बात पक्की है कि दीन सिर्फ़ इबादात का नाम नहीं। इबादात यानि नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज वगैरह की अदायगी दीने इस्लाम का एक अहम हिस्सा ज़रूर हैं, लेकिन दीन के दुसरे भाग मसलन व्यवहार और रहन सहन में भी शरीअते इस्लामिया की

तालीमात पर अमल करना ज़रूरी है। कुछ हज़रात इबादात में तो फराइज़, वाजिबात, सुन्नत और नवाफ़िल का मुकम्मल एहतमाम करते हैं, लेकिन मामलात में अल्लाह तआला के अहकाम को भूल जाते हैं, इसलिए नमाज़ और रोज़ा की पाबंदी के बावजूद कारोबार में झूठ बोलकर लोगों को धोखा देते हैं, रिश्वत लेते हैं। इसी तरह कुछ हज़रात दूसरों के साथ बर्ताव करने में इस्लामी तालीमात को नज़र अन्दाज़ करते हैं। दूसरी तरफ़ उम्मत मुस्लिमा का एक तबक्का ऐसा भी है जो दीन के सभी भागों में इस्लामी तालीमात से दूर रहने के बावजूद दूसरों खासकर नमाज़ और रोज़ा की पाबंदी करने वालों पर एतराज़ात करने को ही अपने लिए दीने इस्लाम की खिदमत समझता है।

अल्लाह की इताअत में हमें मध्य मार्ग इख्तियार करना चाहिए, यानि अल्लाह के हुक्क की अदायगी के साथ हमें लोगों के हुक्क में भी कोई सुस्ती नहीं करनी चाहिए। नमाज़ और रोज़ा की पाबंदी के साथ बीवी, बच्चों, दूसरे घर वालों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों और दोस्तों सबका ख़याल रखना चाहिए, क्योंकि दीने इस्लाम में रहबानियत नहीं है, यानि यह दीन नहीं कि हम जिस समाज में रह रहे हैं उसको छोड़कर सिर्फ़ मस्जिद के एक कोने में बैठकर अल्लाह का ज़िक्र करें। यकीनन कुरआने करीम के एलान के मुताबिक़ अल्लाह तआला के ज़िक्र से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है और ज़िक्र ना करने वालों को नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुर्दों के जैसा बताया है। लेकिन अल्लाह की मखलूकात और दुनियावी सामान का जायज़ इस्तेमाल करके समाज में अपना मक़ाम बनाना और दुनियावी तालीम हासिल करके हर जगह अपनी प्रतिनिधित्व को

यकीनी बनाना भी तो दीन है। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चंद फ़रमान पेश हैं जिनसे इस विषय पर खासी रहनुमाई मिलती है।

हज़रत अनस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि तीन आदमी हुज़ूर अकरम की बीवियों के घर पर तशरीफ़ लाये और उनसे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत के मुतअल्लिक सवाल किया। जब उनको इत्तला दी गयी तो उन्होंने उस को बहुत कम समझा और कहने लगे हम कहाँ और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहाँ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तो अगले पिछले सब गुनाह (अगर होते भी तो) माफ़ कर दिये गये हैं। उनमें से एक ने कहा: मैं हमेशा सारी रात नमाज़ पढ़ूंगा। दूसरे व्यक्ति ने कहा: मैं हमेशा रोज़े रखूंगा। तीसरे ने कहा: मैं औरतों से दूर रहूंगा और कभी सोहबत ना करूंगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उनके पास तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया: तुम वह लोग हो जिन्होंने इस इस तरह कहा? अल्लाह की कसम! मैं तुम में सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला से डरने वाला हूँ और तुम में सबसे ज़्यादा उसका डर रखने वाला हूँ, लेकिन मैं रोज़ा रखता हूँ और इफ़्तार भी करता हूँ। नमाज़ पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ और औरतों से हमबिस्तरी भी करता हूँ। पस जिसने मेरी सुन्नत से एराज़ किया (मुंह मोड़ा) वह मुझ से नहीं। (बुखारी और मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ लाये और उन (हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु अन्हा) के पास एक औरत बैठी थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा यह कौन हैं? मैंने जवाब

दिया यह फलां औरत हैं जिसकी नमाज़ का चर्चा किया जाता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बस ठहरो! तुम वह चीज़ लाज़िम पकड़ो जिसकी तुम्हें ताक़त हो। अल्लाह की क़सम अल्लाह तआला नहीं उकताते बल्कि तुम उकता जाओगे। अल्लाह तआला को वह इताअत ज़्यादा महबूब है जिसको करने वाला इस पर निरंतरता इख़्तियार करे। (बुख़ारी और मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: दीन में बेजा तशद्दुद करने वाले हलाक हो गये। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बात तीन बार इरशाद फ़रमायी। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हु़रैरा रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: दीन आसान है और जो कोई बेज़ा ज़्यादती दीन में इख़्तियार करता है दीन उस पर ग़ालिब आ जाता है। पस तुम मध्य सही रास्ता इख़्तियार करो और खुश हो जाओ, सुबह और शाम और रात को कुछ हिस्से की इबादत से मदद हासिल करो। (बुख़ारी) हज़रत अनस रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाये तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो सुतूनों के बीच एक रस्सी बंधी हुई पायी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि यह रस्सी कैसी है? उन्होंने ने बतलाया ज़ैनब की रस्सी है। जब थक जाती हैं तो उससे सहारा लेती हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: इसको खोल डालो, हर कोई तबीयत की सक्रियता की हालत में नमाज़ (तहज्जुद) पढ़े, जब सुस्ती पैदा हो जाये तो सो जाये। (बुख़ारी और मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुतबा इरशाद फ़रमा रहे थे। अचानक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाह एक खड़े आदमी पर पड़ी। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके बारे में पूछा। सहाबाए किराम ने बताया कि यह अबू इस्राईल है जिसने नज़र मानी है कि धूप में खड़ा रहेगा और बैठेगा नहीं और ना साया लेगा और ना किसी से बात करेगा और रोज़ा रखेगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: उसको कह दो कि वह बात कर ले और साए में हो जाये और बैठ जाये और रोज़ा को मुकम्मल करे। (बुखारी)

खुलासए कलाम यह है कि हमें ज़िन्दगी के सभी भागों में शरीअते इस्लामिया पर अमल करना है, जैसा कि फ़रमाने इलाही है: ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे के पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के नक्शे कदम पर ना चलो। यकीन जानो वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (सूरह अलबकरा 208) इसलिए जहां हमें मस्जिदों को आबाद करना है वहीं बाज़ारों में भी इस्लामी तालीमात पर अमल करना है और अपने अखलाक को बेहतर बनाना है। मदरसों के निर्माण के साथ स्कूलों के निर्माण की भी कोशिश करनी है। अपने बच्चों को कुरआन और हदीस की तालीम के साथ दुनियावी उलूम पढ़कर समाज को शिक्षित बनाने के लिए बहुत मेहनत करनी है। अल्लाह तआला के अहकाम पर अमल करके बुरे कामों से बचना है, ताकि मरने के बाद वाली ज़िन्दगी में हमेशा हमेशा की कामयाबी हासिल हो। अहकामे इलाही पर अमल करना और बुराइयों से बचना अल्लाह के डर के साथ यकीनन आसान है।

इस्लामी शिक्षाओं का पालन करके ही रेप जैसे घिनौने अपराध से छुटकारा मुमकिन है

निकाह के बिना किसी पुरुष और महिला का शारीरिक संबंध बनाना यानी संभोग करना (Intercourse) व्यभिचार (ज़िना) कहलाता है, चाहे वह दोनों ओर की अनुमति से ही क्यों न हो। असल में व्यभिचार (ज़िना) निकाह के बिना पुरुष के गुप्तांगों का महिला के गुप्तांगों में प्रवेश (दाखिल) होने का नाम है, लेकिन जीवन साथी (पति और पत्नी) के अलावा किसी भी पुरुष और महिला का एक दूसरे को काम-वासना की नज़र से देखना, एक दूसरे से सेक्सी बातचीत करना, या एक दूसरे का अकेले में मिलना, या एक दूसरे को छूना या चूंबन लेना भी हराम है। इन सब कार्यों को सारे नबियों के सरदार हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने व्यभिचार (ज़िना) की एक किस्म करार दिया है, हालांकि इन कार्यों की वे कठोर सज़ा नहीं है जो असल व्यभिचार (ज़िना) की है।

कत्ल, जुल्म, झूठ, धोखाधड़ी और चोरी की तरह व्यभिचार (ज़िना) भी एक ऐसा घिनौना अपराध है कि सभी धर्मों में न सिर्फ सख्ती के साथ इस घिनौने अपराध से मना किया गया है, बल्कि व्यभिचार करने वाले मर्द और औरत के लिए कठोर से कठोर सज़ा भी निर्धारित की गई है। न केवल इस्लाम में बल्कि इसाई और यहूदी धर्म में भी इस घिनौने अपराध के अपराधियों की सज़ा रजम (पत्थरबाज़ी) है। यह ऐसा जुर्म है कि दुनिया में इस से ज़्यादा बड़ी सज़ा किसी दूसरे जुर्म की निर्धारित नहीं की गई, क्योंकि दुनिया के वुजूद (अस्तित्व) से लेकर आज तक सभी मानव समाज ने इस

अपराध पर न केवल लानत भेजी है, बल्कि ऐसे कार्यों से बचने की शिक्षा भी दी है, जो व्यभिचार (ज़िना) की तरफ ले जाने वाले हों।

इंसानी फ़ितरत (प्रकृति) भी खुद व्यभिचार (ज़िना) के हाराम होने की मांग करती है, अन्यथा इन्सान जिसे अल्लाह तआला ने अशरफ़-उल-मखलूक़ात बनाया है वह जानवरों की लाइन में खड़ा हो जाएगा। दुनिया की सलामती भी इसी में है कि व्यभिचार (ज़िना) को हाराम करार दिया जाए और इसके अपराधियों को इबरतनाक सज़ा दी जाए। सभी पक्षियों, चरिन्दों, पशुओं और अल्लाह के अन्य प्राणियों पर शासन करने वाले इन्सान केवल सेक्स को पूरा करने के लिए इस सांसारिक जीवन को बिताने लगे कि जब चाहा और जिस से चाहा आनंद लिया तो मानव सभ्यता ही समाप्त हो जाएगा, क्योंकि मर्द और औरत में निकाह के कार्य (अमल) के बाद के परिणाम (नतीजे) में अल्लाह के हुक्म से संतान (औलाद) पैदा होती, माता पिता उसे अपनी औलाद और भविष्य का सहारा समझ कर उनके लिए सभी समस्याओं और परेशानियों का सामना करते हैं, उनकी शिक्षा और तरबियत (प्रशिक्षण) का इन्तिज़ाम करते हैं, साथ ही दूसरों को यह पता चलता है कि यह किसका बच्चा या बच्ची है तो रिश्तेदारी बनती है और पड़ोस बनता है जिस से एक दूसरे के अधिकार (हूकूक) मालूम होते हैं जिसकी वजह से एक समाज बनता है, अगर इंसानों को भी जानवरों की तरह आज़ाद छोड़ दिया जाता तो मानव सभ्यता समाप्त होकर यह दुनिया बहुत पहले ही ख़त्म हो चुकी होती।

इस्लाम ने केवल ज़िना (व्यभिचार) को हाराम ही करार नहीं दिया बल्कि अल्लाह तआला ने हुक्म (आदेश) दिया कि ज़िना (व्यभिचार) के पास भी न जाओ, वह निश्चित रूप से बड़ी बेहयाई है। (सूरह-ए-

इसरा: 32) इस आयत में अल्लाह तआला ने ज़िना (व्यभिचार) को फ़ाहिशह (बेहयाई) करार दिया है। **(सूरह-अल-अनाम: 151)** में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि बेहयाई (फ़वाहिश) के कामों के पास भी न जाओ, चाहे वह बेहयाई खुली हुई हो या छुपी हुई। **(सूरह-अल-आराफ़: 33)** में फ़वाहिश (बेहयाई) के कामों को ह़राम करार देकर इरशाद फ़रमाता है, “कह दो कि मेरे रब ने तो बेहयाई के कामों को ह़राम करार दिया है, चाहे वह बेहयाई खुली हुई हो या छुपी हुई”। **(सूरह-अल-फ़ुरक़ान: 67)** में ईमान वालों की विशेषताओं को बयान करते हुए अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है, “और वह न ज़िना (व्यभिचार) करते हैं, जो व्यक्ति भी यह काम करेगा उसे अपने गुनाह (ज़ुर्म) के बवाल का सामना करना पड़ेगा, क़यामत के दिन उसका अज़ाब (सज़ा) बढ़ाकर दोगुना कर दिया जाएगा और वह ज़लील होकर उस अज़ाब (सज़ा) में हमेशा हमेशा रहेगा”।

व्यभिचार (ज़िना) बहुत बड़ा गुनाह है:

क़ुरआन करीम के बाद सबसे शुद्ध और विश्वसनीय किताब सही बुख़ारी की हदीसों में से कुछ हदीसें पेश हैं, ताकि मौजूदा ज़माने में फैले हुए इस गुनाह (ज़ुर्म) से ख़ुद को और दूसरों को बचाना संभव हो सके। हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “क़यामत की शर्तों में से यह है कि इल्म उठ जाएगा, जहालत फैल जाएगी, शराब पी जाने लगेगी और ज़िना (व्यभिचार) फैल जाएगा”। **(बुख़ारी)** हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “बंदा जब ज़िना (व्यभिचार) करता है तो मोमिन रहते हुए वह ज़िना (व्यभिचार) नहीं करता”। **(बुख़ारी)**, यानि ईमान

की नेअमत उस समय छीन ली जाती है या ईमान का तकाज़ा है की कोई भी व्यक्ति ज़िना (व्यभिचार) न करे, या वह व्यक्ति पूरा मोमिन नहीं जो ज़िना (व्यभिचार) करे। हाँ! कुरान और हदीस की रोशनी में पूरी उम्मत-ए-मुस्लिमा का इत्तिफ़ाक़ है कि दुनिया में तौबा करने से शिर्क (यानि अल्लाह तआला का शरीक मानना) भी माफ़ हो जाता है।

“हज़रत जरीर रज़ीयाल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कबीला-ए-असलम के एक साहब नबी-ए-अकरम के पास आए और ज़िना (व्यभिचार) को स्वीकार किया लेकिन हूज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उनकी तरफ से चेहरा फेर लिया, जब उन्होंने चार बार अपने लिए गवाही दी तो हूज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया: क्या तुम पागल हो गए हो? उन्होंने कहा नहीं, फिर आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने पूछा: क्या तुम शादीशुदा हो? उन्होंने कहा: हाँ। आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के हुक़म से उन्हें ईदगाह में रज्म (पत्थर से मारना) किया गया। जब उन पर पत्थर पड़े तो वह भाग पड़े, लेकिन उन्हें पकड़ लिया गया और रज्म (पत्थर से मारना) किया गया, यहाँ तक कि वह मर गए, फिर हूज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने भलाई के साथ उनका ज़िक्र फ़रमाया और उनकी नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ी”। (बुखारी)

ज़िना (व्यभिचार) और अश्लीलता के कारण:

नामहरम को बेवजह देखना: हूज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आँखों का “ज़िना” बुरी नज़र है और

कानों का “ज़िना” गलत बात सुनना है और ज़बान का “ज़िना” गलत बात बोलना है और हाथ का “ज़िना” गलत चीज़ को पकड़ना है और पैर का “ज़िना” बुरे इरादे से चलना है। और दिल ख्वाहिश (इच्छा) और तमन्ना (आकांक्षा) करता है और फिर शर्मगाह (गुप्तांग) उसकी तसदीक (पुष्टि) या तकज़ीब (इंकार) करती है”। (बुखारी)

गैरमहरम से बातें करना: अल्लाह तआला ने क़ुरान-ए-करीम में औरतों को हुक्म दिया कि अगर उन्हें किसी गैरमहरम से बात करने की ज़रूरत पेश आए तो अपनी आवाज़ में लोच और नरमी पैदा न होने दें और न ही अल्फ़ाज़ (शब्दों) को बना संवार कर बातें करें। इरशाद-ए-बारी है: “और न ही चबाकर बातें करो कि जिसके दिल में रोग (बीमारी) हो वह तमन्ना (आकांक्षा) करने लगे और तुम माकूल (उचित) बात करो”। (सुरह अल-अहज़ाब: 4) औरत की आवाज़ हालांकि सतर (छुपाने की चीज़) नहीं है, यानि ज़रूरत के मुताबिक औरत गैरमहरम से बात कर सकती है, मगर इस हकीकत का इंकार नहीं किया जा सकता कि अल्लाह तआला ने फ़ितरी तौर (स्वाभाविक रूप) से औरत की आवाज़ में कशिश (आकर्षण) रखी है, इसीलिए औरत को फ़ुक्कहा ने अज़ान देने से मना किया है, नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना किया है मर्द (पति) अपनी पत्नी के अलावा किसी दूसरी औरत के सामने नरमी से बातचीत करे जिस से औरत को मर्द में रुचि पैदा हो जाए। (अल-निहाया) इन दिनों सोशल मीडिया के ज़माने में गैरमहरमों से चेटिंग करना, तरह तरह की तस्वीरें शेयर करना और ऑनलाइन बातचीत करना काफी आम हो गया, यह बहुत ख़तरनाक बीमारी है, इस से अपने बच्चों और बच्चियों को जहाँ तक हो सके महफूज़ रखने की

कोशिश करना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि यही वह रास्ते हैं जिनके ज़रिए ऐसी घटनाएं घटती हैं जिनसे न सिर्फ़ घर और खानदान की बदनामी होती है, बल्कि आखिरत (भविष्य) में भी दर्दनाक अज़ाब होता है।

देरी से शादी करना: हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “ऐ नौजवानों! तुम में से जो जिस्मानी और माली इस्तिताअत (शारीरिक योग्यता और वित्तीय क्षमता) रखता है तो वह तुरंत शादी करले, क्योंकि शादी करने से निगाहों और शर्मगाहों (गुप्तांगों) की हिफ़ाज़त हो जाती है”। (बुख़ारी), इन दिनों कॉलेज और युनिवर्सिटी में शिक्षा हासिल करने की वजह से शादी में आमतौर पर देरी हो जाती है, लेकिन फिर भी हम से जहाँ तक हो सके बच्चों और बच्चियों की शादी में ज़्यादा देरी नहीं करनी चाहिए।

अजनबी मर्द और औरत का मेल जोल: हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “जब औरत घर से बाहर निकलती है तो शैतान उसकी ताक में रहता है”। (तिरमिज़ी), इसी तरह हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “जब अजनबी मर्द और औरत एक जगह तन्हाई (अकेले) में जमा होते हैं तो इनमें तीसरा व्यक्ति शैतान होता है जो उनको गुनाह पर आमादा (तय्यार) करता है”। (मुस़नद अहमद)

इन दिनों स्कूलों, कॉलेजों और युनिवर्सिटीयों में एक साथ तालीम हासिल करने (शिक्षा पाने) की वजह से अजनबी पुरुष (मर्द) और महिला (औरत) का मेल जोल बहुत आम हो गया है तथा औरतों (महिलाओं) का नौकरी करने का मिज़ाज रोजाना बढ़ता जा रहा है। महिलाएँ बेशक शरई पाबंदियों के साथ क़ुरान और हदीस की तालीम (शिक्षा) के साथ दुनयावी (सांसारिक) ज्ञान प्राप्त कर सकती हैं, इसी

तरह नौकरियां और कारोबार भी कर सकती हैं, लेकिन तजरबात (अनुभवों) से मालूम होता है की दुनिया में प्रचलित वर्तमान शिक्षा प्रणाली (तालीमी निज़ाम) और कार्यालयों में काम करने वाली बेशुमार (अनगिनत) महिलाएँ यौन शोषण का शिकार हो जाती हैं। मेरे कहने का उद्देश्य यह नहीं कि हम अपनी बच्चियों को उच्च शिक्षा न दिलाएं, या औरतों का नौकरी करना हुराम है, लेकिन ज़मीनी वास्तविकताओं से हम इनकार नहीं कर सकते। इसीलिए जहाँ तक हो सके बच्चों और बच्चियों की तालीम (शिक्षा) के लिए सुरक्षित संस्थाओं को अपनाएं, क्योंकि बहरहाल इस दुनिया को अलविदा कह कर एक दिन अल्लाह तआला के सामने खड़े होकर दुनियावी ज़िन्दगी (सांसारिक जीवन) का हिसाब देना है।

ज़िनाकारी (व्यभिचार) से बचने का महत्व (अहमियत):

हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: (क़यामत के दिन गर्मी अपने शबाब पर होगी और हर आदमी को मुश्किल से दो क़दम रखने के लिए जगह मिलेगी, मगर इस सख़्त परेशानी के वक़्त भी “सात किस्म के लोग हैं जिनको अल्लाह तआला अपनी (रहमत के) साए में जगह अता फ़रमाएगा और उस दिन उसके साए के अलावा कोई साया न होगा, इन सातों आदमियों में से एक आदमी वह है जिसे ख़ूबसूरत और अच्छे ख़ानदान की लड़की बदकारी (ज़िना) की दावत दे तो वह कहे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ”। (बुख़ारी) हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “जिसने मुझे अपने दोनों टांगों के बीच (शर्मगाह)

की और अपने दोनों जबड़ों के बीच (ज़बान) की ज़मानत दी यानी हिफ़ाज़त की, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत दूंगा”। (बुखारी)

रिश्ते से पहले लड़के और लड़की का एक दूसरे को अन्य लोगों की मौजूदगी में देखने और ज़रूरत के मुताबिक़ बात करने की शर्ई तोर पर इजाज़त है, लेकिन रिश्ते के बाद निकाह के बिना लड़के और लड़की का साथ सफ़र करना या तन्हाई में मिलना जाइज़ नहीं है, हाँ अगर निकाह हो चुका है, लेकिन रुख़सती नहीं हुई, तो शर्ई तोर पर दोनों का मिलना और बातचीत करना सबकी अनुमति है।

ज़ानी (व्यभिचार करने वाले) की सज़ा:

सुरह-अल-नूर (आयत: 1 से लेकर 9 तक) में “ज़िना” (व्यभिचार) करने वालों की सज़ा और उसके बारे में कुछ अहक़ाम (आदेश) बयान करते हुए अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “यह एक सूरत है जो हमने नाज़िल (उतारी) की है और जिसके अहक़ाम (आदेश) को फ़र्ज़ किया है और इसमें खुली-खुली आयतें नाज़िल की हैं ताकि तुम नज़ीहत हासिल करो। “ज़िना” (व्यभिचार) करने वाली औरत और “ज़िना” (व्यभिचार) करने वाले मर्द दोनों को सौ (100) कोड़े लगाओ”। आगे आने वाली आयात का मफ़हूम (अर्थ) यह है कि जो व्यक्ति बदकारी का आदी हो और तौबा न करता हो, मगर किसी वजह से उस पर ह़द (सज़ा) जारी नहीं हो रही है, तो उसका निकाह पाकदामन औरत के साथ न किया जाए। “ज़िना” (व्यभिचार) की ह़द (सज़ा) जारी करने के लिए ज़रूरी है कि वह इस बड़े जुर्म (गुनाह) को खुद स्वीकार करे, या फिर चार गवाह इस बात की गवाही दें कि उन्होंने दोनों को इस हालत में पाया है कि एक की शर्मगाह

(गुप्तांग) दूसरे की शर्मगाह (गुप्तांग) में मौजूद थी, चूँकि किसी मर्द या औरत को “ज़िना” (व्यभिचार) जैसे बड़े गुनाह का मुर्ताकिब (दोषी) करार (ठहराने) देने पर सख्त सज़ा दी जाती है, इसलिए सिर्फ़ दो काफ़ी नहीं हैं, बल्कि चार गवाहों की गवाही को लाज़िम (ज़रूरी) करार दिया गया, और इन गवाहों को भी यह मालूम होना चाहिए कि अगर चार गवाहों की गवाही साबित नहीं हो सकी तो तोहमत (आरोप) लगाने वालों पर अस्सी (80) कोड़े मारे जाएँगे।

कुरान-ए-करीम हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल फ़रमाकर अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह ज़िम्मेदारी अता की कि वह कुरान-ए-करीम के मसाइल (अहकाम) को खोल-खोल कर बयान फ़रमाएँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कौल (बात) और अमल (कार्य) बयान फ़रमाया कि सुरह-अल-नूर में वारिद (आई हुई) “ज़िना” (व्यभिचार) की हद (सज़ा) उस मर्द और औरत के लिए है जिसने अभी तक शादी नहीं की है और “ज़िना” (व्यभिचार) का खुद स्वीकार किया है, या चार गवाहों की कुछ शर्तों के साथ गवाही से यह बात साबित हुई है, यानि उसको सौ (100) कोड़े मारे जाएँ।

फजिल्दू: “जल्द” शब्द का अर्थ “कोड़े मारने” के हैं, वह “जिल्द” से बना है, क्योंकि कोड़ा आम तौर पर चमड़े से बनाया जाता है। कुछ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि “जल्द” शब्द से ताबीर (बयान) करने से इस तरफ़ इशारा है कि यह कोड़ों की सज़ा इस हद तक होनी चाहिए कि इसका असर इन्सान की खाल तक रहे, गोश्त तक न पहुंचे। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद कोड़े के बारे में अमलन यह तलक़ीन फरमाई कि कोड़ा न बहुत सख्त हो, जिससे

गोश्त तक उधड़ जाए और न बहुत नरम हो कि इसकी कोई तकलीफ भी न पहुंचे, लेकिन अगर “ज़िना” (व्यभिचार) करने वाला शादीशुदा है, तो नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने कौल और अमल से बताया कि उसकी सज़ा “रजम” (पत्थर बाज़ी) है, यानी शरई सुबूत के बाद शादीशुदा “ज़ानी” को जिंदा ज़मीन में इस तरह गाड़ा जाए कि उसका आधा निचला हिस्सा ज़मीन में हो और जिस्म का उपर वाला आधा हिस्सा बाहर हो, फिर चारो तरफ से उस पर पत्थर बरसाए जाएँगे, यहाँ तक कि वह मर जाए, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी शादीशुदा व्यक्ति के “ज़िना” (व्यभिचार) करने पर “रजम” (पत्थर बाज़ी) ही किया। हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कौल और अमल और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के अमल पर पूरी उम्मत-ए-मुस्लिमा का इत्तिफ़ाक़ है कि चार गवाहों की गवाही के बाद शादीशुदा “ज़ानी” को “रजम” (पत्थर बाज़ी) ही किया जाएगा। अगर “ज़िना” (व्यभिचार) हो जाए तो ज़ाहिर है की आम तोर पर दुनिया में इस्लामी हूकूमत न होने की वजह से हद जारी नहीं की जा सकती, लेकिन पहली फुरसत में तौबा करनी चाहिए और पूरी ज़िंदगी इस बड़े जुर्म (गुनाह) पर अल्लाह तआला के सामने रोना और गिड़गिड़ाना चाहिए, ताकि अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा दे और आईदा “ज़िना” (व्यभिचार) के क़रीब भी न जाना चाहिए, क्योंकि “ज़िना” (व्यभिचार) करने वाले व्यक्ति से अल्लाह तआला बात भी नहीं फ़रमाएँगे और उसे जहन्नम (नरक) में डाल देंगे अगर “ज़िना” (व्यभिचार) से सच्ची तौबा नहीं की।

**ऐ इंसान! जुल्म (अत्याचार) से रुक जा,
वरना (अन्यथा) अल्लाह की पकड़ बहुत सख्त (कठोर) है**

जुल्म (अत्याचार) क्या है?: किसी चीज़ को उसकी जगह से हटाकर रखने और हृद से आगे बढ़ने को जुल्म (अत्याचार) कहते हैं। यानी अगर कोई व्यक्ति किसी दूसरे के माल या ज़मीन पर अवैध कब्ज़ा कर ले तो वह जुल्म (अत्याचार) है, क्योंकि इसमें माल या ज़मीन पर असल मालिक का हक़ (अधिकार) छीन लिया जाता है। इसी तरह शिर्क करना भी जुल्म है, क्योंकि इसमें अल्लाह का हक़ मारा जाता है, अल्लाह तआला का हक़ यह है कि इबादत में उसके साथ किसी को शरीक (साथी) न किया जाए। किसी को नाहक़ क़त्ल करना, किसी को गाली देना या बुरा भला कहना या किसी को तकलीफ़ देना या किसी का हक़ अदा न करना या कुदरत (क्षमता) के बावजूद कर्ज़ की अदाएगी (भुगतान) में ढाल मटोल करना भी जुल्म है।

जुल्म (अत्याचार) हराम (वर्जित) है: कुरान और हदीस की स्पष्ट शिक्षाओं के अनुसार पूरी उम्मत-ए-मुस्लिमा की सहमती है कि जुल्म हराम है, और सात बड़े तबाह करने वाले गुनाहों में से ज़्यादातर का संबंध जुल्म (अत्याचार) ही से है। ज़ालिम (अत्याचारी) क़यामत के दिन अपमानजनक अंधेरों में होगा और ज़ालिमों को जहन्नम (नरक) की दहकती हुई आग में डाला जाएगा। क़यामत के दिन ज़ालिमों से मज़लूमों (पीड़ितों) के हुक्क़ (अधिकार) अदा कराए जाएंगे, यहाँ तक कि सींग वाली बकरी से बग़ैर सींग वाली बकरी को बदला दिलाया जाएगा अगर उसने बग़ैर सींग वाली बकरी को दुनिया में मारा होगा।

शरीयत-ए-इस्लामिया ने न केवल जुल्म की हुरमत (निषिद्धता) और नहूसत (दुर्भाग्यता) का बार बार उल्लेख किया है और इसके बुरे अंजाम से चेतावनी दी है, बल्कि पीड़ितों की सहायता करने की शिक्षा और प्रेरणा भी दी है, और पीड़ितों की बददुआ से भी बहुत ज़्यादा बचने को कहा गया है, क्योंकि पीड़ित की बददुआ अल्लाह के दरबार में रद्द नहीं की जाती।

अकल की मांग भी यही है कि जुल्म (अत्याचार) को हुराम (वर्जित) करार देकर सबके साथ इंसाफ़ और बराबरी की जाए और ज़ालिमों को सख़्त (कठोर) से सख़्त (कठोर) सज़ा दी जाए, वरना (अन्यथा) ग़रीबों को दो वक़्त (समय) का खाना मिलना भी मुश्किल हो जाएगा। इसी वजह से सभी धर्मों में जुल्म करने से रोका गया है, दुनिया के क़ानून भी इस तरह बनाए गए हैं कि जुल्म (अत्याचार) पर रोक लगाई जा सके, लेकिन हर दौर में कुछ लोग अपने धर्म की शिक्षाओं की धज्जियाँ उड़ाकर कमज़ोरों और ग़रीबों पर जुल्म (अत्याचार) करके अपने बुरे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बेचेन रहते हैं, जिस का ताज़ा उदाहरण बर्मा के बौद्ध धर्म को मानने वाले वह आतंकवादी हैं जो “आंगसानसूकी” की मौजूदा सरकार की सहमती से ग़रीब, कमज़ोर और रोहिंग्या मुसलमानों के क़त्ल-ए-आम पर लगी हुई है। इंसानी हुक्क़ (अधिकार) की अलमबरदार (ठेकेदार) वैश्विक संगठन और दुनिया में शांति के ठेकेदार केवल तमाशाई (दर्शक) बने हुए हैं, और बर्मा सरकार और बौद्धों के खिलाफ़ (विरुद्ध) कोई क़ाबिल-ए-ज़ि़क़्र करवाई नहीं की जा रही है।

बर्मा के पीड़ितों की सहायता करना तो अलग भारत सरकार, एक अरब चौत्तीस करोड़ जनसंख्या वाले देश में केवल चालीस हजार उन बर्मा के रहने वालों को भी भारत से निकालने की सोच रही है जो सड़कों पर कूड़ा करकट उठाकर जिंदा रहने के लिए दो वक़्त (समय) का खाना मुश्किल से खा लेते हैं, हालांकि हिंदू धर्म के मानने वाले दावा करते हैं कि उनकी धार्मिक किताबों में भी पीड़ितों की मदद (सहायता) करने की शिक्षा मौजूद हैं। पूरी दुनिया के इंसान बर्मा के गरीब लोगों पर हो रहे अत्याचार को अपनी आँखों से देख रहे हैं, लाखों लोग अपने घरों को छोड़ कर दर बदर मारे फिर रहे हैं, दुनिया में शांतिपूर्वक लोगों की तरफ़ से इन पीड़ितों की मदद (सहायता) के लिए आवाज़ें उठाई जा रही हैं, लेकिन कोई इनका हाल पूछने वाला नहीं है, मुसलमानों को आतंकवादी समझने वाले देखें कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बर्मा के पीड़ित मुसलमानों के हक़ में प्रदर्शन किए गए, लेकिन अब एक व्यक्ति को भी तकलीफ़ नहीं पहुंचाई गई, क्योंकि इस्लाम तो आया है है दुनिया में शांति और सुरक्षा फैलाने के लिए। भारत सरकार से बर्मा के पीड़ितों की मदद (सहायता) न करने की शिकायत हम कैसे करें, जबकि 50 मुस्लिम देश के नेता बर्मा के पीड़ित मुसलमानों की सहायता के लिए वह ध्यान नहीं दे रहे हैं, जो उनसे इंसानी और शरई ऐतबार से मांग है। स्पेन की मीनारें अज़ान की आवाज़ सुनाने के लिए तरस रही हैं, जहाँ 700 साल (वर्ष) मुसलमानों ने हुकूमत की थी। बर्मा में बौद्धों के रोहिंग्या मुसलमानों पर उत्पीड़न को देख कर इतिहास लिखे जाने का डर है कि बर्मा के रखाइन राज्य में क़त्ल-ए-आम रोहिंग्या पीड़ित और गरीब मुसलमानों

की नस्ल (पीढ़ी) को नष्ट कर दिया गया, जहाँ मुसलमानों ने 354 साल (वर्ष) राज किया था।

माल और पद के मिलने पर इंसान कमज़ोरों पर जुल्म करने लगता है, हालांकि उसे सोचना चाहिए कि पूरी कायनात को पैदा करके पूरी दुनिया के निज़ाम (प्रणाली) को अकेले चलाने वाले ने खुद अपनी ज़ात (अपने आप) से जुल्म करने को मना किया है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “अल्लाह ज़र्रा (कण) बराबर भी किसी भी पर जुल्म नहीं करता”। (सूरह अन्निसा: 40), तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हदीस-ए-कुदसी में इरशाद फ़रमाया: “ऐ मेरे बंदो! मैंने जुल्म को अपने ऊपर भी ह़राम (वर्जित) किया है और तुमहारे ऊपर भी ह़राम (वर्जित) किया है, तो तुम एक दूसरे पर जुल्म न करो। (सहीह मुस्लिम, बाब तहरीमिज्जुल्मी)

जुल्म (अत्याचार) के वर्ग (प्रकार): उलैमा-ए-किराम ने जुल्म की तीन किस्में (वर्ग) बयान की हैं, 1) शिर्क करना, यानी इबादत में अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना। 2) गुनाह करके खुद अपने आप पर जुल्म करना। 3) किसी दूसरे इंसान पर जुल्म करना।

शिर्क करना: हमें ऐसी सभी तरह की चीज़ों से बचना चाहिए जिनमें शिर्क का थोड़ा सी भी संदेह हो, क्योंकि शिर्क को अल्लाह तआला ने सबसे बड़ा गुनाह घोषित किया है। हज़रत लुक्मान हकीम रहिमाहुल्लाहु की अपने बेटे के लिए नसीहत (सलाह) को अल्लाह तआला ने कुरान-ए-करीम में ज़िक्र फ़रमाया है: “वह वक़्त (समय) याद करो जब लुक्मान ने अपने बेटे को नसीहत (सलाह) करते हुए

कहा था: “ऐ मेरे बेटे अल्लाह के साथ शरीक न करना, यकीन जानो शिर्क बड़ा जुल्म है”। (सूरह लुक़्मान: 13), अगर इंसान शिर्क से तौबा के बग़ैर मर जाए तो क़यामत के दिन इस जुर्म-ए-अज़ीम (बड़े गुनाह) से माफ़ी नहीं है, जैसा कि फ़रमान-ए-इलाही है: “बेशक अल्लाह इस बात को पसंद नहीं करता कि उसके साथ किसी को शरीक ठहराया जाए, और इससे कमतर (छोटी) हर बात को जिसके लिए चाहता है माफ़ कर देता है, और जो व्यक्ति अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता है वह ऐसा आरोप लगता है जो एक महा पाप (गुनाह) है”। (सूरह अन्निसा: 48)

गुनाह (पाप) करके अपने आप पर जुल्म (अत्याचार) करना: जिस तरह अल्लाह का आज्ञापालन करने से अल्लाह तआला बन्दों से राज़ी (खुश) होता है, इसी तरह अल्लाह का अनुपालन न करने से अल्लाह तआला बन्दों से नाराज़ होता है, अल्लाह तआला ने इंसान को पैदा करके फ़रमाया: “ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी (पत्नी) जन्नत में रहो, और इसमें से जहाँ से चाहो जी भरकर खाओ, मगर इस पेड़ के पास भी न जाना, वरना (अन्यथा) तुम ज़ालिमों में शुमार (गिने) होगे। (सूरह अलबक्रा: 35), इसी तरह अल्लाह तआला त़लाक़ के मसअले (मुद्दे) को ज़िक्र करके इरशाद फ़रमाता है: “जो लोग अल्लाह के हुदूद (सीमाओं) से आगे बढ़ते हैं वह बड़े ज़ालिम लोग हैं। (सूरह अलबक्रा: 229), “जो कोई अल्लाह की नियुक्त की हुई हुदूद (सीमाओं) से आगे निकलेगा, उसने खुद अपनी जान पर जुल्म किया”। (सूरह त़लाक़: 1).

किसी इंसान का दूसरे इंसान पर जुल्म (अत्याचार) करना: जुल्म की पहली दो किस्मों का संबंध हुक्कुल्लाह (अल्लाह के हुक्क (अधिकार) से है, जबकि तीसरी किस्म का संबंध हुक्कुलइबाद (बन्दों के हुक्क (अधिकार) से है, जुल्म की इस किस्म पर विशेष ध्यान की ज़रूरत है, क्योंकि अल्लाह तआला ने हुक्कुलइबाद (बन्दों के हुक्क (अधिकार) के बारे में अपना क़ानून बयान कर दिया है, कि जब तक बन्दे से मामला साफ़ नहीं किया जाएगा वह माफ़ नहीं करेगा। तो हर मुसलमान को चाहिए कि वह किसी भी इंसान पर किसी भी हाल (परिस्थिति) में जुल्म न करे, बल्कि अपनी क्षमता के अनुसार दूसरों की मदद (सहायता) करे। ज़ालिम को जुल्म करने से समझदारी के साथ रोके और मज़लूम (पीड़ित) के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर खड़ा हो, जैसाकि हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “अपने भाई की मदद (सहायता) करो, चाहे वह ज़ालिम (अत्याचारी) हो या मज़लूम (पीड़ित)। सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने अज़्र किया: या रसूलल्ला! हम मज़लूम (पीड़ित) की तो मदद (सहायता) कर सकते हैं, लेकिन ज़ालिम होने की सूरत में उसकी मदद (सहायता) किस तरह होगी? हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: (ज़ालिम की मदद (सहायता) की सूरत यह है कि उसका हाथ पकड़ लो, यानि उसे जुल्म से रोक दो”। (बुखारी), किसी इंसान के दूसरे व्यक्ति पर जुल्म (अत्याचार) करने की विभिन्न सूरतें हो सकती हैं। कुछ निम्नलिखित हैं:

यतीम (अनाथ) के माल को हड़पना: अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: यकीन रखो कि जो लोग यतीमों (अनाथों) का माल उनपर जुल्म

(अत्याचार) करके खाते हैं, वह अपने पेट में आग भर रहे हैं, और उन्हें जल्दी ही एक दहकती हुई आग में जाना पड़ेगा। (सूरह अन्निः 10), इसी तरह किसी भी इंसान के माल को नाजाइज़ (अवैध) तरीके से हासिल करने के बारे में कुरान और हदीस में सख्त (कठोर) चेतावनी आई हैं।

किसी की ज़मीन पर अवैध कब्ज़ा करना: किसी कमज़ोर या ग़रीब को दबाकर उसकी ज़मीन पर अवैध कब्ज़ा करना भी जुल्म और बहुत बड़ा गुनाह (पाप) है। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “अगर किसी व्यक्ति ने एक बालिशत ज़मीन (पृथ्वी) किसी दूसरे की जुल्म करके ली तो सात ज़मीन का तौक़ (हार) उसकी गर्दन में पहनाया जाएगा। (बुखारी: बाबु इसमी मन ज़लमा शयअम मिनल अर्ज़ी), इसी तरह फ़रमान-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है: “जिस व्यक्ति ने नाहक़ (बग़ैर हक़ के) किसी ज़मीन का थोड़ा सा हिस्सा (भाग) भी लिया तो क़यामत के दिन उसे सात ज़मीनों तक धंसाया जाएगा। (बुखारी: बाबु इसमी मन ज़लमा शयअम मिनल अर्ज़ी).

किसी ग़ैर मुस्लिम पर जुल्म करना: मुसलमानों की तरह ग़ैर मुस्लिमों से भी इंसानियत के आधार पर एक ही जैसा बर्ताव किया जाएगा, किसी ग़ैर मुस्लिम पर भी जुल्म करना हराम (वर्जित) है, हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “जो व्यक्ति ज़िम्मी (यानी वह ग़ैर मुस्लिम जो मुसलमानों के देश में रहता है) पर जुल्म (अत्याचार) और ज़्यादाती करेगा या उसकी ताक़त (क्षमता) से ज़्यादा उससे काम लेगा या उसकी कोई चीज़ बग़ैर

उसकी रज़ामंदी (इजाज़त) के लेगा तो उस ज़िम्मी की तरफ़ से उस व्यक्ति के साथ दुश्मनी करने वाला मैं (नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खुद हूँगा। (अबूदाऊद: बाबु फ़ी अहलि तअशीरी अहिलज्जिम्मती)

मज़दूर की मज़दूरी की अदाएगी न करना या उसमें कमी करना:
हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “तीन तरह के लोग ऐसे हैं, जिनका क़यामत में मैं फ़रीक़ बनूँगा, यानी मैं उनके विरुद्ध खड़ा हूँगा। वह व्यक्ति जिसने मेरे नाम पर वादा किया और फिर वादा ख़िलाफ़ी (निराश) की। वह व्यक्ति जिसने किसी आज़ाद को बेचकर उसकी कीमत खाई हो (और इस तरह उसकी गुलामी का कारण बना हो)। और वह व्यक्ति जिसने किसी को मज़दूरी पर लिया हो, फिर काम तो उससे पूरी तरह लिया लेकिन उसकी मज़दूरी न दी हो। (बुख़ारी: बाबु इस्मू मन मनअ अजरल अजीरि),

इसी तरह फ़रमान-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है: “मज़दूर की मज़दूरी उसके पसीना सूखने से पहले दी जाए”। (इब्न-ए-माजा: बाबु अजरील उजराइ)

लोगों के हक़ (अधिकार) की अदाएगी में टाल मटोल करना:
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: क़र्ज़ की अदाएगी पर कुदरत (क्षमता) के बावजूद वक़्त (समय) पर क़र्ज़ की अदाएगी में टाल मटोल करना जुल्म है। (बुख़ारी और मुस्लिम), तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

“अल्लाह तआला शहीद के सभी गुनाहों (पापों) को माफ़ कर देता है मगर किसी का क़र्ज़ा माफ़ नहीं करता”। (मुस्लिम)

इंसानों पर जुल्म करने की विभिन्न सूरतों में से कुछ सूरतें ज़िक्र की गई हैं, लेकिन हमें सभी सूरतों से बचना चाहिए, क्योंकि हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “मेरी उम्मत का मुफ़लिस (ग़रीब) वह व्यक्ति है जो क़यामत के दिन बहुत सी नमाज़, रोज़ा, ज़कात (और दूसरी मक़बूल इबादतें) लेकर आएगा मगर हाल यह होगा कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर आरोप लगया होगा, किसी का माल खाया होगा, किसी का खून बहाया होगा या किसी को मारा पीटा होगा तो उसकी नेकियों में से एक हक़ (अधिकार) वाले को (उसके हक़ के बराबर) नेकियाँ दी जाएँगी, ऐसे ही दूसरे हक़ (अधिकार) वाले को उसकी नेकियों में से (उसके हक़ के बराबर) नेकियाँ दी जाएँगी, फिर अगर दूसरों के हुक्क (अधिकार) चुकाए जाने से पहले उसकी सभी नेकियाँ समाप्त हो जाएँगी तो (उनके हुक्क के बराबर हक़दारों और मज़लूमों (पीड़ितों) के गुनाह (पाप), जो उन्होंने दुनिया में किए होंगे, उनसे लेकर इस व्यक्ति के ऊपर डाल दिए जाएँगे, और फिर इस व्यक्ति को जहन्नम में डाल दिया जाएगा”। (सहीह मुस्लिम, बाब तहरीमिज्जुल्मी)

मज़लूम (पीड़ित) और हम क्या करें? मज़लूम सब्र (धीरज) करके अल्लाह की तरफ़ लोटे, और क्षमता के अनुसार ज़ालिम को जुल्म से रोके, और दूसरों से मदद (सहायता) प्राप्त करके अपने देश के क़ानून के तहत (अनुसार) करवाई करे। हमें मज़लूम (पीड़ित) की जहाँ तक हो सके मदद (सहायता) करके अल्लाह तआला से दुआँ करनी

चाहिँँ। और अगर हम ज़ालिम को जुल्म करने से रोक सकते हैं तो राष्ट्रीय कानून को सामने रखकर ज़रूर यह ज़िम्मेदारी अंजाम देनी चाहिए, यह बात अच्छी तरह ध्यान में रखनी चाहिए कि हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “अल्लाह तआला ज़ालिम (अत्याचारी) को ढील देते हैं, फिर जब अचानक उसको पकड़ते हैं तो उसको बिलकुल नहीं छोड़ते, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी: अनुवाद “इसी तरह तेरे रब की पकड़ है जब वह शहरों को पकड़ते हैं जबकि वह जुल्म को करते हैं, यकीनन उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक है”। (बुखारी और मुस्लिम).

हुक्क-ए-इंसान कुरान और हदीस की रोशनी में

शरियत-ए-इस्लामिया ने हर व्यक्ति को ज़िम्मेदार बनाया है कि वह अल्लाह तआला के हुक्क (अधिकारों) के साथ हुक्कूल इबाद यानी इंसानों के हुक्क (अधिकारों) की पूरे तौर पर अदाएगी करे। दूसरों के हुक्क की अदाएगी के लिए कुरान और हदीस में बहुत ज़्यादा अहमियत (महत्व), ताकीद (ज़ोर) और विशेष शिक्षाएँ आई हैं। तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम), ताबईन और तबअ-ए-ताबईन ने अपने क़ौल और अमल (कार्य) से लोगों के हुक्क अदा करने की बेशुमार मिसाल (उदाहरण) पेश किये हैं। वह रहती दुनिया तक पूरी इंसानियत के लिए मार्गदर्शन हैं, मगर आज हम दूसरों के हुक्क तो अदा नहीं करते, अलबत्ता (फिर भी) अपने हुक्क का झंडा उठाए रहते हैं, दूसरों के हुक्क की अदाएगी की कोई फ़िक्र नहीं करते, अपने हुक्क को प्राप्त करने के लिए मांग करते रहते हैं, इसीलिए हुक्क के नाम से संगठन बनाए जा रहे हैं, लेकिन दुनिया में ऐसी यूनियन या तहरीकें (आंदोलन) या कोशिशें मौजूद नहीं हैं जिनमें यह शिक्षा दी जाए कि दूसरों के हुक्क जो हमारे ज़िम्मे हैं वह हम कैसे अदा करें? शरियत-ए-इस्लामिया की असल मांग यही है कि हम में से हर एक अपनी ज़िम्मेदारियों यानी दूसरों के हुक्क अदा करने की ज़्यादा कोशिश करे।

आम लोगों के हुक्क (अधिकार): अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने वाले व्यक्ति पर ज़रूरी है कि वह सभी लोगों के हुक्क की

अदाएगी करे, किसी के माल या जायदाद (संपत्ति) पर अवैध कब्ज़ा न करे, किसी को धोका न दे, खाने की चीज़ों में मिलावट न करे। शरियत-ए-इस्लामिया में किसी को नाहक (अवैध) कत्ल करना तो दरकिनार किसी व्यक्ति से मारपीट करना या गाली देना या बुरा भला कहना भी जायज़ नहीं (अवैध) है। रास्ते का हक़ (अधिकार) अदा किया जाए। ग़रीबों, असहायों, यतीमों (अनाथों) और कमज़ोरों का ध्यान रखा जाए। आम लोगों के साथ साथ माता पिता, पति पत्नी, औलाद, रिश्तेदारों और पड़ोसियों के हुक्क़ अदा किए जाएँ। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूसरों के हुक्क़ (अधिकारों) में कोताही (कमी) करने पर आखिरत में सख़्त (कठोर) अज़ाब की ख़बर इस तरह दी: क्या तुम जानते हो कि मुफ़लिस (ग़रीब) कोन है? सहाबा ने अर्ज़ किया: हमारे नज़दीक (यहाँ) मुफ़लिस (ग़रीब) वह व्यक्ति है जिसके पास कोई पैसा और दुनिया का सामान न हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मेरी उम्मत का मुफ़लिस (ग़रीब) वह व्यक्ति है जो क़यामत के दिन बहुत सी नमाज़, रोज़ा, ज़कात (और दूसरी मक़बूल इबादतें) लेकर आएगा, मगर हाल यह होगा कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर इल्ज़ाम (दोष) लगाया होगा, किसी का माल खाया होगा, किसी का खून बहाया होगा या किसी को मारा पीटा होगा तो इसकी नेकियों में से एक हक़ (अधिकार) वाले को (उसके हक़ (अधिकार) के बराबर) नेकियाँ दी जाएँगी, ऐसे ही दूसरे हक़ वाले को उसकी नेकियों में से (उसके हक़ के बराबर) नेकियाँ दी जाएँगी, फिर अगर दूसरों के हुक्क़ (अधिकार) चुकाए जाने से पहले इसकी सभी नेकियाँ ख़त्म हो जाएँगी तो (उनके हुक्क़ के बराबर) हक़दारों (अधिकार वालों) और मज़लूमों

(पीड़ितों) के गुनाह, जो उन्होंने दुनिया में किए होंगे, इन से लेकर उस व्यक्ति पर डाल दिए जाएँगे और फिर उस व्यक्ति को जहन्नम (नरक) में फेंक दिया जाएगा। (मुस्लिम: बाबु तहरीमिज्जुल्मि)

माता पिता के हुक्क (अधिकार): कुरान और हदीस में माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करने की विशेष (खास) ताकीद (ज़ोर) की गई है। अल्लाह तआला ने कई जगहों पर अपनी इबादत का हुक्म (आदेश) देने के साथ साथ माता पिता से अच्छा बर्ताव करने का हुक्म (आदेश) दिया है। जिस से माता पिता की आज्ञा पालन (कर्तव्य पालन), उनकी खिदमत (सेवा) और उनके अदब (आदर) और ऐहताराम (सम्मान) की अहमियत (महत्व) स्पष्ट हो जाती है। अहदीस में भी माता पिता की आज्ञापालन की विशेष अहमियत (महत्व) और ताकीद (ज़ोर) और उसकी फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) बयान की गई है। माता पिता की नाफ़रमानी (अवज़कारिता) तो दूर, नाराज़गी और नापसंदीदगी व्यक्त करने और झिड़कने से भी रोका गया है और अदब (इज़ज़त) के साथ नरम बातचीत का हुक्म (आदेश) दिया गया है। पूरी ज़िन्दगी माता पिता के लिए दुआ करने का हुक्म (आदेश) उनकी अहमियत (महत्व) को बहुत ऊँचा करता है।

कुरान और हदीस की रोशनी में उलमा-ए-किराम ने माता पिता के हुक्क कुछ इस तरह लिखे हैं।

ज़िंदगी के हुक्क: उनका अदब करना, उनसे मोहब्बत करना, उनका कहना मानना, उनकी खिदमत करना, और उनकी ज़रूरतों को पूरा करना।

उनकी वफात के बाद के हुक्क: उनके लिए अल्लाह तआला से माफ़ी और रहमत की दुआएँ करना, उनकी अमानत और कर्ज़ अदा करना, उनकी जाइज़ (वैध) वसीयत का पालन करना, उनकी तरफ़ से ऐसे कार्य करना जिनका स़वाब (पुण्य) उन तक पहुँचे, उनके रिश्तेदार, दोस्त और मिलने वालों की इज़्ज़त करना, और कभी कभी उनकी कब्र पर जाना।

औलाद के हुक्क (अधिकार): नेक औलाद माता पिता के लिए बहुत बड़ी निअमत (उपहार) है और औलाद नेक उस समय होगी जब उनकी परवरिश (पालन पोषण) अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिद्धांतों (न्यायदेशों) के अनुसार किया जाए, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: “हर बच्चा अपनी फ़ितरत (इस्लाम) पर पैदा होता है, उसके माता पिता उसे यहूदी या मजूसी बना देते हैं”। (बुखारी और मुस्लिम)। इस हदीस से स्पष्ट हो गया कि बच्चे का दिमाग़ कोरे कागज़ की तरह होता है, उसके माता पिता बचपन में उसके दिमाग़ में जो बिठा देते हैं उसका असर आख़िर उम्र तक रहता है।

माता पिता की कुछ ज़िम्मेदारियाँ यानी औलाद के हुक्क इस तरह हैं: बच्चे की पैदाइश के समय दाएँ कान में अज़ान और बाएँ कान में तकबीर कहना, तहनीक यानी खजूर को चबाकर मुँह में डालना और मसूँड़ों पर रगड़ना, सातवें दिन अक़ीका करना, लड़के का “खतना” कराना, सर के बाल काटकर बालों के वज़न के बराबर चाँदी या उसकी कीमत सदका करना और अच्छा नाम रखना, अगर किसी वजह से सातवें दिन अक़ीका न कर सके तो बाद में भी किया जा

सकता है, अपने क्षमता (हैसियत) के अनुसार औलाद के सभी ज़रूरी खर्च बर्दाश्त करना, बच्चों की बेहतर तालीम (शिक्षा) और तरबियत (पालन पोषण) करना, माता पिता के ज़िम्मे यह एक ऐसा हक है जिसे अगर माता पिता ने अच्छे तरीके से अदा किया तो इसके ज़रिए एक अच्छी नसल की बुनियाद पड़ेगी और अगर इस हक में थोड़ी से भी कमी और लापरवाही अपनाई गई तो फिर न जाने इसका नुकसान आने वाली कई नस्लों को भुगतना पड़ेगा, औलाद की तालीम और तरबियत यकीनन एक बड़ा ही नाज़ुक मसअला है जिसे बड़ी ही समझदारी और होशियारी से अंजाम देना चाहिए, औलाद की तालीम और तरबियत में शुरूआती दिनों में तो माँ का किरदार (भूमिका) सबसे अहम (महत्वपूर्ण) होता है, लेकिन बच्चे की बढ़ती उम्र के साथ साथ वह ज़िम्मेदारी बाप की तरफ़ आनी शुरू हो जाती है, तालीम और तरबियत के बाद माता पिता के ज़िम्मे औलाद का आखिरी (अंतिम) और अहम (महत्वपूर्ण) हक उनकी शादी का रहता है, शादी के बारे में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं की रोशनी में हमें लड़के और लड़की के इन्तिखाब (चुनाव) में दीनदारी और शराफ़त को प्राथमिकता देनी चाहिए।

पति पत्नी के हुक्क (अधिकार): दो अजनबी (अंजान) मर्द औरत के बीच पति पत्नी का रिश्ता उसी समय स्थापित हो सकता है जब दोनों के बीच शरई निकाह हुआ हो। निकाह-ए-शरई के बाद दो अजनबी (अंजान) मर्द औरत रफ़ीक़-ए-हयात (जीवन साथी) बन जाते हैं, एक दूसरे के खुशी और ग़म, आराम और तकलीफ़ और तंदुरस्ती (स्वास्थ्य) और बीमारी यहाँ तक कि जीवन के हर समय शरीक बन

जाते हैं। निकाह की वजह से बेशुमार गतिविधि एक दूसरे के लिए हलाल हो जाते हैं, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने कुरान-ए-करीम में एक दूसरे को “लिबास” (वस्त्र) से वर्णन किया है, यानी पति अपनी पत्नी के लिए और पत्नी अपने पति के लिए “लिबास” (वस्त्र) की तरह है। शरई अहकाम (आदेशों) का पालन करते हुए पति पत्नी का जिस्मानी और रूहानी तौर पर आनंद लेना, तथा एक दूसरे के हुक्क की अदाएगी करना यह सब शरियत-ए-इस्लामिया का अंग हैं और इन पर भी अजर (ईनाम) मिलेगा, इन शा अल्लाह।

पत्नी के हुक्क: मेहर की अदाएगी करना, पत्नी के सभी खर्चे उठाना, पत्नी के लिए रहने का व्यवस्था करना और पत्नी के साथ अच्छाई का मामला करना।

पति के हुक्क (अधिकार): पति का आज्ञापालन करना, पति के माल और इज्जत के सुरक्षा करना, घर के अंदरूनी निज़ाम (प्रणाली) को चलाना और बच्चों की तरबियत (पालन पोषण) करना।

पड़ोसियों के हुक्क (अधिकार): अल्लाह तआला कुरान-ए-करीम में इरशाद फ़रमाता है: “अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराव और माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करो, तथा रिश्तेदारों, यतीमों (अनाथों), ग़रीबों, पास वाले पड़ोसी, दूर वाले पड़ोसी, साथ बैठे (या साथ खड़े हुए) व्यक्ति और रास्ता चलने वाले के साथ और अपने गुलाम बांदियों (यानी मातहतों) के साथ भी (अच्छा बर्ताव करो), बेशक अल्लाह किसी इतराने वाले शेखीबाज़ (घमंडी) को पसंद नहीं करता। (सूरह अन्निसा: 36)।

इस आयत में अल्लाह तआला ने पड़ोसियों के साथ अच्छा बर्ताव करने की शिक्षा दी है, चाहे वह रिश्तेदार हों या न हों और मुसलमान हों या न हों। बहरहाल पड़ोसी होने की वजह से हर व्यक्ति का ध्यान रखना हमारी दीनी और नैतिक ज़िम्मेदारी है। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम बहुत ज़्यादा पड़ोसियों के बारे में अहकाम (आदेश) लेकर आते थे कि मुझे खयाल होने लगा कि कहीं पड़ोसी को विरासत में हिस्सेदार न बना दिया जाए। (तिरमिज़ी)।

इसी तरह हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो कोई अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी को तकलीफ़ न पहुँचाए, (बुखारी), तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो कोई अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो वह अपने पड़ोसी का ध्यान रखे। (मुस्लिम)

रिश्तेदारों के हुक्क (अधिकार): इस्लाम ने जहाँ आम लोगों के हुक्क की अदाएगी की बार बार ताकीद (ज़ोर दिया) की है, वहीं पड़ोसियों और करीबी और दूर के रिश्तेदारों के हुक्क की अदाएगी यहाँ तक कि पति पत्नी के भी एक दूसरे के हुक्क की अदाएगी की शिक्षा दी है, शरियत-ए-इस्लामिया में अकेले ज़िंदगी के साथ समाजी ज़िंदगी के अहकाम (नियम) भी बयान किए गए हैं, ताकि सबकी कोशिशों से एक अच्छा समाज बने, लोग एक दूसरे का एहताराम (सम्मान) करें, एक दूसरे के खुशी और ग़म में शरीक हों और जिसका जो हक़ है वह अदा किया जाए, माता पिता से भी कहा गया कि वह अपनी औलाद

के हुक्क अदा करें, इसी तरह औलाद को भी तालीम (शिक्षा) दी गई है कि वह अपने माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करें। पति पत्नी की यह ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी अपनी ज़िम्मेदारियों की अच्छी तरह अदा करें, ताकि जीवन का पहिया ठीक दिशा में चले। पड़ोसियों का भी पूरा ध्यान रखने की शिक्षा दी गई है कि पड़ोसियों को तकलीफ़ पहुँचाने वाला व्यक्ति पूरा मोमिन नहीं हो सकता है। इसी तरह हर व्यक्ति की यह ज़िम्मेदारी है कि अपनी क्षमता के अनुसार सभी रिश्तेदारों को साथ लेकर चले, आज हमारे समाज में यह बीमारी (रोग) बहुत आम हो गई है कि छोटी छोटी बात पर रिश्तेदारों से संबंध तोड़ दिया जाता है, हालांकि ज़रूरत है कि हम रिश्तेदारों के साथ अच्छा बर्ताव करें, उनकी खुशी और ग़मी में शरीक हो और उनके साथ अहसान और अच्छा बर्ताव करें, इसी लिए सूरह “नहल” आयत: 90 में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “बेशक अल्लाह इंसान का, अहसान का और रिश्तेदारों को (उनके हुक्क) देने का हुक्म (आदेश) देता है और बेहयाई (बेशर्मी), बुराई और जुल्म से रोकता है, वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत कुबूल करो तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “क़त़अरहमी” (संबंध तोड़ना) करने वाला कोई व्यक्ति जन्नत में दाख़िल नहीं होगा”। (बुख़ारी और मुस्लिम)।

दूसरी अन्य अहादीस की रोशनी में उलमा-ए-किराम ने फ़रमाया है कि वह अपनी सज़ा काटने के बाद ही जन्नत में दाख़िल हो सकता है, इसी तरह क़ुरान और हदीस में रिश्तेदारों के आर्थिक हुक्क पर भी जोर दिया है, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “आप से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करे? फ़रमा दें जितना भी माल

खर्च करो (ठीक है) मगर उसके हकदार तुम्हारे माता पिता हैं और करीबी रिश्तेदार हैं और यतीम (अनाथ) हैं और ज़रूरतमंद हैं और मुसाफ़िर (यात्री) हैं और जो नेकी भी तुम करते हो बेशक अल्लाह उसे ख़ूब जानने वाला है। (सूरह “अलबकरा”: 215)।

तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़रीब रिश्तेदारों पर खर्च को भी स़वाब (पुण्य) का ज़रिया और वसीला (मार्ग) बताया है, और इस से आगे बढ़कर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “आम ग़रीब पर सदका (दान) करने से तो एक गुना ही स़वाब (पुण्य) पाएगा, लेकिन अगर कोई व्यक्ति ग़रीब रिश्तेदार को सदका (दान) देता है तो उसको दोगुना स़वाब और अज़्र (पुण्य) मिलेगा, एक अज़्र (ईनाम) तो सदके (दान) का, दूसरा सिलारहमी (अच्छे बर्ताव) का। (नसाई)।

खाने, पीने, सोने और पहनने (वस्त्र) के अहकाम और मसाइल

अल्लाह तआला ने दुनिया के निज़ाम (प्रणाली) को इस तरह बनाया है कि छोटी बड़ी करोड़ों मखलूक़ात (जीव जंतु प्राणी) इंसानों और जिन्नातों के अंतर्गत (अधीन) कर दिया हैं। इन्सान को अशरफ़ुल मखलूक़ात बना कर अल्लाह तआला ने इंसानों और जिन्नातों की पैदाइश का उद्देश्य (मक़सद) क़ुरान-ए-करीम में स्पष्ट तौर पर बयान फ़रमा दिया: “मैंने जिन्नातों और इंसानों को इसके अलावा किसी और काम के लिए पैदा नहीं किया कि वह मेरी इबादत करें”। (सुरह अज़ज़रियात: 56),

इबादत (प्राथना) ज़िंदगी को अल्लाह के हुक्म (आदेश) और नबी के तरीक़े के अनुसार पालन करने का नाम है, यानी अल्लाह के आदेशों का पालन करके और “हाराम” (वह चीज़ें जिनसे बचा जाए) से बचकर इन्सान अपनी सभी प्रकार की ज़रूरतों (खाना, पीना, सोना, पहनना, शिक्षा, शादी, नौकरी, कारोबार और खेती आदि) को पैग़म्बर के क़ौल (बात) और अमल (कार्य) के अनुसार गुज़ारे। यह ज़रूरतें इन्सान की बनाई हुई नहीं हैं बल्कि अल्लाह तआला ने इंसानों की पैदाइश इस तरह की है कि वह इन कामों (कार्यों) के बग़ैर जिंदा नहीं रह सकता, और इन कामों को सही या ग़लत तरीक़े से अंजाम देने के बावजूद इस को एक दिन मौत का मज़ा चखना है, तो हमें सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक यह फ़िक्र (चिंता) रहनी चाहिए कि हम अपने मुख्य लक्ष्य से न हट जाएँ।

सोने के आदाब (शिष्टाचार): इन्सान आम तौर पर रोज़ाना छ (6) से आठ (8) घंटे तक सोता है, जो उसकी ज़रूरत है, जैसा कि फ़रमान-ए-इलाही है: “तुम्हारी नींद को थकन दूर करने का ज़रिया हमने बनाया है”। (सूरह अन्नबा), अगर सोने में पैगंबर-ए-इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके को अपनाया जाए, तो इन्सान की एक तिहाई या एक चोथाई ज़िंदगी इबादत बन जाएगी। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विभिन्न अज़कार (ज़िक्र) पढ़कर सोया करते थे, लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं में खास (विशेष) बात यह है कि ईशा और फ़जर की नमाज़ समय पर अदा होनी चाहिए, इसलिए हदीस में है: “जिस व्यक्ति ने ईशा की नमाज़ जमात के साथ पढ़ी, मानो उसने आधी रात इबादत की, और जो फ़जर की नमाज़ भी जमात के साथ पढ़ ले तो मानो की उसने पूरी रात इबादत की। (मुस्लिम), अन्य हदीसों में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की स्पष्ट शिक्षाएँ मौजूद हैं कि औरतें अपने घरों में ही नमाज़ की व्यवस्था (अहतिमाम) करें। नमाज़-ए-ईशा और नमाज़-ए-फ़जर की समय पर अदाइगी एक तिहाई या एक चोथाई ज़िंदगी की इबादत बनने के लिए ज़रूरी है, तथा हदीसों में उल्लेख है कि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ की वुजू की तरह वुजू फ़रमाते और अपना दायाँ हाथ अपने दाएं गाल के नीचे रखकर दाएँ करवट पर लेटा करते थे। आप सोने से पहले विभिन्न अज़कार (ज़िक्र) के साथ यह दुआ भी पढ़ा करते थे: (अल्लाहुम्मा बिस्मिका अमूतु व अहया), “ऐ अल्लाह आपके नाम से मरता और जीता हूँ”, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोकर उठते तो यह दुआ पढ़ते: (अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअदा मा अमातना व

इलैहिन्नुशूर), “सभी तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की तरफ उठना है”। हदीसों में ईशा के बाद जल्दी सोने की तालीम दी गई है, इसीलिए हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ईशा के बाद जल्दी सोकर रात के पड़े हिस्से में नामज़-ए-तहज्जुद पढ़ा करते थे। आजकल रात को देर तक जागने के कारण हमारे लिए फ़जर की नमाज़ पढ़ना मुश्किल होता है, हालांकि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने ऐसे व्यक्ति की ज़िक्र किया गया जो सुबह होने तक सोता रहता है, (यानी फ़जर की नमाज़ अदा नहीं करता), तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “ऐसे व्यक्ति के कानों में शैतान पेशाब कर देता है”।

(बुखारी और मुस्लिम)

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पेट के बल लेटने से मना फ़रमाया है। **(अबुदाऊद)**, हालांकि जित लेटकर सोया जा सकता है। **(बुखारी)**, नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सोने से पहले दीपक (यानी लाईट), आग (यानी चूल्हा) बंद करने का, और बिस्मिल्ला पढ़कर दरवाज़े बंद करने और बर्तनों को ढकने का हुक्म (आदेश) दिया है। **(बुखारी)**, सोने से पहले चारों “कुल”, “आयतल कुर्सी” और सूरह “अलबक्रा” की अंतिम दो आयतें पढ़ने की भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिक्षा दी है। **(बुखारी और मुस्लिम)**

नमाज़-ए-फ़जर के बाद और मगरिब और ईशा के बीच में सोने को नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के अनुसार उलैमा-ए-किराम ने मकरूह कहा है। नमाज़-ए-असर और मगरिब के बीच में सोने को पसंद नहीं किया गया है। तो जहाँ तक हो सके इन

अवकात (समयों) में सोने से बचना चाहिए, हालांकि हुराम नहीं है। दोपहर को आराम करना (यानी खाना खाने के बाद थोड़ी देर लेटना) सुन्नत है। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आज से चोदह सो (1400) साल (वर्ष) पहले सोने का जो तरीका बयान किया है, आज के हकीम (डॉक्टर्स) भी इस को सेहत के लिए बेहद फायदेमंद (लाभदायक) मानते हैं।

खाने के आदाब (शिष्टाचार): खाने के विभिन्न आदाब हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल (आदेश) और अफ़आल (कार्यों) की रौशनी में किताबों में ज़िक्र है, मगर इनमें सबसे ख़ास बात यह है कि हमारे पेट में हुराम माल का कोई लुक़्मा (निवाला) भी न जाए। इसलिए हर मुस्लमान को चाहिए कि केवल हलाल (वैध) संसाधनों को ही काफ़ी समझें, जैसाकि हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “हुराम माल से बदन की बढ़ोतरी न करो, क्योंकि इस से बेहतर आग है”। (तिरमिज़ी), इसी तरह हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “वह इन्सान जन्नत (स्वर्ग) में नहीं जाएगा जिसकी परवरिश (पालन पोषण) हुराम माल से हुई हो, ऐसे व्यक्ति का ठिकाना जहन्नम (नरक) है”। (मुसनद अहमद), तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है कि “हुराम खाने, पीने और हुराम पहनने वालों की दुआँ कहाँ से कुबूल हों”। (मुस्लिम), जिस तरह आज कल हम नाश्ता, दोपहर का खाना, शाम की चाय और रात का खाना पाबंदी से खाते हैं, शायद हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी ज़िन्दगी में एक दिन भी ऐसा नहीं गुज़रा। हमें अल्लाह तआला

का शुक्र अदा करते हुए अल्लाह की दी हुई प्रतिभाओं (दानों) से ज़रूर फ़ायदा उठाना चाहिए, लेकिन ज़रूरतमंद लोगों की ज़रूरत का भी ख़याल (ध्यान) रखना चाहिए। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खाना आम तौर पर रोटी होता था। हालांकि चावल भी उस दौर में खाया जाता था। “खज़ूर”, “सरीद”, गोश्त, मछली, शहद, सिका, ज़ैतून, ककड़ी, तरबूज़, इन्जीर, अंगूर, अनार और हलवा खाने और पानी और दूध के पीने का सबूत (प्रमाण) हदीसों की किताबों में उल्लेख है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाने से पहले और खाने के बाद हाथ धोया करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीन उंगलियों (अंगूठा, शहादत की उंगली और बीच वाली उंगली) से खाना खाते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाना खाकर अपनी उंगलियाँ चाट लिया करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम टेक लगाकर खाना नहीं खाते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आम तौर पर बैठकर ही पानी पीते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खड़े होकर पानी पीना जवाज़ (वैध) को बयान करने के लिए है, ताकि मालूम हो जाए कि खड़े होकर पानी पीना हराम (अवैध) नहीं है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़मज़म का पानी पिलाया गया तो आप ने खड़े होकर पिया। खड़े होकर खाना जाएज़ (वैध) तो है लेकिन नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत बैठ कर खाना है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी भी खाने (भोजन) में दोष नहीं निकाला, अगर पसंद हुआ तो खा लिया, और नापसंद हुआ तो छोड़ दिया। (बुखारी और मुस्लिम) नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के अनुसार हमें दायं हाथ और अपने सामने से खाना चाहिए। (बुखारी और मुस्लिम),

“बिस्मिल्ला” पढ़कर खाना शुरू करना चाहिए, अगर “बिस्मिल्ला” पढ़ना भूल जाएँ तो बीच में “बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आखिरह” पढ़ लिया करें। (तिरमिज़ी, अबू दाऊद), तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “बरकत खाने के बीच में उतरती है, तो तुम उसके किनारों से खाओ”। (तिरमिज़ी, अबू दाऊद), खाना (भोजन) खाते समय इस बात का विशेष अहतिमाम (व्यवस्था) किया जाए कि पेट भरकर खाना न खाया जाए, बल्कि दो चार लुक़्म (निवाले) कम खाना बेहतर (अच्छा) है। इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि: “दो व्यक्तियों का खाना तीन के लिए और तीन व्यक्तियों का खाना चार के लिए काफ़ी है। (बुखारी और मुस्लिम), खाने या पीने के बर्तन में साँस लेने या उसमें फूँक मारने से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मना फ़रमाते थे। (तिरमिज़ी), नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने “मशक” के मुंह (यानी इस दौर में जग या टोंटी) से पानी पीने से मना फ़रमाया है। (बुखारी और मुस्लिम), खाना खाने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विभिन्न दुआएँ प्रमाणित हैं, उनमें से एक दुआ यह भी है: “अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत़अमना व सक़ाना व ज़अलना मुस्लिमीन” (तिरमिज़ी, अबू दाऊद)।

चिकित्सा अनुसार भी खाने पीने का यह तरीका इन्सान की सेहत के लिए बहुत लाभदायक है।

लिबास (वस्त्र) के आदाब (शिष्टाचार): कुरान और सुन्नत की रोशनी में उलैमा-ए-किराम ने लिखा है कि इन्सान अपने इलाके (क्षेत्र) की रीति रिवाज के अनुसार हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

शिक्षाओं के मुताबिक कोई भी लिबास (वस्त्र) पहन सकता है, क्योंकि लिबास (वस्त्र) में असल इजाज़त (अनुमति) है। जैसा कि **सूरह अल-अअराफ़: आयत नं. 32** में अल्लाह तआला ने बयान फ़रमाया है कि लिबास (वस्त्र) और खाने की चीज़ों में वही चीज़ ह़राम (अवैध) है जिसको अल्लाह तआला ने ह़राम (अवैध) बताया है। परंतु हमें लिबास (वस्त्र) में जहाँ तक हो सके नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को अपनाना चाहिए और वह लिबास (वस्त्र) जिसका पहनना ग़ैर मसनून है उससे बचना चाहिए। अल्लाह तआला ने नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को क़यामत तक आने वाले सभी इंसानों के लिए नमूना बनाया है। जैसा कि क़ुरान-ए-करीम में इरशाद फ़रमाया: “तुम सबके लिए रसूलुल्लाह की ज़ात अच्छा नमूना है”। (**सूरह अल-अहज़ाब: 21**), अल्लाह तआला ने लिबास (वस्त्र) के बारे में क़ुरान-ए-करीम में इरशाद फ़रमाया: “ऐ आदम की औलाद हमने तुम्हारे लिए लिबास (वस्त्र) बनाया जो तुम्हारी शर्मगाहों (गुप्तांगों) को भी छुपाता है और ज़ीनत का कारण भी है और अच्छा लिबास (वस्त्र) तक़्वा है। (**सूरह अल-अअराफ़: 26**), इस आयत में अल्लाह तआला ने “तक़्वा” का लिबास (वस्त्र) पहनने की शिक्षा दी है, और “लिबसुत्तक़्वा” से मुराद (अर्थ) वह लिबास है जिसमें शर्म और हया हो। और लिबास (वस्त्र) के बारे में हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के विपरित न हो। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़्वाल (आदेश) और अफ़आल (कार्यों) की रौशनी में उलैमा-ए-किराम ने लिबास (वस्त्र) की कुछ शर्तें लिखी हैं:

1) मर्दों (पुरुषों) के लिए ऐसा लिबास (वस्त्र) पहनना फ़र्ज़ है, जिससे नाफ़ से लेकर घुटने तक जिस्म (बदन) छुप जाए, और ऐसा लिबास (वस्त्र) पहनना मसनून है जिससे हाथ, पैर और चेहरे के अलावा पूरा जिस्म (बदन) छुप जाए, औरतों (महिलाओं) के लिए ऐसा लिबास (वस्त्र) पहनना फ़र्ज़ है, जिससे हाथ, पैर और चेहरे के अलावा उनका पूरा जिस्म (बदन) छुप जाए। यहाँ लिबास (वस्त्र) का बयान है न कि परदे का, क्योंकि ग़ैरमहरम (जिनसे निकाह जाएज़ है) के सामने औरत को चेहरा ढकना ज़रूरी है, 2) लिबास (वस्त्र) हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के विपरित न हो, जैसे मर्दों के लिए रेशमी कपड़े और ख़ालिस (शुद्ध) लाल या हरे रंग का लिबास (वस्त्र)। 3) ऐसा तंग या बारीक लिबास (वस्त्र) न हो जिससे बदन के अंग नज़र आएँ। 4) मर्दों का लिबास औरतों की तरह और औरतों का लिबास मर्दों की तरह न हो। 5) मर्दों का लिबास (वस्त्र) ज़्यादा रंगीन और औरतों का लिबास ज़्यादा खुशबूदार न हो (खास तौर पर जब वह घर से बाहर निकलें)। 6) मर्दों का लिबास (वस्त्र) टख़नों से ऊपर, जबकि औरतों का लिबास (वस्त्र) टख़नों से नीचे हो। 7) काफ़िरों और मुशरिकों के धार्मिक लिबास (वस्त्र) की तरह न हो। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़्यादातर सफ़ेद लिबास (वस्त्र) पहना करते थे, हालांकि दूसरे रंग की कपड़े भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्तेमाल (उपयोग) किए हैं। रंगीन लिबास (वस्त्र) आम तौर पर चादर या अबाय़ा या जुब्बे का हुआ करता था, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुर्ता और लुंगी आम तौर पर सफ़ेद हुआ करती थी। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “कपड़ों में सफ़ेद को अपनाओ,

क्योंकि वह तुम्हारे कपड़ों में अच्छे कपड़े हैं और सफ़ेद कपड़ों में ही अपने मुर्दों को कफ़न दिया करो। (तिरमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, मुसनद अहमद, सहीह इब्ने हिब्बान), हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़द (ऊँचाई) मध्यम था, एक बार मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुर्ख (लाल) धारियों वाली चादर में लिपटा हुआ देखा, मैंने कभी भी इससे ज़्यादा कोई ख़ूबसूरत नज़ारा नहीं देखा। (बुख़ारी और मुस्लिम), हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कपड़ों में क़मीज़ (कुर्ता) ज़्यादा पसंद थी। (तिरमिज़ी, अबू दाऊद), आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़मीज़ (कुर्ते) का रंग आम तौर पर सफ़ेद हुआ करता था। (तिरमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, नसाई, मुसनद अहमद, सहीह इब्ने हिब्बान आदि), आप आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुर्ता लगभग आधी पिंडली तक हुआ करता था। (अबू दाऊद, इब्ने माजा), आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुर्ते की आस्तीन आम तौर पर कलाई तक हुआ करती थी। (तिरमिज़ी, अबू दाऊद), “इज़ार” (पायजामा) उस लिबास को कहते हैं जो बदन के निचले हिस्से में पहना जाता है। आम तौर पर नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लुंगी का इस्तेमाल करते थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लुंगी नाफ़ के ऊपर से आधी पिंडली तक रहती थी, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम भी आम तौर पर लुंगी इस्तेमाल करते थे। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त (अनुमति) से पायजामा भी पहनते थे। हज़रत अबुहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हमारे सामने उम्मुल मुमिनीन

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक पेवंद (जोड़) लगी हुई चादर और मोटी लुंगी निकाली, फिर फ़रमाया कि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रूह-ए-मुबारका इन दोनों कपड़ों में निकली थी। (बुखारी और मुस्लिम), आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पगड़ी बांधते थे और उसके नीचे टोपी भी पहनते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पगड़ी के बग़ैर भी टोपी पहनते थे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम टोपी पहने बग़ैर भी पगड़ी बांधते थे। (ज़ादुल मआद फ़ी हदयि खैरिल इबाद), जैसाकि बयान किया जा चुका है कि लिबास (पोशाक) में असल जवाज़ (वैधता) है। इन्सान अपने इलाके (क्षेत्र) की रीति रिवाज के अनुसार शर्तों के मुताबिक़ कोई भी लिबास (वस्त्र) पहन सकता है, उन शर्तों में से यह भी है कि काफ़िरों और मुशरिकों का लिबास न हो। पैंट और शर्ट यक़ीनन (निश्चित रूप से) मुसलमानों की रचना नहीं है, परंतु अब यह लिबास आम हो गया है इसलिए मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम सब इसको इस्तेमाल (उपयोग) करते हैं। ऊपर ज़िक्र की हुई शर्तों के साथ पैंट और शर्ट पहनना जाइज़ (वैध) है, परंतु पैंट और शर्ट के मुकाबले में कुर्ता और पायजामा को प्राथमिकता हासिल है।

दूसरों के साथ नरमी (दया), अच्छे अखलाक और सलाम में पहल मतलूब (की ज़रूरत) है

शरियत-ए-इस्लामिया में जहाँ अकेले इबादत करने की बार बार ताकीद की गई (ज़ोर दिया गया) है। वहीं सबके साथ अच्छा बर्ताव करने, नरमी (दया) के साथ मिलने, दूसरों की खिदमत (सेवा) करने, बड़ों की इज्जत करने, अच्छे अखलाक के साथ मिलने, तकब्बुर (घमंड) और हसद (जलन) से बचने, जहाँ तक हो सके घरवालों और पड़ोसियों को खुश रखने, सभी लोगों के हुक्क (अधिकारों) की अदाएगी करने और सलाम में पहल करने की विशेष शिक्षाएँ दी गई हैं, ताकि एक अच्छा समाज अस्तित्व (वुजूद) में आ सके। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आलमी (विश्वी) रिसालत से नवाज़ा गया है, यानी अब क़यामत तक शरियत-ए-मुहम्मदिया का पालन किए बग़ैर आखिरत की कामयाबी (सफलता) संभव नहीं है। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्रांति लाकर केवल 23 वर्ष में अपने क़ौल और अमल से ऐसे समाज को अस्तित्व (वुजूद) बख़शा जो क़यामत तक इंसानों के लिए मार्गदर्शन है। हमें अपने समाज की बुराईयों पर काबू पाने के लिए हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोशिश से वुजूद (अस्तित्व) में आई सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की जमाअत (समूह) की ज़िन्दगी को ही अपनाना होगा, जिसके लिए अन्य कार्यों के साथ निम्नलिखित कार्यों का पालन करना बहुत ज़रूरी है।

आदर और नम्रता के साथ कार्य करें:

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने मेरी तरफ़ वही फ़रमाई है कि तुम तवाज़ुअ (आदर और विनम्रता) अपनाओ, यहाँ तक कि तुम में से कोई भी दूसरे पर गर्व न करे और न दूसरे पर ज़्यादाती करे”। (मुस्लिम)

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “कोई सदका माल को कम नहीं करता और जो जितना ज़्यादा माफ़ करता है अल्लाह उसकी इज्जत उतनी ही ज़्यादा बढ़ाते हैं और जिसने अल्लाह के लिए तवाज़ुअ (आदर और विनम्रता) अपनाई अल्लाह ने उसे बुलंद किया”। (मुस्लिम)

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “अल्लाह तआला ने जिस पैगम्बर को भी भेजा है उसने बकरियाँ चराई, सहाबा-ए-किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने अर्ज़ किया: और आप भी? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जी हाँ, मैं मक्का वालों की बकरियाँ कुछ क़ीरात (थोड़े से पैसों) पर चराता था”। (बुखारी)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर में क्या करते थे? उन्होंने फ़रमाया कि आप घर के काम भी किया करते थे, जब नमाज़ का समय होता था तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुरंत नमाज़ पढ़ने के लिए तशरीफ़ ले जाते। (बुखारी)

दूसरों के साथ नरमी का बर्ताव करें:

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बेशक अल्लाह नरमी करने वाले और नरमी को पसंद करने वाले हैं और

नरमी पर वह कुछ देते हैं जो सख्ती पर नहीं देते और न ही इसके अलावा किसी और चीज़ पर देते हैं। (मुस्लिम)

हज़रत अबु हुज़ैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक देहाती खड़े होकर मस्जिद (के आंगन) में पेशाब करने लगा तो लोगों ने उसे पकड़ा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसे छोड़ दो, और इसके पेशाब करने की जगह पर पानी बहा दो, क्योंकि तुम नरमी के लिए भेजे गए हो, सख्ती के लिए नहीं। (बुखारी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस देहाती को पेशाब करते समय रोकने से मना फ़रमाया, ताकि पेशाब बंद कराने के कारण उसे कोई तकलीफ़ न हो जाए, लेकिन पेशाब के बाद उस जगह जहाँ उसने पेशाब किया था, वहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पानी बहाने के हुक्म (आदेश) दिया।

तकब्बुर (घमंड) और हसद (जलन) से बचें और किसी व्यक्ति को हक़ीर (घटिया) न समझें:

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है: “ज़मीन में तू अकड़ कर मत चल”। (सूरह अल-इसरा: 37), इसी तरह फ़रमान-ए-इलाही है: “और तू अपने गालों को लोगों के लिए मत फैला और ज़मीन में अकड़ कर न चल, बेशक अल्लाह तआला हर घमंडी और फ़स्र करने वाले को पसंद नहीं करते। (सूरह लुक़मान: 18)

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: वह आदमी जन्नत में नहीं जाएगा जिसके दिल में एक ज़र्रे के बराबर भी तकब्बुर (घमंड) हो, एक व्यक्ति ने पुछा बेशक आदमी यह पसंद करता है कि उसके कपड़े ख़ूबसूरत हों और उसके जूते ख़ूबसूरत हों।

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: बेशक अल्लाह तआला जमाल वाले हैं और जमाल (खूबसूरती) को पसंद करते हैं। “तकब्बुर” हक़ (अधिकार) को ठुकराने और लोगों को हक़ीर (घटिया) समझने का नाम है। (मुस्लिम)

हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: आदमी तकब्बुर (घमंड) करता रहता है यहाँ तक कि वह सर्कशों (विद्रोहीयों) में लिखा जाता है, तो उसको वही सज़ा मिलेगी जो उनको मिलेगी। (तिरमिज़ी)

सबके साथ अच्छे अखलाक़ से पैश आएँ:

अल्लाह तआला कुरान-ए-करीम में आखिरी (अंतिम) नबी हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ूबियाँ बयान करते हुए फ़रमाता है: “बेशक आप ऊँचे अखलाक़ पर हैं”। (सूरह नून: 4) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खादिम-ए-खास (विशेष सेवक) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु जिन्होंने मदीना मुनव्वरा में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दस वर्ष सेवा की थी। हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में फ़रमाते हैं: “रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों में अखलाक़ के ऐतबार से सबसे ऊँचे अखलाक़ के मालिक थे”। (बुखारी और मुस्लिम)

इसी तरह फ़रमान-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है: “मोमिन के तराज़ू में क़यामत के दिन अच्छे अखलाक़ से बढ़कर कोई चीज़ भारी न होगी। बेशक अल्लाह तआला बदकलामी (बुरी बात) और बेहूदा बात करने वाले को पसंद नहीं करते हैं। (तिरमिज़ी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गया, लोगों को जन्नत में ले जाने वाले कार्य क्या हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: “अल्लाह का डर और अच्छे अखलाक। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि कोन सी चीज़ें लोगों को ज़्यादा आग में ले जाने वाली हैं? फ़रमाया: मुंह और शर्मगाह (गुप्तांग)। (तिरमिज़ी)

तथा नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: कामिल (पूरा) मोमिन वही है जिसका अखलाक अच्छा हो और तुम में सबसे बेहतर वह हैं जो अपनी बीवियों के बारे में सबसे बेहतर हों। (तिरमिज़ी)

तथा फ़रमान-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम है: “बेशक मोमिन अपने अच्छे अखलाक से हमेशा रोज़ा रखने वाले और शब बेदार (रात को इबादत करने वाले) का दर्जा पा लेता है। (अबूदाऊद)

सलाम में पहल करें:

इंसान का स्वभाव अल्लाह तआला ने ऐसा बनाया है कि वह दूसरे इंसान से मुलाकात के समय मुहब्बत के पैग़ाम पर आधारित कोई वाक्य दूसरे व्यक्ति से परिचित और खुश करने के लिए कहता है जैसे हिंदू लोग मुलाकात के समय नमस्ते या नमस्कार कहते हैं, कुछ हिंदू “राम राम” कहते हैं। और अंग्रेज़ी जानने वाले लोग “गुडमॉर्निंग”, “गुडएवेनिंग” और “गुड नाईट” जैसे शब्दों का उपयोग करता है। हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअसत (रिसालत) से पहले भी मुलाकात के समय मुबारकबादी के शब्द कहने का रिवाज था, लेकिन जब इस्लाम धर्म आया तो अल्लाह

तआला के हुक्म (आदेश) से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुलाक्रात के समय “अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि वबराकतुह” कहने का तरीका जारी फरमाया। इसका अर्थ हैं कि “तुम पर अल्लाह की रहमत और सलामती हो”। इन शब्दों से न सिर्फ़ मुहब्बत का पैगाम दूसरे को पहुँचता है बल्कि यह बहुत संक्षिप्त दुआ भी है, जिसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला तुमको सभी बुरी चीज़ों, बलाओं, आफ़तों, मुसीबतों और तकलीफ़ों से महफूज़ (सुरक्षित) और सलामत रखे। फिर सलाम करने वाला सलामती की इस दुआ के तहत (संदर्भ में) मानो यह भी कह रहा है कि तुम खुद भी मुझसे सलामत हो मेरे हाथ और ज़बान की तकलीफ़ से।

कुरान और हदीस में बार बार सलाम करने की शिक्षा और प्रेरणा दी गई है। संक्षिप्तता के मद्देनज़र केवल दो आयतों का अनुवाद पेश है: “जब तुम घर में दाखिल होने लगो तो अपने नफ़्सों (यानी अपने आप) को सलाम करो, यह अल्लाह तआला की तरफ़ से तोहफ़ा है मुबारक और पाकीज़ा (पवित्र)”। (सूरह अन्नूर: 61)

“जब तुम्हें तोहफ़ा-ए-सलाम दिया जाए तो तुम उसको सलाम दो उससे बेहतर या उसी को लोटा दो”। (सूरह निसा: 86), यानी जब तुम्हें सलाम किया जाए तो तुम उससे बेहतर शब्दों के साथ सलाम का जवाब (उत्तर) दो।

सलाम की अहमियत (महत्व) और फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) के बारे में विभिन्न हदीसों भी हदीस की किताबों में मौजूद हैं। केवल दो हदीस पेश कर रहा हूँ, हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया: “तुम जन्नत में नहीं जा सकते जबतक ईमान न लाओ, और तुम ईमान वाले नहीं जबतक आपस में मुहब्बत (प्यार)

न करो। क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बता दूँ कि जब तुम उसको अपनाओ तो आपसी मुहब्बत (प्यार) पैदा हो जाए, (और वह खास बात यह है कि) अपने बीच सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम)

इस हदीस से मालूम हुआ कि जन्नत को पाने के लिए सलाम करने में पहल करनी चाहिए।

“एक व्यक्ति ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि इस्लाम की कोनसी बात सबसे अच्छी है? हज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: “तुम खाना खिलाओ और दूसरों को सलाम करो चाहे तुम उनको पहचानते हो या नहीं”। (बुखारी और मुस्लिम), यानी हर व्यक्ति को सलाम करना चाहिए।

सलाम करने के कुछ अहकाम:

“अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि वबरकतुह” “गुडमॉर्निंग”, “गुडएवेनिंग” और “गुड नाईट” की तरह केवल शब्दों का नाम नहीं, बल्कि आपस में मुहब्बत (प्यार) और संबंध पैदा करने का अच्छा अमल होने के साथ साथ यह अच्छी दूआ भी है। इस्लाम में सलाम करने की विशेष अहमियत (महत्व) और फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) बयान की गई है, शरियत-ए-इस्लामिया में जहाँ हर अमल (कार्य) के अहकाम और आदाब बयान किए गए हैं, वहीं सलाम करने का भी अहकाम और आदाब बयान किए गए हैं, जैसे: सलाम करना सुन्नत है, मगर उसका जवाब (उत्तर) देना ज़रूरी है। सलाम का जवाब अच्छी नियत से सुन्नत के अनुसार जमा (बह्वचन) के शब्द के साथ दिया जाए, हालांकि संभोधित व्यक्ति एक व्यक्ति ही क्यों न हो, ताकि फ़रिश्ते (किरामन कातिबीन) जो हर एक के साथ हैं सलाम में संभोधित

व्यक्ति के साथ शामिल हों और उनको सलाम करने का भी सवाब मिल जाए और फिर जब वह सलाम का जवाब दें तो उनकी दुआएँ भी हमें मिल जाए। इसी तरह सवारी पर सवार व्यक्ति पैदल चलने वाले को, पैदल चलने वाला बैठे हुए व्यक्ति को और कम संख्या वाले ज़्यादा संख्या वालों को सलाम करें। यह हुक्म (आदेश) तवाजुअ (आदर) और विनम्रता की तरफ आकर्षित करने के लिए है, लेकिन इसका मतलब (अर्थ) नहीं कि यह लोग सलाम न करें तो हम पहल भी न करें, बल्कि हम सलाम में पहल करके ज़्यादा सवाब के हकदार बन जाएँ। तथा हदीस में आया है कि सलाम में पहल करने वाला (इस अमल की वजह से) तकब्बुर (घमंड) से پاک है। (शुअबूल ईमान)

तकब्बुर (घमंड) का अच्छा इलाज यह भी है कि हर मिलने वाले मुस्लमान को सलाम करने में पहल की जाए, तथा हम आपस में मुलाकात के समय बातचीत और कलाम से पहले सलाम करें। मौजूदा समय में टेलिफोन और मोबाइल भी मुलाकात का एक ज़रिया है, इसलिए सलाम करने का जो हुक्म आपसी मुलाकात का है वही फ़ोन करते और उठाते समय का होगा। “हेलो” के बजाए “अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाहि वबरकतुह” कहना बेहतर होगा।

कुछ जगहों और हालतों (प्रिस्तिथ्यां) में सलाम ना किया जाये। इस सिलसिले में फ़ुकहा-ए-किराम की टिप्पणियाँ का सारांश (अर्थ) यह है कि कुछ हालतों (प्रिस्तिथ्यों) में सलाम नहीं करना चाहिए। जब कोई हुक्मबरदारी (कर्तव्य) में लगा हुआ हो, जैसे: नमाज़, ज़िक्र, तिलावत, अज़ान और इक़ामत (तकबीर कहना), ख़ुतबा या किसी दीनी

मजलिस के समय। जब कोई इंसानी ज़रूरत में व्यस्थ (लगा हुआ) हो, जैसे: खाने-पीने, सोने और पेशाब या शौच आदि के समय। जब कोई गुनाह में व्यस्थ (लगा हुआ) हो, जैसे: शराब पी रहा हो, तो इस अवसर पर सलाम नहीं करना चाहिए।

इतिहास गवाह है कि मुसलमानों का गैर मुस्लिमों के साथ अच्छा बर्ताव और उनके साथ नरमी करने की वजह से इस्लाम फैला है, मगर आम तौर पर आज हमारे अंदर यह इम्तियाज़ी सिफ़त (विशिष्ट लक्षण) मौजूद नहीं है, इसलिए ज़रूरी है कि हम अपने बुजुर्गों का पालन करके जो बातें ज़िक्र की गई हैं उन्हें अपने अंदर पैदा करने की कोशिश करें।

अल्लाह तआला हमें सबके साथ नरमी का बर्ताव करने वाला और सलाम में पहल करने वाला बनाए, आमीन।

अल्लाह तआला का करीमाना उसूल एक बुराई पर एक लेकिन अच्छाई पर सात सौ गुना अज़्र (बदला)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि. फ़रमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तआला ने नेकियाँ और बुराईयाँ लिखीं और फिर उनकी वज़ाहत फ़रमाई कि जो आदमी किसी नेकी का इरादा करता है मगर उसको कर नहीं पाता, अल्लाह तआला उसकी एक पूर्ण नेकी लिख देते हैं और अगर इरादा करके उसको कर गुज़रता है तो अल्लाह तआला दस नेकियों से लेकर सात सौ गुना बल्कि उससे भी कई गुना ज़्यादा नेकियाँ उसकी लिख देते हैं। और अगर वह बुराई का इरादा करता है मगर उसको करता नहीं (अल्लाह के डर से) तो अल्लाह उसकी भी एक पूर्ण नेकी लिख देते हैं और अगर वह इरादा करके उसको कर लेता है तो अल्लाह तआला उसकी एक बुराई लिख देते हैं। (सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम)

एक बुराई पर एक, लेकिन अच्छाई पर सात सौ गुना अज़्र:

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान का खुलासाए कलाम यह है कि अच्छे काम का इरादा करने पर भी एक नेकी है और गुनाह का इरादा करने के बाद अल्लाह तआला के डर से उस गुनाह से बचने पर भी एक नेकी मिलती है। एक गुनाह करने पर सिर्फ़ एक बुराई लिखी जाती है, लेकिन एक नेक अमल पूरा करने पर दस गुना से सात सौ गुना तक बल्कि ख़ुलूस के ज़ब्बे से परिपूर्ण उससे भी ज़्यादा बंदा अज़्र और सवाब का मुस्तिहक बन सकता है।

इन्सान के आमाल (काम) की किस्में (प्रकार)

1) पहली किस्म वह है जो इन्सान के सिर्फ दिल में आये। ज़ाहिर है कि इन्सान उस पर काबू रखने की क्षमता नहीं रखता। इसलिए उस पर कोई अज़्र और सवाब या अज़ाब नहीं है, यानि अगर किसी व्यक्ति के सिर्फ दिल में किसी अच्छे या बुरे काम के करने की बात आयी, लेकिन कोई इरादा नहीं हुआ तो उस पर ना कोई अज़्र और सवाब है और ना ही कोई पकड़।

2) अगर नेक काम करने की बात दिल में आयी और उसका इरादा भी हो गया तो सही हदीस में ज़िक्र है कि किसी व्यक्ति ने नेक काम के करने का इरादा किया मगर उस पर अमल नहीं कर सका तो अल्लाह तआला उस पर एक नेकी का सवाब अता फ़रमायेगा। जैसे किसी व्यक्ति ने इरादा किया कि वह सदाक़ा करेगा मगर फिर वह सदाक़ा नहीं कर सका तो वह व्यक्ति इरादा करने पर भी एक नेकी के अज़्र और सवाब का मुस्तिहक़ बनेगा।

3) अगर किसी व्यक्ति ने इरादा करने के बाद नेक काम कर लिया तो फिर उसको दस गुना से सात सौ गुना बल्कि उससे भी ज़्यादा अज़्र और सवाब मिलेगा।

4) अगर किसी व्यक्ति ने बुराई का इरादा किया मगर उसने अल्लाह के डर की वजह से उस बुराई से अपने आप को बचा लिया तो उस पर अल्लाह तआला एक नेकी अता फ़रमायेगा। मसलन यतीम (अनाथ) का माल हड़प करने का इरादा किया मगर अल्लाह का डर इस इरादे को पूरा करने से माने बन गया तो उसे अल्लाह के डर की वजह से इस बुराई से बचने पर एक नेकी मिलेगी। लेकिन अल्लाह के डर से नहीं बल्कि उस गुनाह पर कुदरत ना होने की

वजह से वह गुनाह नहीं कर सकता तो फिर वह इस फज़ीलत का मुस्तहिक नहीं होगा बल्कि उसके नामए आमाल में एक बुराई लिखी जायेगी। जैसे एक व्यक्ति डांस पार्टी में भाग लेने के लिए जा रहा था मगर रास्ते में गाड़ी खराब होने की वजह से उसमें भाग नहीं ले सका तो उस गुनाह ना करने के बावजूद उसके नामए आमाल में एक बुराई लिखी जायेगी।

5) अगर किसी व्यक्ति ने गुनाह किया तो उसके नामए आमाल में एक बुराई लिखी जायेगी, जिस किस्म का गुनाह होगा उसी किस्म की सज़ा भी मिलेगी।

नेक कामों पर अज़ और सवाब ज़ियादा क्यों?

पहली उम्मतों के मुकाबले में आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के लोगों की उम्रें बहुत कम हैं जैसा कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मेरी उम्मत के लोगों की उम्रें 60 से 70 साल के बीच हैं।

(तिर्मिज़ी और इब्ने माजा) पहली उम्मतों के आमाल की बराबरी के लिए अल्लाह तआला ने इस उम्मत के लोगों के लिए नेक आमाल का अज़ और सवाब बढ़ाया, इसलिए एक नेकी पर दस गुना से लेकर सात सौ गुना बल्कि उससे भी ज़्यादा अज़ और सवाब का वादा किया गया जैसा कि पूरी इन्सानियत (मानवता) के नबी का फ़रमान बुखारी, मुस्लिम और हदीस की दूरी किताबों में आया है। अल्लाह तआला ने भी अपने पाक कलाम में कई बार नेकी पर अज़ और सवाब के ज़ियादा होने से सम्बंधित नियमों को बयान फ़रमाया है।

हमारी मुख्तसर और कीमती ज़िन्दगी:

65 साल की ज़िन्दगी मानकर अगर हम अपनी ज़िन्दगी का हिसाब लगायें और बालिग होने से पहले की ज़िन्दगी के लगभग 15 साल कम कर दें तो सिर्फ 50 साल की ज़िन्दगी बचती है। 6 से 8 घंटे रोज़ाना सोकर ज़िन्दगी का एक तिहाई या एक चौथाई हिस्सा सोने में निकल जाता है। ज़िन्दगी का लगभग एक तिहाई या एक चौथाई हिस्सा व्यापार या नौकरी वगैरह में लग जाता है। ज़िन्दगी का एक तिहाई या एक चौथाई हिस्सा जो हमारा सोने में लगता है उसको इबादत बनाने के लिए सारी मखलूक में सबसे उच्च और सारे नबियों के सरदार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फार्मूला यह है कि जो व्यक्ति इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़े जैसे उसने आधी रात इबादत की और जो फज्र की नमाज़ भी जमाअत के साथ पढ़ ले जैसे उसने पूरी रात इबादत की। (मुस्लिम) कारोबार या नौकरी में लगने वाले ज़िन्दगी के एक तिहाई या एक चौथाई हिस्से को इबादत बनाने के लिए शरीअत इस्लामिया ने यह नियम बनाया कि हराम माल से जिस्म की बढ़ोतरी ना करो, क्योंकि उससे बेहतर आग है। (तिर्मिज़ी) वह इन्सान जन्नत में दाखिल नहीं होगा जिसका पालन पोषण हराम माल से होआ हो, ऐसे व्यक्ति का स्थान जहन्नम (नरक) है। (मुसनद अहमद) हम अपनी ज़िन्दगी के बाक़ी कीमती हिस्से का सही इस्तेमाल कर लें तो इंशाअल्लाह हमेशा हमेशा की ज़िन्दगी में कामयाब हो जायेंगे। टीवी, वाट्स अप, फेसबुक, मोबाइल और इंटरनेट पर हमारी मसरूफियात (व्यस्तता) रोजाना बढ़ती जा रही हैं यहाँ तक की अल्लाह के घर यानि मस्जिद भी मोबाईल की टोन से महफूज़ नहीं हैं। अतः हमें चाहिए कि नई

टेक्नालोजी का इस्तेमाल सिर्फ उचित उद्देश्य के लिए करें, और नई टेक्नालोजी में हमारी मसरूफियात कुरआन करीम की तिलावत और नमाज़ आदि की अदायगी से रुकावट का कारण न बने।

हमारी ज़िन्दगी का मुख्य उद्देश्य:

हमारी ज़िन्दगी का असल मक़सद अल्लाह की इबादत के ज़रिए अल्लाह तआला की रज़ामंदी और उसकी खुशी के कारण जहन्नम (नर्क) से बचना और हमेशा हमेशा की जन्नत में दाखिल होना है।

जन्नत क्या है? जन्नत की नेमतों की सोच भी इन्सान की ताक़त से बाहर है जैसा कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला का इरशाद है कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वह चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिन्हें ना आंखों ने देखा है ना कानों ने सुना है और ना किसी इन्सान के दिल में उनका कभी ख़याल गुज़रा है। अगर जी चाहे तो यह आयत पढ़ लो “पस कोई व्यक्ति नहीं जानता कि उसकी आंखों की ताज़गी और खुशी के लिए क्या क्या चीज़ छुपा करके रखी गयी हैं।” (बुखारी)

जहन्नम क्या है? नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: तुम्हारी (दुनिया की) आग जहन्नम की आग के मुकाबले में सत्तरवां हिस्सा है (अपनी गर्मी और नुक़सान पुहंचाने में)। किसी ने पूछा या रसूलुल्लाह! (कुफ़्रार और गुनाहगारों के अज़ाब के लिए तो) यह हमारी दुनिया की आग भी बहुत थी। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दुनिया की आग के सामने जहन्नम की आग ६९ गुना बढ़कर है। (बुखारी)

अल्लाह तआला हमें दुनियावी ज़िन्दगी में हमेशा हमेशा की आखिरत की ज़िन्दगी की तैयारी करने वाला बनाये।

कुरान की चंद आयात, जिनमें नेकी पर अज़ और सवाब का ज़ियादा मिलना ज़िक्र है:

अल्लाह तआला ने अपने पाक कलाम में वज़ाहत (सपष्टता) के साथ बयान फ़रमा दिया कि नेक अमल पर अज़ और सवाब में कसरत है, लेकिन एक बुराई पर एक ही बुराई की सज़ा दी जायेगी अगर इस गुनाह या बुराई से सच्चे दिल से माफ़ी नहीं मांगी गई। कुरआन और हदीस की रोशनी में उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफ़ाक (सहमति) है कि शिर्क जैसा सबसे बड़ा गुनाह भी दुनिया में सच्ची तौबा करने से माफ़ हो जाता है। यहाँ सिर्फ चंद आयात पेश खिदमत हैं:

1) जो लोग अल्लाह के रास्ते में अपना माल खर्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना सात बाली उगाये और हर बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसके लिए चाहता है (सवाब में) कई गुना इज़ाफ़ा कर देता है। अल्लाह बहुत शक्ति वाला और बड़े इल्म वाला है। (सुरह अल बक्रा 261)।

2) अल्लाह तआला ज़र्ज़ बराबर भी किसी पर जुल्म नहीं करता है और अगर कोई नेकी हो तो उसे कई गुना कर देता है और खुद अपने पास से बड़ा सवाब देता है। (सुरह अन्निसा 40)

3) जो व्यक्ति कोई नेकी लेकर आयेगा, उसके लिए उस जैसी दस नेकियों का सवाब है और जो व्यक्ति कोई बुराई लेकर आयेगा तो उसको सिर्फ उसी एक बुराई की सज़ा दी जायेगी और उन पर कोई जुल्म ना होगा। (सुरह अल अनआम 160)

४) जो कोई नेकी लेकर आयेगा उसे उससे बेहतर बदला मिलेगा।

(सुरह अन्नमल 589)

५) जो व्यक्ति कोई भलाई करेगा, हम उसकी खातिर उस भलाई में और अधिक खूबी का ज्यादा कर देंगे। (सुरह अशशूरा 23)

चंद नेक काम जिन पर बड़े अज़ और सवाब का वादा है:

1) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मस्जिदे हराम में नमाज़ की अदायगी एक लाख नमाज़ों के बराबर है। (मुसनद अहमद और सहीह इब्ने हिब्बान)

आम तौर पर पूरी ज़िन्दगी में एक लाख नमाज़ें फ़र्ज़ नहीं होतीं। मगर मस्जिदे हराम (मक्का) में एक नमाज़ की अदायगी पर पूरी ज़िन्दगी की नमाज़ों से ज़्यादा अज़ और सवाब मिलेगा।

2) मस्जिदे नबवी में एक रिवायत (सहीह मुस्लिम) के मुताबिक एक हजार जबकि दूसरी रिवायत (इब्ने माज़ा) के मुताबिक पचास हजार नमाज़ों का सवाब मिलेगा। जैसा खुलूस होगा वैसे ही अज़ और सवाब का मुस्तहिक होगा इंशाअल्लाह।

3) शबे क़द्र की इबादत हजार महीनों यानि 83 साल की इबादत से ज़्यादा अफ़जल है (सुरतुल क़द्र)

4) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: रमज़ान के उमरे की अदायगी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज करने के बराबर है। (मुस्लिम)

5) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जमाअत के साथ नमाज़ की अदायगी अज़ और सवाब में 27 दर्जा ज़्यादा है। (बुखारी और मुस्लिम)

6) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जो व्यक्ति नमाज़ फ़ज़ की जमाअत के साथ अदायगी के बाद सूरज निकलने तक अल्लाह तआला के ज़िक्र में व्यस्त रहे, फिर दो रकअत नफ़िल पढ़ता है तो उसे हज और उमरे का सवाब मिलता है।

(तिर्मिज़ी)

7) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिसने कुरान मज़ीद का एक हर्फ़ पढ़ा उसके लिए एक नेकी है और एक नेकी दस नेकियों के बराबर होती है। मैं यह नहीं कहता कि अलिफ़ लाम मीम एक हर्फ़ है, बल्कि अलिफ़ एक हर्फ़ है, लाम एक हर्फ़ है और मीम एक हर्फ़ है। (तिर्मिज़ी)

8) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिस व्यक्ति ने एक दिन में सुब्हानल्लाहि वबि हम्दिहि सौ बार पढ़ा उसके (छोटे छोटे) गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं चाहे वह समन्दर के झाग के बराबर ही क्यों ना हो। (बुखारी)

9) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: क्या तुम में से कोई हर रोज़ हज़ार नेकियाँ कमाना चाहता है? हाज़ीरीन में से एक व्यक्ति ने अर्ज किया: हज़ार नेकियाँ कमाने की क्या सूरत है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सौ बार सुब्हानल्लाह पढ़ लिया करो, उसके लिए हज़ार नेकियाँ लिख दी जायेंगी, या हजार गलतियाँ मिटा दी जायेंगी। (मुस्लिम)

९) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: जिस व्यक्ति ने केवल अल्लाह की खुशी के लिए हज किया और इस दौरान कोई बेहूदा बात या गुनाह नहीं किया तो वह (पाक होकर)

ऐसा लौटता है जैसा माँ के पेट से पैदा होने के दिन (पाक था)।

(बुखारी और मुस्लिम)

अलहम्दु लिल्लाह! हम अभी जीवित हैं और मौत का फरिश्ता हमारी जान निकालने के लिए कब आजाये मालूम नहीं। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: पांच चीज़ों से पहले पांच चीज़ों से फ़ायदा उठाया जाये। बुढ़ापा आने से पहले जवानी से। मरने से पहले ज़िन्दगी से। काम आने से पहले खाली समय से। निर्धनता आने से पहले माल से। बीमारी से पहले सेहत से। अर्थात् हमें तौबा करके नेक आमाल की तरफ बढना चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है: “और ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह के सामने तौबा करो ताकि तुम सफल हो जाओ।” (सुरह अन्नूर 31) इसी तरह अल्लाह तआला का फ़रमान है: “कह दो कि ऐ मेरे वह बंदो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती कर रखी है, यानि गुनाह कर रखे हैं, अल्लाह की रहमत से मायूस ना हो। यकीन जानो अल्लाह सारे के सारे गुनाह माफ़ कर देता है। यकीनन वह बहुत माफ़ करने वाला, बड़ा मेहबरबान है।” (सूरह अज़ज़ुमर 53)

तीन अफराद का गार (गुफा) में बंद होने पर नेक अमल का वसीला बनाकर अल्लाह से दुआ करना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना कि तुम में से पहली उम्मत के तीन आदमी सफ़र कर रहे थे। रात गुज़ारने के लिए एक गार (गुफा) में दाखिल हुए। पहाड़ से एक पत्थर ने लुढ़क कर गार के मुंह को बंद कर दिया। उन्होंने आपस में एक दूसरे से कहा कि इस पत्थर से एक ही सूरत में निजात मिल सकती है कि तुम अपने नेक आमाल के वसीले (माध्यम) से अल्लाह तआला से दुआ करो। इसलिए उनमें से एक ने कहा: ऐ अल्लाह! मेरे माता पिता बहुत बूढ़े थे, मैं उनसे पहले किसी को दूध ना पिलाता था। एक दिन लकड़ी की तलाश में मैं बहुत दूर निकल गया, जब शाम को वापस लौटा तो वह दोनों सो चुके थे। मैंने उनके लिए दूध निकाला और उनकी ख़िदमत में ले आया। मैंने उनको सोया हुआ पाया। मैंने उनको जगाना नापंसद समझा और उनसे पहले घर वालों और नौकर चाकर को दूध देना भी पसंद नहीं किया। मैं प्याला हाथ में लिए उनके जागने के इंतज़ार में सुबह होने तक ठहरा रहा। हालांकि बच्चे मेरे क़दमों में भूख से बिलबिलाते थे। इसी हालत में सुबह हो गई। वह दोनों जागे और अपने शाम के हिस्से वाला दूध पिया। ऐ अल्लाह! अगर यह काम मैंने तेरी रज़ा के लिए किया तो तू इस चट्टान वाली मुसीबत से मुक्ति दे। चट्टान थोड़ी सी अपनी जगह से हट गई। मगर अभी गार (गुफा) से निकलना मुमकिन ना था। दूसरे ने कहा: ऐ अल्लाह! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी। वह मुझे

सबसे ज़्यादा महबूब थी। मैंने उससे अपनी नफ़सानी ख्वाहिश पूरा करने का इज़हार किया, मगर वह इस पर तैयार ना हुई। यहां तक कि कहत साली (अकाल) का एक साल पेश आया जिसमें वह मेरे पास आयी। मैंने उसको एक सौ बीस दीनार इस शर्त पर दिये कि वह अपने नफ़स पर मुझे काबू देगी। वह तैयार होगई और काबू दिया। जब मैं उसकी दोनों टांगों के बीच बैठ गया तो उसने कहा तू अल्लाह से डर और इस मुहर को नाहक और नाज़ाइज तौर पर मत तोड़। इसलिए मैं इस काम से बाज़ आ गया हालांकि मुझे उससे बहुत मोहब्बत भी थी और मैंने वह एक सौ बीस दीनार उसको हदिया कर दिए। या अल्लाह अगर मैंने यह काम ख़ालिस तेरी रज़ाजोई के लिए किया था तो हमें इस मुसीबत से निजात इनायत फ़रमा जिसमें हम मुबतला हैं। चट्टान कुछ और सरक गई। मगर अभी तक उससे निकलना मुमकिन ना था। तीसरे ने कहा! या अल्लाह मैंने कुछ मज़दूर उजरत पर लगाये और उन सभी को मज़दूरी देदी। मगर एक आदमी उनमें से अपनी मज़दूरी छोड़ कर चला गया। मैंने उसकी मज़दूरी कारोबार में लगा दी। यहां तक कि बहुत ज़्यादा माल उससे जमा हो गया। एक अर्से के बाद वह मेरे पास आया और कहने लगा। ऐ अल्लाह के बन्दे मेरी मज़दूरी मुझे इनायत कर दो। मैंने कहा तुम अपने सामने जितने ऊंट, गायें, बकरियाँ और गुलाम देख रहे हो, यह सभी तेरी मज़दूरी है। उसने कहा ऐ अल्लाह के बन्दे मेरा मज़ाक मत उड़ा। मैंने कहा मैं तेरे साथ मज़ाक नहीं करता। इसलिए वह सारा माल ले गया और उसमें से ज़र्रा बराबर भी नहीं छोड़ा। ऐ अल्लाह मैंने यह तेरी रज़ामंदी के लिए किया तो तू उस मुसीबत से जिसमें हम मुबतला हैं हमें मुक्ति अता

फरमा। फिर क्या था चटटान हट गई और तीनों बाहर निकल गये।

(मुस्लिम)

वसीला: मज़क़ूरा हदीस में नेक आमाल के वसीले से दुआ मांगी गयी। वसीले का मतलब है कि किसी मक़बूल अमल या नेक बन्दे मसलन हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वास्ता पेश करके अल्लाह तआला से दुआ मांगना। यानि इस बात का पूरा यक़ीन और ईमान कि देने वाली, बख़्शने वाली सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की ज़ात है और कोई नेक बंदा हत्ताकि नबी या रसूल भी खुदाई में शरीक नहीं हो सकता है। लेकिन अपनी आजिज़ी और इन्क़िसारी का इज़हार करते हुए अल्लाह तआला की हम्द और सना और नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने के बाद अपने किसी मक़बूल अमल या हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वास्ता पेश करके अल्लाह तआला से कोई दुआ करना वसीला कहलाता है।

वसीले की तीन किस्में (प्रकार) हैं: 1) अल्लाह तआला के नाम और सिफ़ात के ज़रिए अल्लाह तआला से अपनी ज़रूरत मांगना, जैसा कि फ़रमाने इलाही है: और आस्माए हुस्ना (अच्छे अच्छे नाम) अल्लाह ही के हैं, इन नामों के ज़रिए (अल्लाह की तस्बीह, तहमीद और तकबीर यानि ज़िक़रे इलाही के ज़रिए) उससे दुआएँ मांगो। 2) अपने किसी मक़बूल अमल मसलन नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, ज़िक़्र और तिलावते कुरआन को वसीला बनाकर अल्लाह तआला से दुआ मांगना, जैसा कि बुखारी और मुस्लिम में मज़क़ूरा हदीस में तफ़सील से ज़िक़्र किया गया। 3) किसी नेक बन्दे मसलन कयामत तक आने

वाले इन्सानों और जिनों के नबी और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीला से अल्लाह तआला से दुआयें मांगना।

पहली दो शकलों के जाइज़ होने पर पूरी उम्मत मुस्लिमा का इत्तेफाक़ (एकमत) है, लेकिन तीसरी शकल के संबंधित उलमाए किराम का इख़ितलाफ़ है। उलमा की एक जमाअत ने उसको शिर्क़ करार देकर उसके हराम होने का फ़तवा जारी किया, जबकि उलमा की दूसरी जमात ने कुरआन और हदीस की रौशनी में उसके जाइज़ होने का फ़तवा दिया है। तहकीक़ी बात यही है कि नबी के वसीले से दुआ मांगने को शिर्क़ करार देना सही नहीं है क्योंकि नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले के ज़रिए दुआ मांगने में अल्लाह तआला ही से दुआ मांगी जाती है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले से दुआ मांगने वाला सिर्फ़ यह यकीन रखता है कि इसके ज़रिए उसकी दुआ का बारगाह इलाही में क़बूलियत का शरफ़ पाने का इमकान (संभावना) बढ़ जाता है। हाँ यह बात ज़ेहन में रखें कि अल्लाह तआला की बारगाह में दुआओं की क़बूलियत के लिए वसीला शर्त नहीं है, मगर लाभकारी और कारगर ज़रूर है। उलमाए किराम की दूसरी जमाअत ने नबी के वसीले से दुआ करने के जवाज़ के लिए कुरआन और हदीस के विभिन्न दलाइल पेश किए हैं, जिनमें दो हदीसें पेश ख़िदमत हैं:

हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहुअन्हु से रिवायत है कि जब कभी कहत पड़ता तो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहुअन्हु हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़िअल्लाहुअन्हु के वसीले से दुआए इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करते। आप (हज़रत उमर रज़िअल्लाहुअन्हु) फ़रमाते कि ऐ अल्लाह! हम अपने नबी को वसीला बनाते थे

और (हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत से) आप (अल्लाह तआला) बारिश बरसाते थे। अब हम अपने नबी के चचा को वसीला बनाते हैं, आप बारिश बरसाइये। हज़रत अनस रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं ख़ूब बारिश बरसती। (सहीह बुखारी) इसी तरह सही बुखारी और सही मुस्लिम में ज़िक्र है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक बार कहत पड़ा। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुतबा दे रहे थे कि एक देहाती ने कहा या रसूलुल्लाह! माल तबाह हो गया और बाल बच्चों दानों को तरस गये। आप हमारे लिए अल्लाह तआला से दुआ फ़रमायें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ उठाये। इस समय बादल का टुकड़ा भी आसमान पर नज़र नहीं आ रहा था। उस ज़ात की क़सम जिसके कब्ज़ा और कुदरत में मेरी जान है अभी आप ने हाथों को नीचे भी नहीं किया था कि पहाड़ों की तरह घटा उमंड आयी और अभी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मिंबर से उतरे भी नहीं थे कि मैंने देखा कि बारिश का पानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दाढ़ी मुबारक से टपक रहा था। इस दिन, उसके बाद और फिर लगातार अगले जुमे तक बारिश होती रही। दूसरे जुमे को यही देहाती फिर खड़ा हुआ और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! इमारतें गिर गयीं और माल और असबाब डूब गये। आप हमारे लिए दुआ कीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ उठाये और दुआ की कि ऐ अल्लाह! अब दूसरी तरफ बारिश बरसाइये और हम से रोक दीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हाथ से बादल के जिस तरफ भी इशारा करते उधर बादल साफ हो ज़ाता। (सही बुखारी) मालूम हुआ

कि सहाबाए किराम मुसीबत के समय हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वसीला इख्तियार करते थे।

उलमा की पहली जमाअत ने इन दोनो हदीसों का यह कहकर जवाब दिया कि इसमें ज़िन्दा व्यक्ति के ज़रिए वसीले का ज़िक्र है। इस पर दूसरी जमाअत ने जवाब दिया कि कुरआन और हदीस में किसी भी जगह यह ज़िक्र नहीं है कि ज़िन्दों के वसीले से दुआ मांगी जा सकती है, मुर्दों के वसीले के ज़रिए नहीं। और इस तरह की बातों के लिए कुरआन और हदीस की दलील ज़रूरी है और वह मौजूद नहीं है। ग़र्ज़ कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले के ज़रिए दुआ मांगने के जाइज़ और ना जाइज़ होने के बारे में उलमा की राये विभिन्न हैं। इस इख्तिलाफ़ को झगड़ा ना बनाया जाये। जाइज़ कहने वाले हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले से दुआ मांगते रहें। और ना जाइज़ कहने वाले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले से दुआ न मांगें। इसी तरह उम्मत मुस्लिमा में इत्तेफ़ाक़ (सहमति) और इत्तेहाद (एकजुटता) हो सकता है, जिसकी इस ज़माने में सख़्त ज़रूरत है।

मौजू-ए-बहस हदीस में तीन नेक आमाल के वसीले से दुआ मांगी गयी।

- 1) माता पिता की ख़िदमत
- 2) अल्लाह के डर की वजह से ज़िना से बचना।
- 3) हुक्कुल इबाद की पूरी तरह अदायगी और मामलात में सफ़ाई।

माता-पिता की खिदमत: कुरआन और हदीस में माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करने की खुसूसी ताकीद की गयी है। अल्लाह तआला ने विभिन्न जगहों पर अपनी तौहीद और इबादत का हुक्म देने के साथ माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करने का हुक्म दिया है जिससे माता पिता की इताअत, उनकी खिदमत और उनके मान सम्मान की अहमियत स्पष्ट हो जाती है। हदीसों में भी माता-पिता की फ़रमांबरदारी की खास अहमियत और ताकीद और उसकी फ़ज़ीलत बयान की गयी है। अल्लाह तआला हम सब को माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करने वाला बनाये। उनकी फ़रमांबरदारी करने वाला बनाये। उनके हुक्क की अदायगी करने वाला बनाये।

शर्मगाह की हिफ़ाज़त: अल्लाह तआला ने यौन इच्छाओं पूरा करने का एक जायज़ तरीका यानि निकाह करने को जाइज़ किया है। सूरतुल मोमीनून की आरंभिक आयात में इन्सान की कामयाबी के लिए अल्लाह तआला ने एक शर्त यह भी रखी है कि हम जायज़ तरीके के अलावा अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करें। इन आयात के इख़तमाम पर अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: पति पत्नी का एक दूसरे से यौन इच्छाओं को पूरा करना बुराई नहीं बल्कि इन्सान की ज़रूरत है। लेकिन जायज़ तरीके के अलावा कोई भी सूरत शहवत पूरी करने की जायज़ नहीं है जैसा कि अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: जायज़ तरीके के अलावा कोई और तरीका इख़्तियार करना चाहें तो ऐसे लोग हद से गुज़रे हुए हैं। अल्लाह तआला ने ज़िना के क़रीब भी जाने को मना फ़रमाया है। (सूरतुल इसराअ 32) नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: आंख भी ज़िना

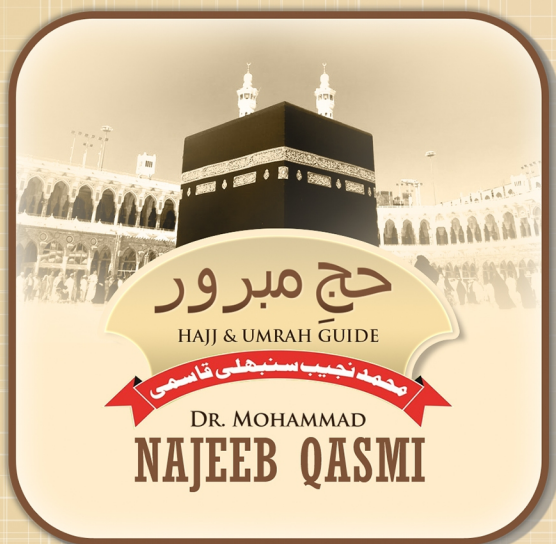
करती है और उसका ज़िना नज़र है। आज दैनिक जीवन में लड़के और लड़कियों का एक साथ पढ़ना, मेलजोल, बेपर्दगी, टीवी और इन्टरनेट के कारणों से हमारी ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है कि हम खुद भी ज़िना से बचें और अपने बच्चों, बच्चियों और घर वालों की हर समय निगरानी रखें, क्योंकि इस्लाम ने इन्सान को ज़िना के असबाब से भी दूर रहने की शिक्षा दी है। ज़िना होने के बाद उस पर हंगामा, जलसा, जुलूस और परदर्शन करने के बजाये ज़रूरत इस बात की है कि इस्लामी शिक्षाओं के मुताबिक जहाँ तक हो सके ग़ैर महरम आदमी और औरत के मेल जोल से ही बचा जाये।

बन्दों के हुक्क की अदायगी और मामलात में सफ़ाई: हमें हुक्कुल इबाद की अदायगी में कोई सुस्ती नहीं करनी चाहिए। नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है: क्या तुम जानते हो कि गरीब कौन है? सहाबा ने अर्ज़ किया: हमारे नज़दीक गरीब वह व्यक्ति है जिसके पास कोई पैसा और दुनिया का सामान ना हो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया: मेरी उम्मत का मुफ़लिस वह व्यक्ति है जो क़यामत के दिन बहुत सी नमाज़, रोज़ा, ज़कात (और दूसरी मक़बूल इबादतें) लेकर आयेगा मगर हाल यह होगा कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत (आरोप) लगायी होगी, किसी का माल खाया होगा, किसी का खून बहाया होगा या किसी को मारा पीटा होगा तो उसकी नेकियों में से एक हक़ वाले को (उसके हक़ के बक़दर) नेकियाँ दी जायेंगी, ऐसे ही दूसरे हक़ वाले को उसकी नेकियों में से (उसके हक़ के बक़दर) नेकियाँ दी जायेंगी। फिर अगर दूसरों के हुक्क चुकाये जाने से पहले उसकी सारी नेकियाँ

खत्म हो जायेंगी तो (उन हुकूम के बक़द) हक़दारों और मज़लूमों के गुनाह (जो उन्होंने दुनिया में किए होंगे) उन से लेकर उस व्यक्ति पर डाल दिये जायेंगे और फिर उस व्यक्ति को जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। (मुस्लिम)

मज़क़ूरा बाला हदीस में तीनों व्यक्तियों के घटनाओं में अल्लाह तआला का डर, उससे उम्मीद और उसकी रज़ा हासिल करना ही उद्देश्य है। यानि पूरी रात दूध का प्याला लेकर माता पिता के पास खड़े रहना और अपनी औलाद की भूख के बावजूद माता पिता से पहले खुद दूध पीने से रूके रहना, अपनी महबूबा से पूरी तरह इच्छाशक्ति होने पर भी ज़िना से बचना और सभी ऊंट, गायें, बकरियाँ और नौकर चाकर अपनी ज़रूरत के बावजूद बग़ैर किसी मुआवज़े के पेश कर देना सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात का खौफ़, उससे उम्मीद और उसकी रजामंदी के हासिल करने के लिए किया गया। हमें भी सदैव यही ख़याल रखना चाहिए कि हमें अपनी ज़िन्दगी के हर एक लम्हे का हिसाब संसार के बनाने वाले को देना है जो हमारे एक एक पल को जनता है। हमें सिर्फ़ उसी की मर्ज़ी उद्देश्य होना चाहिए।

तीन ज़बानों में हज व उमरह से मुतअल्लिक दुनिया का पहला मोबाइल ऐप
Word's First Hajj & Umrah Mobile Application in 3 Languages



तीन ज़बानों में दुनिया का पहला इस्लामी मोबाइल ऐप
Word's First Islamic Mobile Application in 3 Languages



ISBN: 9780995788507